2 तवारीख़

[illegible]

यहूदी रिवायत एज्रा कातिब को मुसन्निफ़ बतौर मंसूब करती है — 2 तवारीख सुलेमान की हुकूमत तक़सीम हो चुकी थी — सुलेमान की मौत के बाद हुकूमत तकसीम हो चुकी थी — 2 तवारीख की किताब 1 तवारीख के साथ सुलेमान बादशाह की हुकूमत से लेकर बाबुल की गुलामी तक इब्रीं लोगों की तारीक को जारी रखती है।

[illegible]

इसकी तसनीफ़ की तारीख़ तकरीबन 450 - 425 क़बल मसीह है।

2 तवारीख की किताब इस बात के लिए मशहूर है की इस के लिखे जाने की तारीख़ जानना मुश्किल है हलाकि यह साफ़ है कि यह बनी इस्राईल की बाबुल की गुलामी से वापसी पर ही लिखी गई है।

[illegible]

खदीम यहूदी लोग और बाद में कलाम के तमाम क़ारिईन।

[illegible]

2 तवारीख अक्सर वही मालूमात पेश करता है जो 2 समुएल और 2 सलातीन में पाया जाता है — 2 तवारीख में वहीं बातें है जो उन दिनों काहिन से तवक्को’ रखीं जाती थीं — 2 तवारीख ख़ास तौर से बनी इस्राईल कौम की मज़हबी तारीख़ की तश्खीस है।

[illegible]

बनी इस्राईल की रूहानी मीरास।

बैरूनी ख़ाका

1. सुलेमान के मातहत बनी इस्राईल की कहानी — 1:1-9:31
2. रेहुबोआम से आखज़ तक — 10:1-28:27
3. हिज़्क़ियाह से यहूदा का आख़िर — 29:1-36:23।

[illegible]

1 और सुलेमान बिन दाऊद अपनी ममलुकत में ठहरा हुआ
और ख़ुदावन्द उसका ख़ुदा उसके साथ रहा और उसे बहुत बुलन्द
किया।
2 और सुलेमान ने सारे इस्राईल या'नी हज़ारों और सैंकड़ो के
सरदारों और क़ाज़िओं, और सब इस्राईलियों के रईसों से ज़ो
आबाई ख़ानदानो के सरदार थे बातें कीं।
3 और सुलेमान सारी ज़मा'अत साथ जिबा'उन के ऊँचे मक़ाम
को गया क्यूँकि ख़ुदा का ख़ेमा — ए — इजितमा'अ जैसे ख़ुदावन्द
के बन्दे मूसा ने विराने में बनाया था वहीं था।
4 लेकिन ख़ुदा के सन्दूक़ को दाऊद क़रीयत — या'रीम से उस
मक़ाम में उठा लाया था जो उस ने उसके लिए तैयार किया था
क्यूँकि उसने उस के लिए येरूशलेम में एक ख़ेमा खड़ा किया था।
5 लेकिन पीतल का वह मज़बह जिसे बज़लीएल बिन ऊरी
बिन हूर ने बनाया था वहीं ख़ुदावन्द के मस्कन के आगे था। फिर
सुलेमान उस जमा'अत के साथ वहीं गया।
6 और सुलेमान वहाँ पीतल के मज़बह के पास जो ख़ुदावन्द
के आगे ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में था गया और उस पर एक
हज़ार सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं।
7 उसी रात ख़ुदा सुलेमान को दिखाई दिया और उस से कहा,
माँग मैं तुझे क्या दूँ?
8 सुलेमान ने ख़ुदा से कहा, तूने मेरे बाप दाऊद पर बड़ी
मेहरबानी की और मुझे उसकी जगह बादशाह बनाया।

9 अब ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा, जो वा'दा तूने मेरे बाप दाऊद से किया
वह बरक़रार रहे, क्यूँकि तूने मुझे एक ऐसी क़ौम का बादशाह
बनाया है जो कसरत में ज़मीन की ख़ाक के ज़र्रों की तरह है।
10 इसलिए मुझे हिक्मत — ओ — मा'रिफत इनायत कर
ताकि मै इन लोगों के आगे अन्दर बाहर आया जाया करूँ क्यूँकि
तेरी इस बड़ी क़ौम का इन्साफ़ कौन कर सकता है?
11 तब ख़ुदा ने सुलेमान से कहा चुँकि तेरे दिल में यह बात थी
और तूने न तो दौलत न माल न इज़्ज़त न अपने दुश्मनो की मौत
माँगी और न लम्बी उम्र की तलब की बल्कि अपने लिए हिकमत
— ओ — मा'रिफ़त की दरख़्वास्त की ताकि मेरे लोगों का जिन
पर मैंने तुझे बादशाह बनाया है इन्साफ़ करें।
12 इसलिए हिकमत — ओ — मा'रिफ़त तुझे 'अता हुई है और
मै तुझे इस क़दर दौलत और माल और 'इज़्ज़त बख़्शूँगा कि न
तू उन बादशाहों में से जो तुझ से पहले हुए किसी को नसीब हुई
और न किसी को तेरे बाद नसीब होगी।
13 चुनाँचे सुलेमान जिबा'ऊन के ऊँचे मक़ाम से या'नी ख़ेमा
— ए — इजितमा'अ के आगे से येरूशलेम को लौट आया और
बनी इस्राईल पर बादशाहत करने लगा।
14 और सुलेमान ने रथ और सवार ज़मा कर लिए और उसके
पास एक हज़ार चार सौ रथ और बारह हज़ार सवार थे, जिनको
उसने रथों के शहरों में और येरूशलेम में बादशाह के पास रखा।
15 और बादशाह ने येरूशलेम में चाँदी और सोने को कसरत
की वजह से पत्थरों की तरह और देवदारों को नशेब की ज़मीन के
गूलर के दरख़्तों की तरह बना दिया।
16 और सुलेमान के घोड़े मिस्र से आते थे और बादशाह के
सौदागर उनके झुंड के झुंड या'नी हर झुंड का मोल करके उनको
लेते थे।
17 और वह एक रथ छः सौ मिस्क़ाल चांदी और एक घोड़ा

डेढ़ सौ मिस्क़ाल में लेते और मिस्र से ले आते थे और इसी तरह
हित्तियों के सब बादशाहों और आराम के बादशाहों के लिए उन
ही के वसीला से उन को लाते थे।

2

[illegible]

1 और सुलेमान ने 'इरादा किया कि एक घर ख़ुदावन्द के नाम
के लिए और एक घर अपनी हुकूमत के लिए बनाए।
2 और सुलेमान ने सत्तर हज़ार भोझ उठाने वाले और पहाड़ में
अस्सी हज़ार पत्थर काटाने वाले और तीन हज़ार छ: सौ आदमी
उनकी निगरानी के लिए गिनकर ठहरा दिए।
3 और सुलेमान ने सूर के बादशाह हूराम के पास कहला भेज़ा
कि जैसा तूने मेरे बाप दाऊद के साथ किया और उसके पास
देवदार की लकड़ी भेजी कि वह अपने रहने के लिए एक घर बनाए
वैसा ही मेरे साथ भी कर
4 मैं ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के नाम के लिए एक घर बनाने को
हूँ कि उसके लिए पाक करूँ और उसके आगे ख़ुशबूदार मसाल्हे
का ख़ुशबू जलाऊ, और वह सबतों और नए चाँदों और ख़ुदावन्द
हमारे ख़ुदा की मुक़र्ररा 'ईदों पर हमेशा नज़्र की रोटी और सुबह
और शाम की सोख़्तनी क़ुर्बानियों के लिए हो क्यूँकि यह हमेशा
तक इस्राईल पर फ़र्ज़ है।
5 और वह घर जो मै बनाने को हूँ अज़ीम उश शान होगा क्यूँकि
हमारा ख़ुदा सब मा'बूदों से 'अज़ीम है।
6 लेकिन उसके लिए कौन घर बनाने के लिए काबिल है जिस
हाल के आसमान में बल्कि आसमानों के आसमान में भी वह समां
नहीं सकता तो भला मै कौन हूँ जो उसके सामने ख़ुशबू जलाने के
'अलावा किसी और ख़्याल से उसके लिए घर बनाऊँ?

7 इसलिए अब तू मेरे पास एक ऐसे शख़्स को भेज दे जो सोने
और चाँदी और पीतल और लोहे के काम में और अर्ग़वानी और
क़िर्मिज़ी और नीले कपड़े के काम में माहिर हो और नक़्क़ाशी भी
जानता हो ताकि वह उन कारीगरों के साथ रहे जो मेरे बाप दाऊद
के ठहराए हुए यहूदाह और येरूशलेम में मेरे पास हैं।
8 और देवदार और सनोबर और सन्दल के लट्ठे लुबनान से मेरे
पास भेजना क्यूँकि मै जनता हु तेरे नौकर लुबनान की लकड़ी
कटाने में होशियार है और मेरे नौकर तेरे नौकरों के साथ रहकर,
9 मेरे लिए बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे क्यूँकि वह घर जो मै
बनाने को हूँ बहुत आ'लिशान होगा
10 और मै तेरे नौकरों या'नी लकड़ी कटाने वालों को बीस हज़ार
कुर साफ़ किया हुआ गेहू और बीस हज़ार कुर जौ, और बीस हज़ार
बत मय और बीस हज़ार बत तेल दूँगा।
11 तब सूर के बादशाह हूराम ने जवाब लिखकर उसे सुलेमान
के पास भेजा कि चूँकि ख़ुदावन्द को अपने लोगों से मुहब्बत है
इसलिए उस ने तुझको उन का बादशाह बनाया है।
12 और हूराम ने यह भी कहा ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा जिस
ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया मुबारक हो कि उस ने
दाऊद बादशाह को एक दाना बेटा फ़हम — व — मा'रिफ़त से
मा'मूर बख़्शा ताकि वह ख़ुदावन्द के लिए एक घर और अपनी
हुकूमत के लिए एक घर बनाए।
13 तब मैंने अपने बाप हूराम के एक होशियार शख़्स को
जोअक़्ल से मा'मूर है भेज दिया है।
14 वह दान की बेटियों में से एक 'औरत का बेटा है और उसका
बाप सूर का बाशिन्दा था वह सोने और चाँदी और पीतल और
लोहे और पत्थर और लकड़ी के काम में और अर्गवानी और नीले
और क़िर्मिज़ी और कतानी कपड़े के काम में माहिर और हर तरह

की नक़्क़ाशी और हर क़िस्म की सन'अत में ताक़ है ताकि तेरे
हुनरमन्दों और मेरे मख़दूम तेरे बाप दाऊद के हुनरमंदों के साथ
उसके लिए जगह मुक़र्रर हो जाए।
15 और अब गेंहूँ और जौ और तेल और शराब जिनका मेरे
मालिक ने ज़िक्र किया है वह उनको अपने ख़ादिमों के लिए भेजे।
16 और जितनी लकड़ी तुझको ज़रूरत है हम लुबनान से काटेंगे
और उनके बेड़े बनवाकर समुन्दर ही समुन्दर तेरे पास याफ़ा में
पहुँचाएँगें, फिर तू उनको येरूशलेम को ले जाना।
17 और सुलेमान ने इस्राईल के मुल्क में के सब परदेसियों को
शुमार किया जैसे उसके बाप दाऊद ने उनको शुमार किया था और
वह एक लाख तिरपन हज़ार छ: सौ निकले।
18 और उसने उन में से सत्तर हज़ार को बोझ उठाने वालो पर
और अस्सी हज़ार को पहाड़ पर पत्थर काटने के लिए और तीन
हज़ार छ: सौ को लोगों से काम लेने के लिए नज़ीर ठहराया।

3

[illegible]

1 और सुलेमान येरूशलेम में कोह — ए — मोरियाह पर जहाँ
उसके बाप दाऊद ने ख़्वाब देखा उसी जगह जैसे दाऊद ने तैयारी
कर के मुक़र्रर किया या'नी उरनान यबूसी के खलीहान में ख़ुदावन्द
का घर बनाने लगा।
2 और उसने अपनी हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने की
दूसरी तारीख़ को बनाना शुरू' किया।
3 और जो बुनियाद सुलेमान ने ख़ुदा के घर की ता'मीर के लिए
डाली वह यह है उसका तूल हाथों के हिसाब से पहले नाप के
मवाफ़िक़ साठ हाथ और 'अरज बीस हाथ था।
4 और घर के सामने के उसारा की लम्बाई घर की चौड़ाई के
मुताबिक़ बीस हाथ और ऊँचाई एक सौ बीस हाथ थी और उस ने
उसे अन्दर से ख़ालिस सोने से मेंढा।

5 और उसने बड़े घर की छत सनोबर के तख़्तों से पटवाई, जिन
पर चोखा सोना मंढा था और उसके ऊपर खजूर के दरख़्त और
ज़न्जीरे बनाई।
6 और जो ख़ूबसूरती के लिए उस ने उस घर को बेशक़ीमत
जवाहर से दुरूस्त किया और सोना परवाइम का सोना था।
7 और उसने घर को यानी उसके शहतीरों, चौखटों, दिवारो और
किवाड़ो को सोने से मंढ़ा और दीवारों पर करुबियों की सूरत कंदा
की।
8 और उसने पाक तरीन मकान बनाया जिसकी लम्बाई घर के
चौड़ाई के मुताबिक़ बीस हाथ और उसकी चौड़ाई बीस हाथ थी
और उसने उसे छ: सौ क़िन्तार चोखे सोने से मंढ़ा।
9 और कीलों का वज़न पचास मिस्क़ाल सोने का था और उसमें
ऊपर की कोठरियाँ भी सोने से मंढ़ा।
10 और उसने पाकतरिन मकान में दो करुबियों को तराशकर
बनाया और उन्होंने उनको सोने से मंढ़ा।
11 और करुबियों के बाज़ू बीस हाथ लम्बे थे, एक करूबी का
एक बाज़ू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा
बाज़ू भी पाँच हाथ का दूसरे करूबी के बाज़ू तक पहुँचा हुआ था।
12 और दूसरे करूबी का एक बाज़ू पाँच हाथ का घर की दिवार
तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाज़ू भी पाँच हाथ का दूसरे करूबी
के बाज़ू से मिला हुआ था।
13 इन करुबियों के पर बीस हाथ तक फैले हुएं थे और वह अपने
पाँव पर खड़े थे और उनके मुँह उस घर की तरफ़ थे।
14 और उसने पर्द: आसमानी और अर्गवानी और क़िरमिज़ी
कपड़े और महीन कतान से बनाया उस पर करुबियों को कढ़वाया।
15 और उसने घर के सामने पैंतीस पैंतीस हाथ ऊँचे दो सुतून
बनाए, और हर एक के सिरे पर पाँच हाथ का ताज़ था।
16 और उसने इल्हामगाह में ज़ंजीरे बनाकर सुतूनों के सिरों पर
लगाए और एक सौ अनार बनाकर ज़ंजीरों में लगा दिए।

17 और उसने हैकल के आगे उन सुतूनों को एक दाहिनी और
दूसरे को बाईं तरफ़ खड़ा किया और जो दहिने था उसका नाम
यक़ीन और जो बाएँ था उसका नाम बो'अज़ रखा।

4

[illegible]

1 और उसने पीतल का एक मजबह बनाया, उसकी लम्बाई बीस
हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई दस हाथ थी।
2 और उसने एक ढाला हुआ बड़ा हौज बनाया जो एक किनारा
से दूसरे किनारे तक दस हाथ था, वह गोल था और उसकी ऊंचाई
पाँच हाथ थी और उसका घर तीस हाथ के नाप का था।
3 और उसके नीचे बैलों की सूरते उसके आस पास दस — दस
हाथ तक थी और उस बड़े हौज को चारों तरफ़ से घेरे हुए थी, यह
बैल दो क़तारों में थे और उसी के साथ ढाले गए थे।
4 और वह बारह बैलों पर धरा हुआ था, तीन का चेहरा उत्तर
की तरफ़ और तीन का चेहरा पश्चिम की तरफ़ और तीन का चेहरा
दक्खिन की तरफ़ और तीन का चेहरा पूरब की तरफ़ था और वह
बड़ा हौज़ उनके ऊपर था, और उन सब के पिछले 'आज़ा अन्दर
के चेहरा थे।
5 उसकी मोटाई चार उंगल की थी और उसका किनारा प्याला
के किनारह की तरह और सोसन के फूल से मुशाबह था, उसमे तीन
हज़ार बत की समाई थी।
6 और उसने दस हौज़ भी बनाने और पाँच दहनी और पाँच बाईं
तरफ़ रखें ताकि उन में सोख़्तनी क़ुर्बानी की चीज़ें धोई जाएँ, उनमे
वह उन्हीं चीज़ों को धोते थे लेकिन वह बड़ा हौज़ काहिनों के नहाने
के लिए था।
7 और उसने सोने के दस शमा'दान उस हुक्म के मुताबिक़ बनाए
जो उनके बारे में मिला था उसने उनको हैकल में पाँच दहनी और
पाँच बाईं तरफ़ रखा।

8 और उसने दस मेज़े भी बनाई और उनको हैकल में पाँच दहनी
पाँच बाई तरफ़ रखा और उसने सोने के सौ कटोरे बनाए।
9 और उस ने काहिनों का सहन और बड़ा सहन और उस सहन
के दरवाज़ों को बनाया और उनके किवाड़ों को पीतल से मेंढ़ा।
10 और उसने उस बड़े हौज़ को पूरब की तरफ़ दहिने हाथ
दक्खिन चेहरा पर रखा।
11 और हूराम ने बर्तन और बेल्चे और कटोरे बनाए, इसलिए
हूराम ने उस काम को जिसे वह सुलेमान बादशाह के लिए ख़ुदा
के घर में कर रहा था तमाम किया।
12 या'नी दोनों सुतूनों और कुरे और दोनों ताज जो उन दोनों
सुतूनों पर थे और सुतूनों की चोटी पर के ताजों के दोनों कुरों को
ढाकने की दोनों जालियाँ;
13 और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार या'नी हर जाली
के लिए अनारों की दो दो क़तारें ताकि सुतूनों पर के ताजों के दोनों
कुरें ढक जाए।
14 और उसने कुर्सियाँ भी बनाई और उन कुर्सियों पर हौज़
लगाये।
15 और एक बड़ा हौज़ और उसके नीचे बारह बैल;
16 और देगें, बेल्चे और काँटे और उसके सब बर्तन उसके बाप
हूराम ने सुलेमान बादशाह के लिए ख़ुदावन्द के घर के लिए
झलकते हुए पीतल के बनाए।
17 और बादशाह ने उन सब को यरदन के मैदान में सुक्कात
और सरीदा के बीच की चिकनी मिटी में ढाला।
18 और सुलेमान ने यह सब बर्तन इस कशरत से बनाए कि उस
पीतल का वज़न मा'लूम न हो सका।
19 और सुलेमान ने उन सब बर्तन को जो ख़ुदा के घर में थे
बनाया, या'नी सोने की क़ुर्बानगाह और वह मेजें भी जिन पर
नज़्र की रोटियां रखीं जाती थीं।
20 और ख़ालिस सोने के शमा'दान चिराग़ों के साथ ताकि वह

दस्तूर के मुताबिक़ इल्हमगाह के आगे रोशन रहें।

21 और सोने बल्कि कुन्दन के फूल और चिराग़ों और चमटे;

22 और गुलगीर और कटोरे और चमचे और ख़ुशबू दान ख़ालिस सोने के और घर का मदख़ल या'नी उसके अन्दरूनी दरवाज़े पाकतरीन मकान के लिए और घर या'नी हैकल के दरवाज़े सोने के थे।

5

1 इस तरह सब काम जो सुलेमान ने ख़ुदावन्द के घर के लिए बनवाया ख़त्म हुआ और सुलेमान अपने बाप दाऊद की पाक की हुई चीज़ों या'नी सोने और चाँदी और सब बर्तन को अन्दर ले आया और उनको ख़ुदा के घर के ख़ज़ाना में रख दिया।

[illegible]

2 तब सुलेमान ने इस्राईल के बुज़ुर्गों और क़बीलों के सब रईसों या'नी बनी — इस्राईल के आबाई ख़ानदानों के सरदार को येरूशलेम में इकट्ठा किया ताकि वह दाऊद के शहर से जो सिय्यून है ख़ुदावन्द के 'अहद का सन्दूक़ ले आएं।

3 और इस्राईल के सब लोग सातवे महीने की 'ईद में बादशाह के पास जमा' हुए।

4 इस्राईल के सब बुज़ुर्ग आए और लावी ने सन्दूक़ उठाया।

5 और वह सन्दूक़ को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ को और सब पाक बर्तन को जो उस ख़ेमा में थे ले आए। इनको लावी काहिन लाए थे।

6 और सुलेमान बादशाह और इस्राईल की सारी जमा'अत ने जो उसके पास इकट्ठी हुई थी सन्दूक़ के आगे खड़ा होकर भेड़ बकरियाँ और बैल ज़बह किए ऐसा कि कसरत की वजह से उनका शुमार — ओ — हिसाब नहीं हो सकता था।

7 और काहिनों ने ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक़ को उसकी जगह
घरकी इल्हामगाह में जो पाकतरीन मकान है या'नी करुबियों के
बाज़ुओं के नीचे लाकर रखा
8 और करूबी अपने कुछ सन्दूक़ की जगह के ऊपर फैलाए हुए
थे और यूँ करूबी सन्दूक़ और उसकी चोबों को ऊपर से ढांके हुए
थे।
9 और चोबें ऐसी लम्बी थीं कि उनके सिरे सन्दुक़ से निकले हुए
इल्हामगाह के आगे दिखाई देते थे लेकिन बाहर से नज़र नहीं
आते थे और वह आज के दिन तक वहीं है।
10 और उस सन्दूक़ में कुछ न था 'अलावा पत्थर की उन दो
लौहों के जिनको मूसा ने होरेब पर उस में रखा था जब ख़ुदावन्द
ने बनी इस्राईल से जिस वक़्त वह मिस्र से निकले थे 'अहद बांधा।
11 और ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से निकले क्यूँकि
सब काहिन जो हाज़िर थे अपने को पाक़ कर के आए थे और बारी
बारी से ख़िदमत नही करते थे।
12 और लावी जो गाते थे वह सब के सब जैसे आसफ़ और
हैमान और यदूतून और उनके बेटे और उनके भाई कतानी कपड़े
से मुलव्वस होकर और झांझ और सितार और बरबत लिए हुए
मजबह के पूरबी किनारे पर खड़े थे और उनके साथ एक सौ बीस
काहिन थे जो नरसिंगे फूँक रहे थे।
13 तो ऐसा हुआ कि जब नरसिंगे फूँकने वालें और गाने वाले
मिल गए ताकि ख़ुदावन्द की हम्द और शुक्रगुज़ारी में उन सब
की एक आवाज़ सुनाई दे और जब नरसिंगो और झाँझों और
मूसीक़ी के सब साजों के साथ उन्होंने अपनी आवाज़ बलन्द कर
के ख़ुदावन्द की ता'रीफ़ की कि वह अच्छा है क्यूँकि उसकी रहमत
हमेशा हैं तो वह घर जो ख़ुदावन्द का घर है अब्र से भर गया।
14 यहाँ तक कि काहिन अब्र की वजह से ख़िदमत के लिए खड़े
न रह सके इसलिए कि ख़ुदा का घर ख़ुदावन्द के जलाल से भर

गया था।

6

[illegible]

1 तब सुलेमान ने कहा, ख़ुदावन्द ने फ़रमाया है कि वह गहरी
तारीकी में रहेगा।
2 लेकिन मैंने एक घर तेरे रहने के लिए बल्कि तेरी हमेशा
सुकूनत के वास्ते एक जगह बनाई है।
3 और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इस्राईल की जमा'अत
को बरकत दी और इस्राईल की सारी जमा'अत खड़ी रही।
4 तब उसने कहा, ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा मुबारक हो जिस
ने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया "और उसे अपने
हाथों से यह कहकर पूरा किया।"
5 कि जिस दिन मै अपनी क़ौम को मुल्के मिस्र से निकाल लाया
तब से मै ने इस्राईल के सब क़बीलों में से न तो किसी शहर को
चुना ताकि उसमे घर बनाया जाए और वहाँ मेरा नाम हो और न
किसी आदमी को चुना ताकि वह मेरी क़ौम इस्राईल का पेशवा
हो।
6 लेकिन मैंने येरूशलेम को चुना कि वहाँ मेरा नाम हों और
दाऊद को चुना ताकि वह मेरी क़ौम इस्राईल पर हाकिम हों।
7 और मेरे बाप दाऊद के दिल में था की ख़ुदावन्द इस्राईल के
ख़ुदा के नाम के लिए एक घर बनाए।
8 लेकिन ख़ुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, "चूँकि मेरे नाम
के लिए एक घर बनाने का ख़्याल तेरे दिल में था इसलिए तूने
अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना।"
9 तू भी तो इस घर को न बनाना बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब
से निकलेगा वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।
10 और खुदवन्द ने अपनी वह बात जो उसने कही थी पूरी की
क्यूँकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ और जैसा ख़ुदावन्द

ने वा'दा किया था मैं इस्राईल के तख़्त पर बैठा हूँ और मैंने
ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया
है।
11 और वही मैंने वह सन्दूक़ रखा है जिस में ख़ुदावन्द का वह
'अहद है जो उसने बनी इस्राईल से किया।
12 और सुलेमान ने इस्राईल की सारी जमा'अत के आमने
सामने ख़ुदावन्द के मज़बह के आगे खड़े होकर अपने हाथ
फैलाए।
13 क्यूँकि सुलेमान ने पाँच हाथ लम्बा और पाँच हाथ चौड़ा
और तीन हाथ ऊँचा पीतल का एक मिम्बर बना कर सहन के
नीचें में उसे रखा था, उसी पर वह खड़ा था, तब उसने इस्राईल
की सारी जमा'अत के आमने सामने घुटने टेके और आसमान की
तरफ़ अपने हाथ फैलाए
14 और कहने लगा ऐ ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा तेरी तरह न
तो आसमान में न ज़मीन पर कोंई ख़ुदा है। तू अपने उन बन्दों
के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते है 'अहद और
रहमत को निगाह रखता है।
15 तूने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद के हक़ में वह बात क़ाईम
रखी जिसका तूने उससे वा'दा किया था, तूने अपने मुँह से
फ़रमाया उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा आज के दिन है।
16 अब ऐ ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा अपने बन्दा मेरे बाप
दाऊद के साथ उस क़ौल को भी पूरा कर जो तूने उस से किया था
कि तेरे हाथ मेरे सामने इस्राईल के तख़्त पर बैठने के लिए आदमी
की कमी न होगी बशर्ते कि तेरी औलाद जैसे तू मेरे सामने चलता
रहा वैसे ही मेरी शरी'अत पर अमल करने के लिए अपनी रास्ते
की एहतियात रखें।
17 और अब ऐ ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा जो क़ौल तूने अपने
बन्दा दाऊद से किया था वह सच्चा साबित किया जाए।

18 लेकिन क्या ख़ुदा फ़िलहक़ीक़त आदमियों के साथ ज़मीन
पर सुकूनत करेगा? देख आसमान बल्कि आसमानों के आसमान
में भी तू रुक नहीं सकता तू यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने
बनाया!
19 तो भी ऐ ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा अपने बन्दे की दुआ और
मुनाजात का लिहाज़ कर कि उस फ़रियाद दुआ को सून ले जो
तेरा बन्दा तेरे सामने करता है।
20 ताकि तेरी आँखे इस घर की तरफ़ यानी उसी जगह की तरफ़
जिसकी बारे में तूने फ़रमाया कि मैं अपना नाम वहाँ रखूँगा दिन
और रात खुली रहे ताकि तू उस दुआ को सूने जो तेरा बन्दा इस
मक़ाम की तरफ़ चेहरा कर के तुझ से करेगा।
21 और तू अपने बन्दा और अपनी क़ौम इस्राईल की मुनाजात
को जब वह इस जगह की तरफ़ चेहरा कर के करें तो सून लेना
बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सून लेना और
सुनकर मु'आफ़ कर देना।
22 अगर कोई शख़्स अपने पड़ोसी का गुनाह करे और उसे
क़सम खिलाने के लिए उसकों हल्फ़ दिया जाए और वह आकर
इस घर में तेरे मज़बह के आगे क़सम खाए।
23 तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों
का इन्साफ़ कर के बदकार को सज़ा देना ताकि उसके 'आमाल को
उसी कि सर डाले और सादिक़ को सच्चा ठहराना ताकि उसकी
सदाक़त के मुताबिक़ उसे बदला दे।
24 और अगर तेरी क़ौम इस्राईल तेरा गुनाह करने के
ज़रिए'अपने दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ़ रुजू'
लाए और तेरे नाम का इकरार कर के इस घर में तेरे सामने दुआ
और मुनाजात करे।
25 तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी क़ौम इस्राईल के गुनाह
को बख़्श देना और उनको इस मुल्क में जो तूने उनको और उनके

बाप दादा को दिया है फिर ले आना।
26 और जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हों
आसमान बंद हो जाए और बारिश न हो और वह इस मक़ाम की
तरफ़ चेहरा कर के दुआ करें और तेरे नाम का इक़रार करे और
अपने गुनाह से बाज़ आए जब तू उनकों दुःख दे।
27 तो तू आसमान पर से सुनकर अपने बन्दों और अपनी क़ौम
इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ कर देना क्यूँकि तूने उनको उस अच्छी
रास्ते की ता'लिम दी जिस पर उनको चलना फ़र्ज़ है और अपने
मुल्क पर जैसे तूने अपनी क़ौम के मीरास के लिए दिया है पानी
न बरसाना।
28 अगर मुल्क में काल हो, अगर वबा हो, अगर बा'द — ए
— समूम या गेरुई टिड्डी या कमला हो, अगर उनके दुश्मन उनके
शहरों के मुल्क में उनकों घेर ले ग़रज़ कैसी ही बला या कैसा ही
रोग हो।
29 तू जो दु'आऔर मुनाजात किसी एक शख़्स या तेरी सारी
क़ौम इस्राईल की तरफ़ से हों जिन में से हर शख़्स अपने दुःख
और रन्ज को जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ़ फैलाए।
30 तू तो आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सुनकर
मु'आफ़ कर देना और हर शख़्स को जिसके दिल को तू जनता है
उसकी सब चालचलन के मुताबिक़ बदला देना क्यूँकि सिर्फ़ तू ही
बनी आदम के दिलों को जनता है
31 ताकि जब तक वह उस मुल्क में जिसे तूने हमारे बाप दादा
को दिया जीते रहे तेरा ख़ौफ़ मानकर तेरे रास्तों में चलें।
32 और वह परदेसी भी जो तेरी क़ौम इस्राईल में से नहीं है जब
वह तेरे बुज़ुर्ग नाम और क़ौमी हाथ और तेरे बुलन्द बाज़ू की वजह
से दूर मुल्क से आए और आकर इस घर की तरफ़ चेहरा कर के
दुआ करें।
33 तो तूआसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सून लेना
और जिस जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फ़रियाद करे

उसके मुताबिक़ करना ताकि ज़मीन की सब क़ौम तेरे नाम को
पहचाने और तेरी क़ौम इस्राईल की तरह तेरा ख़ौफ़ माने और
जान ले कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है।
34 अगर तेरे लोग चाहे किसी रास्ते से तू उनको भेजे अपने
दुश्मन से लड़ने को निकले और इस शहर की तरफ़ जिसे तूने
चुना है और इस घर की तरफ़ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया
है चेहरा करके तुझ से दुआ करें।
35 तो तू आसमान पर से उनकी दुआ और मुनाजात को सुनकर
उनकी हिमा'अत करना।
36 अगर वह तेरा गुनाह करें क्यूँकि कोई इंसान नहीं जो गुनाह
न करता हो और तू उन से नाराज़ होकर उनको दुश्मन के हवाले
कर दे ऐसा कि वह दुश्मन उनको क़ैद करके दूर या नज़दीक मुल्क
में ले जाए।
37 तो भी अगर वह उस मुल्क में जहाँ क़ैद होकर पहुँचाए गए,
होश में आए और रुजू' लाए और अपनी ग़ुलामी के मुल्क में तुझ
से मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया है हम टेढ़ी चाल
चले और हम ने शरारत की।
38 इसलिएअगर वह अपनी ग़ुलामी के मुल्क में जहाँ उनको
ग़ुलाम कर के ले गए हों अपने सारे दिल और अपनी सारी जान
से तेरी तरफ़ फिरें और अपने मुल्क की तरफ़ जो तूने उनको बाप
दादा को दिया और इस शहर की तरफ़ जिसे तूने चुना हैं और इस
घर की तरफ़ जो मैनें तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा कर के
दुआ कर।
39 तो तू आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है उनकी दुआ
और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना और अपनी क़ौम
को जिस ने तेरा गुनाह किया हो मु'माफ़ कर देना।
40 इसलिए ऐ मेरे ख़ुदा मै तेरी मिन्नत करता हूँ कि उस दुआ
की तरफ़ जो इस मक़ाम में की जाए तेरी आँखें खुली और तेरे कान

लगें रहें।
41 इसलिए अब ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा तू अपनी ताक़त के सन्दूक़ के
साथ उठकर अपनी आरामगाह में दाख़िल हो, ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा
तेरे काहिन नजात से मुलव्वस हों और तेरे मुक़द्दस नेकी में मगन
रहें।
42 ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा तू अपने मम्सूह की दुआ नामंजूर न कर,
तू अपने बन्दा दाऊद पर की रहमतें याद फ़रमा।

7

[illegible]

1 और जब सुलेमान दुआ कर चुका तो आसमान पर से आग
उतरी और सोख़्तनी क़ुर्बानी और ज़बीहो को भस्म कर दिया और
मस्कन ख़ुदावन्द के जलाल से मा'मूर हो गया।
2 और काहिन ख़ुदावन्द के घर में दाख़िल न हों सके इसलिए
कि ख़ुदावन्द का घर ख़ुदावन्द के जलाल से मा'मूर था।
3 और जब आग नाज़िल हुई और ख़ुदावन्द का जलाल उस
घर पर छा गया तो सब बनी इस्राईल देख रहे थे, तब उन्होंने
वही फ़र्श पर मुँह के बल ज़मीन तक झुक कर सिज्दा किया और
ख़ुदावन्द का शुक्र अदा किया कि वह भला है क्यूँकि उसकी रहमत
हमेशा है।
4 तब बादशाह और सब लोगो ने ख़ुदावन्द के आगे ज़बीहे
ज़बह किए।
5 और सुलेमान बादशाह ने ज़रिए' हज़ार बैलों और एक लाख
बीस हज़ार भेड़ बकरियों की क़ुर्बानी पेश कीं, यूँ बादशाह और
सब लोगों ने ख़ुदा के घर को मख़्सूस किया।
6 और काहिन अपने अपने मन्सब के मुताबिक़ खड़े थे और
लावी भी ख़ुदावन्द के लिए मुसीक़ी के साज़ लिए हुए थे जिनको
दाऊद बादशाह ने ख़ुदावन्द का शुक्र बजा लेन को बनाया था

जब उसने उनके ज़रिए' से उसकी ता'रीफ़ की थी क्यूँकि उसकी
रहमत हमेशा है और काहिन उनके आगे नरसिंगे फूंकते रहे और
सब इस्राईली खड़े रहे हैं।
7 और सुलेमान ने उस सहन के बीच के हिस्से को जो ख़ुदावन्द
के घर के सामने था पाक किया क्यूँकि उसने वहाँ सोख़्तनी
क़ुर्बानियों और सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी पेश कीं क्यूँकि
पीतल के उस मज़बह पर जैसे सुलेमान ने बनाया था सोख़्तनी
क़ुर्बानी और नज़्र की क़ुर्बानी और चर्बी के लिए गुंजाइश न थीं।
8 और सुलेमान और उसके साथ हमात के मदख़ल से मिस्र तक
के सब इस्राईलियों की बहुत बड़ी जमा'अत ने उस मौक़ा पर सात
दिन तक 'ईद मनाई।
9 और आठवे दिन उनका पाक मजमा' जमा' हुआ क्यूँकि वह
सात दिन मज़बह के मख़्सूस करने में और सात दिन ईद मानाने
में लगे रहे।
10 और सातवे महीने की तेइसवी तारीख़ को उसने लोगों को
रुख़्शत किया, ताकि वह उस नेकी की वजह से जो ख़ुदावन्द ने
दाऊद और सुलेमान और अपनी क़ौम इस्राईल से की थी ख़ुश
और शादमान होकर अपने ख़ेमों को जाएँ।
11 यूँ सुलेमान ने ख़ुदावन्द का घर और बादशाह का घर तमाम
किया और जो कुछ सुलेमान ने ख़ुदावन्द के घर में और अपने घर
में बनाना चाहा उस ने उसे बख़ूबी अंजाम तक पहुँचाया।
12 और ख़ुदावन्द रात को सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और उससे
कहा, कि मैंने तेरी दुआ सुनी और इस जगह को अपने वास्ते चुन
लिया कि यह क़ुर्बानी का घर हो।
13 अगर मै आसमान को बंद कर दूँ कि बारिश न हो या टिड्डियों
को हुक्म दूँ कि मुल्क को उजाड़ डालें या अपने लोगों के बीच वबा
भेजूँ।
14 तब अगर मेरे लोग जो मरे नाम से कहलाते हैं खाकसार

बनकर दुआ करें और मेरे दीदार के तालिब हों और अपनी बुरी
रास्तों से फिरें तो मैं आसमान पर से सुनकर उनका गुनाह मु'आफ़
करूँगा और उनके मुल्क को बहाल कर दूँगा।
15 अब जो दुआ इस जगह की जाएगी उस पर मेरी आँखें खुली
और मेरे कान लगे रहेंगें।
16 क्यूँकि मैंने इस घर को चुना और पाक किया कि मेरा नाम
यहाँ हमेशा रहे और मेरी आँखें और मेरा दिल बराबर यहीं लगे
रहेंगें।
17 और तू अगर मेरे सामने वैसे ही चले जैसे तेरा बाप दाऊद
चलता रहा और जो कुछ मैंने तुझे हुक्म किया उसके मुताबिक़
अम्ल करे और मेरे क़ानून और हुक्मों को माने।
18 तो मैं तेरे तख़्त — ए — हुकूमत को क़ाईम रखूँगा जैसा मैंने
तेरे बाप दाऊद से 'अहद कर के कहा था कि इस्राईल का सरदार
होने के लिए तेरे हाथ मर्द की कभी कमी न होगी।
19 लेकिन अगर तुम बरगश्ता हो जाओ और मेरे क़ानून — व
— हुक्मों को जिनको मैंने तुम्हारे आगे रख्खा है छोड़ कर दो, और
जाकर ग़ैर मा'बूदों की इबादत करो और उनको सिज्दा करों,
20 तो मैं उनको अपने मुल्क से जो मैंने उनको दिया है जड़
से उखाड़ डालूँगा और इस घर को मैंने अपने नाम के लिए पाक
किया है अपने सामने से दूर कर दूँगा और इसको सब क़ोमों में
ज़र्ब — उल — मसल और बदनाम कर दूँगा।
21 और यह घर जो ऐसा आलीशान है, इसलिए हर एक जो
इसके पास से गुज़रेगा हैरान होकर कहेगा कि ख़ुदावन्द ने इस
मुल्क और इस घर के साथ ऐसा क्यों किया?
22 तब वह जवाब देंगें इसलिए कि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने बाप
दादा के ख़ुदा को जो उनको मुल्के मिस्र से निकाल लाया था छोड़
दिया और ग़ैर मा'बूदों को इख़्तियार कर के उनको सिज्दा किया
और उनकी इबादत की इसीलिए ख़ुदावन्द ने उन पर यह सारी

मुसीबत नाज़िल की।

8

[illegible]

1 और बीस साल के आख़िर में जिन सुलेमान ने ख़ुदावन्द का घर और अपना घर बनाया था यूँ हुआ कि।

2 सुलेमान ने उन शहर को जो हुराम ने सुलेमान को दिए थे फिर ता'मीर किया और बनी इस्राईल को वहाँ बसाया।

3 और सुलेमान हमात ज़ूबाह को जाकर उस पर ग़ालिब हुआ।

4 और उसने वीरान में तदमूर को बनाया और ख़ज़ाना के सब शहरों को भी जो उस ने हमात में बनाए थे।

5 और उसने ऊपर के बैत हौरून और नीचे के बैत हौरुन को बनाया जो दीवारों और फाटकों और अड़बंगों से मज़बूत किए हुए शहर थे।

6 और बा'लत और ख़ज़ाना के सब शहर जो सुलेमान के थे और रथों के सब शहर और सवारों के शहर जो कुछ सुलेमान चाहता था कि येरूशलेम और लुबनान और अपनी ममलुकत की सारी सर ज़मी बनाए वह सब बनाया।

7 और वह सब लोग जो हित्तियों और अमोरियों और फ़रिज़्ज़ीयों और हव्वियों और यबूसियों में से बाक़ी रह गए थे और इस्राईली न थे।

8 उन ही की औलाद जो उनके बाद मुल्क में बाक़ी रह गई थी जिसे बनी इस्राईल ने नाबूद नहीं किया, उसी में से सुलेमान ने बेगारी मुक़र्रर किए जैसा आज के दिन है।

9 लेकिन सुलेमान ने अपने काम के लिए बनी इस्राईल में से किसी को ग़ुलाम न बनाया बल्कि वह जंगी मर्द और उसके लस्करों के सदार और उसके रथों और सवारों पर हुक्मरान थें।

10 और सुलेमान बादशाह के ख़ास मनसबदार जो लोगों पर
हुकूमत करते थे दो सौ पचास थें।
11 और सुलेमान फ़िर'औन की बेटी को दाऊद के शहर से उस
घर में जो उसके लिए बनाया था ले आया क्यूँकि उसने कहाँ, कि
मेरी बीवी इस्राईल के बादशाह दाऊद के घर में नहीं रहेंगी क्यूँकि
वह मक़ाम मुक़द्दस है जिन में ख़ुदावन्द का सन्दूक़आ गया है।
12 तब सुलेमान ख़ुदावन्द के लिए ख़ुदावन्द उस मज़बह पर
जिसको उसने उसारें के सामने बनाया था सोख़्तनी क़ुर्बानीयाँ
अदा करने लगा।
13 वह हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक़ जैसा मूसा ने हुक्म दिया था
सब्तों और नए चाँदों और साल में तीन बार मुक़र्रारा 'ईद या'नी
फ़तीरी रोटी की 'ईद और हफ़्तों की 'ईद और ख़ेमों की 'ईद पर
क़ुर्बानी करता था।
14 और उस ने बाप दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ काहिनों के
फ़रीक़ो को हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक़ उनके काम पर और
लावीयों को उनकी ख़िदमत पर मुक़र्रर किया ताकि वह काहिनों
के आमने सामने हम्द और ख़िदमत करें और दरबानों को भी उनके
फ़रीक़ो के मुताबिक़ हर फाटक पर मुक़र्रर किया क्यूँकि मर्द ख़ुदा
दाऊद ने ऐसा ही हुक्म दिया था।
15 और वह बादशाह के हुक्म से जो उसने काहिनों और लावियों
को किसी बात की निस्बत या ख़ज़ानों के हक़ में दिया था बाहर
न हुए।
16 और सुलेमान का सारा काम ख़ुदावन्द के घर की बुनियाद
डालने के दिन से उसके तैयार होने तक तमाम हुआ और ख़ुदावन्द
का घर पूरा बन गया।
17 तब सुलेमान अस्यून जाबर और ऐलोत को गया जो मुल्क
— ए — अदोम में समुन्दर के किनारे है।
18 और हुराम ने अपने नौकरों के हाथ से जहाज़ों और मलाहों

को जो समुन्दर से वाक़िफ़ थे उसके पास भेजा और वह सुलेमान के मुलाज़िमों के साथ ओफ़ीर में आए और वहाँ से साढ़े चार सौ क़िन्तार सोना लेकर बादशाह के पास लाए।

9

[illegible]

1 जब सबा की मलिका ने सुलेमान की शोहरत सुनी तो वह
मुश्किल सवालों से सुलेमान को आज़माने के लिए बहुत बड़ी जिलौ और ऊटों के साथ जिन पर मसाल्हे और बाइफ़रात सोना और जवाहर थे येरूशलेम में आई और सुलेमान के पास आकर जो कुछ उसके दिल में था उस सब की बारे में उससे बातें की।
2 सुलेमान ने उसके सब सवालो का जवाब उसे दिया और
सुलेमान से कोई बात छिपी हुई न थी कि वह उसको बता न सका।
3 जब सबा की मलिका ने सुलेमान की 'अक़्लमन्दी को और
उस घर को जो उसने बनाया था।
4 और उसके दस्तरख़्वान की ने'मत और उसके ख़ादिमो की
निश्सत और उसके मुलाज़िमो की हाज़िर बाशी और उनके लिबास और उसके साक़ियों और उनके लिबास को और उस ज़ीने को जिस से वह ख़ुदावन्द को घर को जाता था देखा तो उस के होश उड़ गए।
5 और उसने बादशाह से कहाँ, कि वह सच्ची ख़बर थी जो मैंने
तेरे कामों और तेरी हिकमत की बारे में अपने मुल्क में सुनी थी।
6 तोभी जब तक मैंने आकर अपनी आँखों से न देख लिया
उनकी बातों का यक़ीन न किया और देख जितनी बड़ी तेरी हिकमत है उसका आधा बयान भी मेरे आगे नहीं हुआ तो उस शहर से बढ़कर है जो मैंने सुनी थी।
7 ख़ुश नसीब है तेरे लोग और ख़ुश नसीब है तेरे यह मलाज़िम
जो हमेशा तेरे सामने खड़े रहते और और तेरी हिक्मत सुनते है।

8 ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा मुबारक़ हो जो तुझ से ऐसा राज़ी हुआ
कि तुझको अपने तख़्त पर बिठाया ताकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
की तरफ़ से बादशाहों चूँकि तेरे ख़ुदा को इस्राईल से मुहब्बत थी
कि उनको हमेशा के लिए क़ाईम करे इसलिए उस ने तुझे उनका
बादशाह बनाया ताकि तू 'अदल — ओ — इन्साफ़ करे।
9 और उस ने एक सौ बीस क़िन्तार सोना और मसाल्हे का बहुत
बड़ा ढेर और जवाहर सुलेमान को दिए और जो मसाल्हे सबा की
मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए वैसे फ़िर कभी मयस्सर न
आए।
10 और हूराम के नौकर भी और सुलेमान के नौकर जो ओफ़ीर
से सोना लाते थे, वह चन्दन के दरख़्त और जवाहर भी लाते थे।
11 और बादशाह ने चन्दन की लकड़ी से ख़ुदावन्द के घर के
लिए और शाही महल के लिए चबूतरे और गाने वालों के लिए
बरबत और सितार तैयार कराए; और ऐसी चीज़ें यहूदाह के मुल्क
में पहले कभी देखने में नहीं आई थी।
12 और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को जो कुछ
उसने चाहा और माँगा उस से ज़्यादा जो वह बादशाह के लिए
लाई थी दिया और वह लौटकर अपने मुलाज़िमों समेत अपनी
ममलुकत को चली गई।
13 और जितना सोना सुलेमान के पास एक साल में आता था
उसका वज़न छे; सौ छियासठ क़िन्तार सोने का था।
14 यह उसके 'अलावा था जो ब्यापारी और सौदागर लाते थे
और अरब के सब बादशाहऔर मुल्क के हाकिम सुलेमान के पास
सोना और चाँदी लाते थे।
15 और सुलेमान बादशाह ने पिटे हुए सोने की दो सौ बड़ी ढालें
बनवाई, छ; सौ मिस्क़ाल पिटा हुआ सोना एक एक ढाल में लगा।
16 और उसने पिटे हुए सोने की तीन सौ ढालें और बनवाई, एक
एक ढाल में तीन सौ मिस्क़ाल सोना लगा, और बादशाह ने उनको

लुबनानी बन के घर में रखा।
17 उसके 'अलावा बादशाह ने हाथी दांत का एक बड़ा तख़्त
बनवाया और उस पर ख़ालिस सोना मढ़वाया।
18 और उस तख़्त के लिए छ; सीढ़ियाँ और सोने का एक
पायदान था, यह सब तख़्त से जुड़ें हुए थे और बैठने की जगह
की दोनों तरफ़ एक एक टेक थी और उन टेकों के बराबर दो शेर
— ए — बबर खड़े थे।
19 और उन छओं सीढियों पर इधर और उधर बारह शेर — ए
— बबर खड़े थे किसी हुकूमत में कभी नहीं बना था।
20 और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बर्तन सोने के थे और
लुबनानी बन के घर सब बर्तन ख़ालिस सोने के थे सुलेमान के
अय्याम में चाँदी की कुछ क़द्र न थी।
21 क्यूँकि बादशाह के पास जहाज़ थे जो हुराम के नौकारों के
साथ तरसीस को जाते थे, तरसीस के यह जहाज़ तीन साल में एक
बार सोना और चाँदी और हाथी के दांत और बंदर और मोर लेकर
आते थे।
22 सुलेमान बादशाह दौलत और हिकमत में रु — ए — ज़मींन
के सब बादशाहों से बढ़ गया।
23 और रू — ए — ज़मीन के सब बादशाह सुलेमान के दीदार
के मुशताक़ थे ताकि वह उसकी हिकमत जो ख़ुदा ने उसके दिल
में डाली थी सुनें।
24 और वह साल — ब — साल अपना अपना हदिया, या'नी
चाँदी के बर्तन और सोने के बर्तन और लिबास और हथियार और
मसाल्हे और घोड़े और खच्चर जितने मुक़र्रर थे लाते थे।
25 और सुलेमान के पास घोड़े और रथों के लिए चार हज़ार
थान और बारह हज़ार सवार थे जिनको उस ने रथों के शहरों और
येरूशलेम, में बादशाह के पास रखा।
26 और वह दरिया — ए — फ़रात से फ़िलिस्तियों के मुल्क
बल्कि मिस्र की हद तक सब बादशाहों पर हुक्मरान था।

27 और बादशाह ने येरूशलेम में इफ़रात की वजह से चाँदी को पत्थरों की तरह और देवदार के दरख़्तों को गूलर के उन दरख़्तो के बराबर कर दिया जो नशीब की सर ज़मीन में है।

28 और वह मिस्र से और और सब मुल्को से सुलेमान के लिए घोड़े लाया करते थे।

29 और सुलेमान के बाक़ी काम शुरू' से आख़िर तक किया वह नातन नबी की किताब में और सैलानी अख़ियाह की पेशीनगोई में और 'ईदू ग़ैबबीन की रोयतों की किताब में जो उसने युरब'आम बिन नाबत के ज़रिए देखी थी, मुन्दर्ज़ नहीं है?

30 और सुलेमान ने येरूशलेम में सारे इस्राईल पर चालीस साल हुकूमत की।

31 और सुलेमान अपने बाप दादा के साथ सो गया और अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़न हुआ और उसका बेटा रहुब 'आम उसकी जगह हुकूमत करने लगा।

10

[illegible]

1 और रहुब 'आम सिकम को गया, इसलिए कि सब इस्राईली उसे बादशाह बनाने को सिकम में इकठ्ठे हुए थे

2 जब नबात के बेटे युरब'आम ने यह सुना क्यूँकि वह मिस्र में था जहाँ वह सुलेमान बादशाह के आगे से भाग गया था तो युरब'आम मिस्र से लौटा।

3 और लोगों ने उसे बुलवा भेजा। तब युरब'आम और सब इस्राईली आए और रहुब'आम से कहने लगे।

4 कि तेरे बाप ने हमारा बोझ सख़्त कर रखा था। इसलिए अब तू अपने बाप की उस सख़्त ख़िदमत को और उस भारी बोझ को जो उस ने हम पर डाल रखा था; कुछ हल्का कर दे और हम तेरी ख़िदमत करेंगे।

5 और उसने उन से कहा, तीन दिन के बाद फिर मेरे पास आना
“चुनाँचे वह लोग चले गए
6 तब रहुब'आम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से जो उसके बाप
सुलेमान के सामने उसके जीते जी खड़े रहते थे, सलाह की और
कहा तुम्हारी क्या सलाह है? मैं इन लोगो को क्या जवाब दूँ?
7 उन्होंने उससे कहा कि अगर तू इन लोगों पर मेहरबान हो
और उनको राज़ी करें और इन से अच्छी अच्छी बातें कहे, तो वह
हमेशा तेरी ख़िदमत करेंगे।
8 लेकिन उस ने उन बुज़ुर्गों की सलाह को जो उन्होंने उसे दी
थी छोड़कर कर उन जवानों से जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई
थी और उसके आगे हाज़िर रहते थे सलाह की।
9 और उन से कहा तुम मुझे क्या सलाह देते हो कि हम इन
लोगों को क्या जवाब दे जिन्होंने मुझ से यह दरखवास्त की है कि
उस बोझ को जो तेरे बाप ने हम पर रखा कुछ हल्का कर?
10 उन जवानों ने जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी उस
से कहा, तू उन लोगों को जिन्होंने तुझ से कहा तेरे बाप ने हमारे
बोझे को भारी किया लेकिन तू उसको हमारे लिए कुछ हल्का कर
दे यूँ जवाब देना और उन से कहना कि मेरी छिंगुली मेरे बाप के
कमर से भी मोटी है।
11 और मेरे बाप ने तो भारी बोझ तुम पर रखा ही था लेकिन
मैं उस बोझ को और भी भारी करूँगा। मेरे बाप ने तुम्हे कोड़ों से
ठीक किया लेकिन मैं तुम को बिच्छुयों से ठीक करूँगा।”
12 और जैसा बादशाह ने हुक्म दिया था कि तीसरे दिन मेरे
पास फिर आना तीसरे दिन युरब'आम और सब लोग रहब'आम
के पास हाज़िर हुए।
13 तब बादशाह उनको सख़्त जवाब दिया और रहुब'आम
बादशाह ने बुज़ुर्गों की सलाह को छोड़कर।
14 जवानों की सलाह के मुताबिक़ उनसे कहा कि मेरे बाप ने

तुम्हारा बोझ भारी किया लेकिन मैं उसको और भी भारी करूँगा।
मेरे बाप ने तुमको कोड़ों से ठीक किया लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं
से ठीक करूँगा।
15 तब बादशाह ने लोगों की न मानी क्यूँकि यह ख़ुदा ही
की तरफ़ से था ताकि ख़ुदावंद उस बात को जो उसने सैलानी
अख़ियाह की ज़रिए नबात के बेटे युरब'आम को फ़रमाई थी पूरा
करे।
16 जब सब इस्राईलियों ने यह देखा कि बादशाह ने उनकी न
मानी तो लोगों ने बादशाह को जवाब दिया और यूँ कहा कि दाऊद
के साथ हमारा क्या हिस्सा है? यस्सी के बेटे के साथ हमारी कुछ
मीरास नहीं। ऐ इस्राईलियों! अपने अपने डेरे को चले जाओ।
अब ऐ दाऊद अपने ही घराने को संभाल। इसलिए सब इस्राईली
अपने ख़ेमों को चल दिए।
17 लेकिन उन बनी इस्राईल पर जो यहूदाह के शहरों में रहते
थे रहुब'आम हुकूमत करता रहा।
18 तब रहुब'आम बादशाह ने हदुराम को जो बेगारियों का
दरोग़ा था भेजा लेकिन बनी इस्राईल ने उसको पथराव किया
और वह मर गया। तब रहुब'आम येरूशलेम को भाग जाने के
लिए झट अपने रथ पर सवार हो गया।
19 तब इस्राईली आज़ के दिन तक दाऊद के घराने से बा'ग़ी
है।

11

□□□'□□□ □□ □□□□□□□□

1 और जब रहुब'आम येरूशलेम में आ गया तो उसने इस्राईल
से लड़ने के लिए यहूदाह और बिनयमीन के घराने में से एक लाख
अस्सी हज़ार चुने हुए जवान, जो जंगी जवान थे इकट्ठा किए,
ताकि वह फिर ममलुकत को रहुब'आम के क़ब्ज़े में करा दें।

2 लेकिन ख़ुदा वन्द का कलाम नबी समा'याह को पहुँचा कि;
3 यहूदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहुब'आम से और सारे
इस्राईल से जो यहूदाह और बिनयमीन में हैं, कह,
4 'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम चढ़ाई न करना और न अपने
भाइयों से लड़ना। तुम अपने अपने घर को लौट जाओ, क्यूँकि
यह मु'आमिला मेरी तरफ़ से है। तब उन्होंने ख़ुदावन्द की बातें
मान लीं, और युरब'आम पर हमला किए बग़ैर लौट गए।
5 रहुब'आम येरूशलेम में रहने लगा, और उसने यहूदाह में
हिफ़ाज़त के लिए शहर बनाए।
6 चुनाँचे उसने बैतलहम और ऐताम और तकू'अ,
7 और बैत सूर और शोको और 'अदूल्लाम,
8 और जात और मरीसा और ज़ीफ़,
9 और अदूरैम और लकीस और 'अज़ीक़ा,
10 और सुर'आ और अय्यालोन और हबरून को जो यहूदाह
और बिनयमीन में हैं, बना कर क़िला' बन्द कर दिया।
11 और उसने क़िलों' को बहुत मज़बूत किया और उनमें सरदारों
को मुक़र्रर किया, और ख़ुराक और तेल और शराब के ज़ख़ीरे को
रखा।
12 और एक एक शहर में ढालें और भाले रखवाकर उनको बहुत
ही मज़बूत कर दिया; और यहूदाह और बिनयमीन उसी के रहे।
13 और काहिन और लावी जो सारे इस्राईल में थे, अपनी अपनी
सरहद से निकल कर उसके पास आ गए।
14 क्यूँकि लावी अपनी पास के 'इलाक़ों और जायदादों को
छोड़ कर यहूदाह और येरूशलेम में आए, इसलिए के युरब'आम
और उसके बेटों ने उन्हें निकाल दिया था ताकि वह ख़ुदावन्द के
सामने कहानत की ख़िदमत को अंजाम न देने पाएँ,
15 और उसने अपनी तरफ़ से ऊँचे मक़ामों और बकरों और
अपने बनाए हुए बछड़ों के लिए काहिन मुक़र्रर किए।

16 और लावियों के पीछे इस्राईल के सब क़बीलों में से ऐसे
लोग जिन्होंने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की तलाश में अपना
दिल लगाया था, येरूशलेम में आए कि ख़ुदावन्द अपने बाप दादा
के ख़ुदा के सामने क़ुर्बानी पेश करें।
17 इसलिए उन्होंने यहूदाह की हुकूमत को ताक़तवर बना
दिया, और तीन साल तक सुलेमान के बेटे रहुब'आम को ताक़तवर
बना रखा, क्यूँकि वह तीन साल तक दाऊद और सुलेमान की
रास्ते पर चलते रहे।
18 रहुब'आम ने महालात को जो यरीमोत बिन दाऊद और
इलियाब बिन यस्सी की बेटी अबीख़ैल की बेटी थी, ब्याह लिया।
19 उसके उससे बेटे पैदा हुए, या'नी य'ऊस और समरियाह और
ज़हम।
20 उसके बाद उसने अबीसलोम की बेटी मा'का को ब्याह
लिया, जिसके उससे अबियाह और 'अत्ती और ज़ीज़ा और
सलूमियत पैदा हुए।
21 रहुब'आम अबीसलोम की बेटी मा'का को अपनी सब
बीवियों और बाँदियों से ज़्यादा प्यार करता था क्यूँकि उसकी
अठारह बीवियाँ और साठ बाँदी थीं; और उससे अठाईस बेटे और
साठ बेटियाँ पैदा हुई।
22 और रहुब'आम ने अबियाह बिन मा'का को रहनुमा मुक़र्रर
किया ताकि अपने भाइयों में सरदार हो, क्यूँकि उसका इरादा था
कि उसे बादशाह बनाए।
23 और उसने होशियारी की, और अपने बेटों को यहूदाह और
बिनयमीन की सारी ममलुकत के बीच हर फ़सीलदार शहर में
अलग अलग कर दिया; और उनको बहुत ख़ुराक दी, और उनके
लिए बहुत सी बीवियाँ तलाश कीं।

12

[illegible]

1 और ऐसा हुआ कि जब रहब'आम की हुकूमत मज़बूत हो
गई और वह ताक़तवर बन गया, तो उसने और उसके साथ सारे
इस्राईल ने ख़ुदावन्द की शरी'अत को छोड़ दिया।
2 रहुब'आम बादशाह के पाँचवें साल में ऐसा हुआ कि मिस्र का
बादशाह सीसक येरूशलेम पर चढ़ आया, इसलिए कि उन्होंने
ख़ुदावन्द की हुक्म 'उदूली की थी,
3 और उसके साथ बारह सौ रथ और साठ हज़ार सवार थे, और
लूबी और सूकी और कूशी लोग जो उसके साथ मिस्र से आए थे
बेशुमार थे।
4 और उसने यहूदाह के फ़सीलदार शहर ले लिए, और
येरूशलेम तक आया।
5 तब समायाह नबी रहुब'आम के और यहूदाह के हाकिमों के
पास जो सीसक के डर के मारे येरूशलेम में जमा' हो गए थे, आया
और उनसे कहा, "ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम ने मुझ को छोड़
दिया, इसी लिए मैंने भी तुम को सीसक के हाथ में छोड़ दिया है।"
6 तब इस्राईल के हाकिमों ने और बादशाह ने अपने को
ख़ाकसार बनाया और कहा, "ख़ुदावन्द सच्चा है।"
7 जब ख़ुदावन्द ने देखा के उन्होंने अपने को ख़ाकसार बनाया,
तो ख़ुदा वन्द का कलाम समायाह पर नाज़िल हुआ: "उन्होंने
अपने को ख़ाकसार बनाया है, इसलिए मैं उनको हलाक नहीं
करूँगा बल्कि उनको कुछ रिहाई दूँगा; और मेरा क़हर सीसक के
हाथ से येरूशलेम पर नाज़िल न होगा।
8 तोभी वह उसके ख़ादिम होंगे, ताकि वह मेरी ख़िदमत को
और मुल्क मुल्क की सल्तनतों की ख़िदमत को जान लें।"
9 इसलिए मिस्र का बादशाह सीसक येरूशलेम पर चढ़ आया,
और ख़ुदावन्द के घर के खज़ाने और बादशाह के घर के ख़ज़ाने ले
गया। बल्कि वह सब कुछ ले गया, और सोने की वह ढालें भी जो

सुलेमान ने बनवाई थीं ले गया।
10 और रहुब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें
बनवाईं और उनको मुहाफ़िज़ सिपाहियों के सरदारों को जो शाही
महल की निगहबानी करते थे सौंपा।
11 और जब बादशाह ख़ुदावन्द के घर में जाता था, तो वह
मुहाफ़िज़ सिपाही आते और उनको उठाकर चलते थे, और फिर
उनको वापस लाकर सिलाहखाने में रख देते थे।
12 और जब उसने अपने को ख़ाकसार बनाया, तो ख़ुदा वन्द
का क़हर उस पर से टल गया और उसने उसको पूरे तौर से तबाह
न किया; और भी यहूदाह में ख़ूबियाँ भी थीं।
13 इसलिए रहुब'आम बादशाह ने ताक़तवर होकर येरूशलेम
में हुकूमत की। रहुब'आम जब हुकूमत करने लगा तो इकतालीस
साल का था और उसने येरूशलेम में, या'नी उस शहर में जो
ख़ुदावन्द ने इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया था कि अपना
नाम वहाँ रखे, सत्रह साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम ना'मा
अम्मूनिया था।
14 और उसने बुराई की, क्यूँकि उसने ख़ुदावन्द की तलाश में
अपना दिल न लगाया।
15 और रहुब'आम के काम अव्वल से आख़िर तक, क्या वह
समायाह नबी और 'ईद ग़ैबबीन की तवारीखों' में नसबनामों के
मुताबिक़ लिखा नहीं? रहुब'आम और युरब'आम के बीच हमेशा
जंग रही।
16 और रहुब'आम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
दाऊद के शहर में दफ़्न हुआ; और उसका बेटा अबियाह उसकी
जगह बादशाह हुआ।

13

[illegible] [illegible] [illegible]'[illegible] [illegible] [illegible]

1 युरब'आम बादशाह के अठारहवें साल से अबियाह यहूदाह
पर हुकूमत करने लगा।
2 उसने येरूशलेम में तीन साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम
मीकायाह था जो ऊरिएल जिबई की बेटी थी। और अबियाह और
युरब'आम के बीच जंग हुई।
3 अबियाह जंगी सूर्माओं का लश्कर, या'नी चार लाख चुने हुए
जंगी सूरमाओं का लश्कर लेकर लड़ाई में गया। और युरब'आम ने
उसके मुक़ाबिले में आठ लाख चुने हुए आदमी लेकर, जो ताक़तवर
सूर्मा थे सफ़आराई की।
4 और अबियाह समरेम के पहाड़ पर जो इफ़्राईम के पहाड़ी
मुल्क में है, खड़ा हुआ और कहने लगा, "ऐ युरब'आम और सब
इस्राईलियो, मेरी सुनो!
5 क्या तुम को मा'लूम नहीं कि ख़ुदा वन्द इस्राईल के ख़ुदा ने
इस्राईल की हुकूमत दाऊद ही को और उसके बेटों को, नमक के
अहद से हमेशा के लिए दी है?
6 तोभी नबात का बेटा युरब'आम, जो सुलेमान बिन दाऊद का
ख़ादिम था, उठकर अपने आक़ा से बाग़ी हुआ।
7 उसके पास निकम्मे और ख़बीस आदमी जमा' हो गए,
जिन्होंने सुलेमान के बेटे रहब'आम के मुक़ाबिले में ज़ोर पकड़ा,
जब रहुब'आम अभी जवान और नर्म दिल था और उनका
मुक़ाबिला नहीं कर सकता था।
8 और अब तुम्हारा ख़्याल है कि तुम ख़ुदावन्द की बादशाही
का, जो दाऊद की औलाद के हाथ में है, मुक़ाबिला करो; और तुम
भारी गिरोह हो और तुम्हारे साथ वह सुनहले बछड़े हैं जिनको
युरब'आम ने बनाया कि तुम्हारे मा'बूद हों।
9 क्या तुम ने हारून के बेटों और लावियों को जो ख़ुदावन्द
के काहिन थे, ख़ारिज नहीं किया, और मुल्कों की क़ौमों के तरीक़े

पर अपने लिए काहिन मुक़र्रर नहीं किए? ऐसा कि जो कोई एक
बछड़ा और सात मेंढे लेकर अपनी तक़्दीस करने आए, वह उनका
जो हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं काहिन हो सके।
10 लेकिन हमारा यह हाल है कि ख़ुदा वन्द हमारा ख़ुदा है और
हम ने उसे छोड़ नहीं दिया है, और हमारे यहाँ हारून के बेटे
काहिन हैं जो ख़ुदावन्द की ख़िदमत करते हैं, और लावी अपने
अपने काम में लगे रहते हैं।
11 और वह हर सुबह और हर शाम को ख़ुदावन्द के सामने
सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और ख़ुशबूदार ख़ुशबू जलाते हैं, और पाक
मेज़ पर नज़ की रोटियाँ क़ाइदे के मुताबिक़ रखते और सुनहले
शमा'दान और उसके चिराग़ों को हर शाम को रौशन करते हैं,
क्यूँकि हम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म को मानते हैं; लेकिन
तुम ने उसको छोड़ दिया है।
12 देखो, ख़ुदा हमारे साथ हमारा रहनुमा है, और उसके काहिन
तुम्हारें ख़िलाफ़ साँस बांधकर ज़ोर से फूँकने को नरसिंगे लिए हुए
हैं। ऐ बनी — इस्राईल, ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा से
मत लड़ो, क्यूँकि तुम कामयाब न होगे।"
13 लेकिन युरब'आम ने उनके पीछे कमीन लगवा दी। इसलिए
वह बनी यहूदाह के आगे रहे और कमीन पीछे थी।
14 जब बनी यहूदाह ने पीछे नज़र की, तो क्या देखा कि लड़ाई
उनके आगे और पीछे दोनों तरफ़ से है; और उन्होंने ख़ुदावन्द से
फ़रियाद की, और काहिनों ने नरसिंगे फूंके।
15 तब यहूदाह के लोगों ने ललकारा, और जब उन्होंने
ललकारा तो ऐसा हुआ कि ख़ुदा ने अबियाह और यहूदाह के आगे
युरब'आम को और सारे इस्राईल को मारा।
16 और बनी इस्राईल यहूदाह के आगे से भागे, और ख़ुदा ने
उनको उनके हाथ में कर दिया।

17 और अबियाह और उसके लोगों ने उनको बड़ी ख़ूनरेज़ी के
साथ क़त्ल किया, तब इस्राईल के पाँच लाख चुने हुए मर्द मारे
गए।
18 ऐसे बनी — इस्राईल उस वक़्त मग़लूब हुए और बनी
यहूदाह ग़ालिब आए, इसलिए कि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने बाप
दादा के ख़ुदा पर यक़ीन किया।
19 और अबियाह ने युरब'आम का पीछा किया और इन शहरों
को उससे ले लिया, या'नी बैतएल और उसके देहात। यसाना और
उसके देहात इफ्रोन और उसके देहात।
20 अबियाह के दिनों में युरब'आम ने फिर ज़ोर न पकड़ा, और
ख़ुदावन्द ने उसे मारा और वह मर गया।
21 लेकिन अबियाह ताक़तवर हो गया और उसने चौदह
बीवियाँ ब्याही, और उस के ज़रिए' बेटे और सोलह बेटियाँ पैदा
हुई।
22 अबियाह के बाक़ी काम और उसके हालात और उसकी
कहावतें 'ईदू नबी की तफ़्सीर में लिखी हैं।

14

[illegible]

1 और अबियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़्न किया; और उसका बेटा आसा
उसकी जगह बादशाह हुआ। उसके दिनों में दस साल तक मुल्क
में अमन रहा।
2 और आसा ने वही किया जो ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा के सामने
अच्छा और ठीक था।
3 क्यूँकि उसने अजनबी मज़बहों और ऊँचे मक़ामों को दूर
किया, और लाटों को गिरा दिया, और यसीरतों को काट डाला,
4 और यहूदाह को हुक्म किया कि ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा
के ख़ुदा के तालिब हों, और शरी'अत और फ़रमान पर 'अमल करें।

5 उसने यहूदाह के सब शहरों में से ऊँचे मक़ामों और सूरज की
मूरतों को दूर कर दिया, और उसके सामने हुकूमत में अमन रहा।
6 उसने यहूदाह में फ़सीलदार शहर बनाए, क्यूँकि मुल्क में
अमन था। उन बरसों में उसे जंग न करना पड़ा, क्यूँकि ख़ुदावन्द
ने उसे अमान बख़्शी थी।
7 इसलिए उसने यहूदाह से कहा, कि "हम यह शहर ता'मीर करें
और उनके पास दीवार और बुर्ज बनायें और फाटक और अड़बंगे
लगाएँ। यह मुल्क अभी हमारे क़ाबू में है, क्यूँकि हम ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के तालिब हुए हैं। हम उसके तालिब हुए और उसने
हम को चारों तरफ़ अमान बख़्शी है।" इसलिए उन्होंने उनको
ता'मीर किया और कामयाब हुए।
8 और आसा के पास बनी यहूदाह के तीन लाख आदमियों का
लश्कर था जो ढाल और भाला उठाते थे, और बिनयमीन के दो
लाख अस्सी हज़ार थे जो ढाल उठाते और तीर चलाते थे। यह
सब ज़बरदस्त सूर्मा थे।
9 और इनके मुक़ाबिले में ज़ारह कूशी दस लाख की फ़ौज और
तीन सौ रथों को लेकर निकला, और मरीसा में आया।
10 और आसा उसके मुक़ाबिले को गया, और उन्होंने मरीसा के
बीच सफ़ाता की वादी में जंग के लिए सफ़ बाँधी।
11 और आसा ने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से फ़रियाद की और कहा,
"ऐ ख़ुदावन्द, ताक़तवर और कमज़ोर के मुक़ाबिले में मदद करने
को तेरे 'अलावा और कोई नहीं। ऐ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा तू हमारी
मदद कर क्यूँकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरे नाम से इस
गिरोह का सामना करने आए हैं। तू ऐ ख़ुदा हमारा ख़ुदा है इंसान
तेरे मुक़ाबिले में ग़ालिब होने न पाए।"
12 फिर ख़ुदावन्द ने आसा और यहूदाह के आगे कूशियों को
मारा और कूशी भागे,
13 और आसा और उसके लोगों ने उनको जिरार तक दौड़ाया,

और कूशियों में से इतने क़त्ल हुए कि वह फिर संभल न सके, क्यूँकि वह ख़ुदावन्द और उसके लश्कर के आगे हलाक हुए; और वह बहुत सी लूट ले आए।

14 उन्होंने जिरार के आसपास के सब शहरों को मारा, क्यूँकि ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ उन पर छा गया था। और उन्होंने सब शहरों को लूट लिया, क्यूँकि उनमें बड़ी लूट थी।

15 और उन्होंने मवेशी के डेरों पर भी हमला किया, और कसरत से भेड़ें और ऊँट लेकर येरूशलेम को लौटे।

15

[illegible]

1 और ख़ुदा की रूह अज़रियाह बिन ओदिद पर नाज़िल हुई,

2 और वह आसा से मिलने को गया और उससे कहा, "ऐ आसा और सारे यहूदाह और बिनयमीन, मेरी सुनो। ख़ुदा वन्द तुम्हारे साथ है जब तक तुम उसके साथ हो, और अगर तुम उसके तालिब हो तो वह तुम को मिलेगा; लेकिन अगर तुम उसे छोड़ दो तो वह तुम को छोड़ देगा।

3 अब बड़ी मुद्दत से बनी — इस्राईल बग़ैर सच्चे ख़ुदा और बग़ैर सिखाने वाले काहिन और बग़ैर शरी'अत के रहे हैं,

4 लेकिन जब वह अपने दुख में ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की तरफ़ फिर कर उसके तालिब हुए तो वह उनको मिल गया।

5 और उन दिनों में उसे जो बाहर जाता था और उसे जो अन्दर आता था बिलकुल चैन न था, बल्कि मुल्कों के सब बाशिंदों पर बड़ी तकलीफ़ें थीं।

6 क़ौम क़ौम के मुक़ाबिले में, और शहर शहर के मुक़ाबिले में पिस गए, क्यूँकि ख़ुदा ने उनको हर तरह मुसीबत से तंग किया।

7 लेकिन तुम मज़बूत बनो और तुम्हारे हाथ ढीले न होने पाएँ, क्यूँकि तुम्हारे काम का अज्र मिलेगा।"

8 जब आसा ने इन बातों और 'ओदिद नबी की नबुव्वत को
सुना, तो उसने हिम्मत बाँधकर यहूदाह और बिनयमीन के सारे
मुल्क से, और उन शहरों से जो उसने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में
से ले लिए थे, मकरूह चीज़ों को दूर कर दिया, और ख़ुदावन्द के
मज़बह को जो ख़ुदावन्द के उसारे के सामने था फिर बनाया।
9 और उसने सारे यहूदाह और बिनयमीन को, और उन लोगों को
जो इफ़्राईम और मनस्सी और शमौन में से उनके बीच रहा करते
थे, इकट्ठा किया, क्यूँकि जब उन्होंने देखा कि ख़ुदावन्द उसका
ख़ुदा उसके साथ है, तो वह इस्राईल में से बकसरत उसके पास
चले आए।
10 वह आसा की हुकूमत के पन्द्रहवें साल के तीसरे महीने में,
येरूशलेम में जमा' हुए;
11 और उन्होंने उसी वक़्त उस लूट में से जो वह लाए थे,
ख़ुदावन्द के सामने सात सौ बैल और सात हज़ार भेड़ें क़ुर्बान कीं।
12 और वह उस 'अहद में शामिल हो गए, ताकि अपने सारे
दिल और अपनी सारी जान से ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के
ख़ुदा के तालिब हों,
13 और जो कोई, क्या छोटा क्या बड़ा क्या मर्द क्या 'औरत,
ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा का तालिब न हो वह क़त्ल किया
जाए।
14 उन्होंनें बड़ी आवाज़ से ललकार कर तुरहियों और नरसिंगों
के साथ ख़ुदावन्द के सामने क़सम खाई;
15 और सारा यहूदाह उस क़सम से बहुत ख़ुश हो गए, क्यूँकि
उन्होंने अपने सारे दिल से क़सम खाई थी, और कमाल आरज़ू से
ख़ुदावन्द के तालिब हुए थे और वह उनको मिला, और ख़ुदावन्द
ने उनको चारों तरफ़ अमान बख़्शी।
16 और आसा बादशाह की माँ मा'का को भी उसने मलिका के
'ओहदे से उतार दिया, क्यूँकि उसने यसीरत के लिए एक मकरूह

बुत बनाया था। इसलिए आसा ने उसके बुत को काटकर उसे चूर
चूर किया, और वादी — ए — क़िद्रोन में उसको जला दिया।
17 लेकिन ऊँचे मक़ाम इस्राईल में से दूर न किए गए, तो भी
आसा का दिल उम्र भर कामिल रहा।
18 और उसने ख़ुदा के घर में वह चीजें जो उसके बाप ने पाक
की थीं, और जो कुछ उसने ख़ुद पाक किया था दाख़िल कर दिया,
या'नी चाँदी और सोना और बर्तन।
19 और आसा की हुकूमत के पैंतीसवें साल तक कोई जंग न
हुई।

16

??? ?? ??????? ?? ?????? ???

1 और इस्राईल का बादशाह बाशा यहूदाह पर चढ़ आया, और
रामा को ता'मीर किया ताकि यहूदाह के बादशाह आसा के यहाँ
किसी को आने — जाने न दे।
2 तब आसा ने ख़ुदावन्द के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में
से चाँदी और सोना निकालकर, अराम के बादशाह बिन — हदद
के पास जो दमिश्क़ में रहता था रवाना किया और कहला भेजा
कि,
3 “मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद
— ओ — पैमान है; देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोना भेजा है,
इसलिए तू जाकर इस्राईल के रहने वाले बाशा से वा'दा खिलाफी
कर ताकि वह मेरे पास से चला जाए।”
4 और बिन — हदद ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने
लश्करों के सरदारों को इस्राईली शहरों पर हमला करने को भेजा,
तब उन्होंने 'अयून और दान और अबील माइम और नफ़्ताली के
जखीरे के सब शहरों को तबाह किया।
5 जब बाशा ने यह सुना तो रामा का बनाना छोड़ा, और अपना
काम बंद कर दिया।

6 तब आसा बादशाह ने सारे यहूदाह को साथ लिया, और
वह रामा के पत्थरों और लकड़ियों को जिनसे बाशा ता'मीर कर
रहा था उठा ले गए, और उसने उनसे जिब'आ और मिस्फाह को
ता'मीर किया।
7 उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहूदाह के बादशाह आसा के पास
आकर कहने लगा, "चूँकि तू ने अराम के बादशाह पर भरोसा किया
और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं रखा, इसी वजह से
अराम के बादशाह का लश्कर तेरे हाथ से बच निकला है।
8 क्या कूशी और लूबी बहुत बड़ा गिरोह न थे, जिनके साथ
गाड़ियाँ और सवार बड़ी कसरत से न थे? तो भी चूँकि तू ने
ख़ुदावन्द पर भरोसा रखा, उसने उनको तेरे क़ब्ज़ा में कर दिया;
9 क्यूँकि ख़ुदावन्द की आँखें सारी ज़मीन पर फिरती हैं, ताकि
वह उनकी इमदाद में जिनका दिल उसकी तरफ़ कामिल है, अपनी
ताक़त दिखाए। इस बात में तू ने बेवकूफ़ी की, क्यूँकि अब से तेरे
लिए जंग ही जंग है।"
10 तब आसा ने उस ग़ैबबीन से खफ़ा होकर उसे क़ैदखाने में
डाल दिया, क्यूँकि वह उस कलाम की वजह से बहुत ही ग़ुस्सा
हुआ; और आसा ने उस वक़्त लोगों में से कुछ औरों पर भी ज़ुल्म
किया।
11 और देखो, आसा के काम शुरू' से आख़िर तक यहूदाह और
इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा हैं।
12 और आसा की हुकूमत के उनतालीसवें साल उसके पाँव में
एक रोग लगा और वह रोग बहुत बढ़ गया, तो भी अपनी बीमारी
में वह ख़ुदावन्द का तालिब नहीं बल्कि हकीमों का तालिब हुआ।
13 और आसा अपने बाप — दादा के साथ सो गया; उसने
अपनी हुकूमत के इकतालीसवें साल में वफ़ात पाई।
14 उन्होंने उसे उन क़ब्रों में, जो उसने अपने लिए दाऊद के
शहर में खुदवाई थीं दफ़्न किया। उसे उस ताबूत में लिटा दिया

जो इत्रों और क़िस्म क़िस्म के मसाल्हे से भरा था, जिनको 'अतारों
की हिकमत के मुताबिक़ तैयार किया था, और उन्होंने उसके लिए
उनको ख़ूब जलाया।

17

[illegible]

1 और उसका बेटा यहूसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ, और
उसने इस्राईल के मुक़ाबिल अपने आपको मज़बूत किया।
2 उसने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में फ़ौजें रखी, और
यहूदाह के मुल्क में और इफ़्राईम के उन शहरों में जिनको उसके
बाप आसा ने ले लिया था, चौकियाँ बिठाई।
3 और ख़ुदावन्द यहूसफ़त के साथ था, क्यूँकि उसका चाल
चलन उसके बाप दाऊद के पहले तरीक़ों पर थी, और वह बा'लीम
का तालिब न हुआ,
4 बल्कि अपने बाप — दादा के ख़ुदा का तालिब हुआ और
उसके हुक्मों पर चलता रहा, और इस्राईल के से काम न किए।
5 इसलिए ख़ुदावन्द ने उसके हाथ में हुकूमत को मज़बूत किया;
और सारा यहूदाह यहूसफ़त के पास हदिए लाया, और उसकी
दौलत और 'इज़्ज़त बहुत फ़रावान हुई।
6 उसका दिल ख़ुदावन्द के रास्तों में बहुत ख़ुश था, और उसने
ऊँचे मक़ामों और यसीरतों को यहूदाह में से दूर कर दिया।
7 और अपनी हुकूमत के तीसरे साल उसने बिनख़ैल और
अबदियाह और ज़करियाह और नतनीएल और मीकायाह को,
जो उसके हाकिम थे, यहूदाह के शहरों में ता'लीम देने को भेजा:
8 और उनके साथ यह लावी थे या'नी समा'याह और नतनियाह
और ज़बदियाह और 'असाहेल और समीरामोत और यहूनतन

और अदूनियाह और तूबियाह और तूब अदूनियाह लावियों में
से, और इनके साथ इलीसमा' और यहूराम काहिनों में से थे।
9 इसीलिए उन्होंने ख़ुदावन्द की शरी'अत की किताब साथ रख
कर यहूदाह को ता'लीम दी, और वह यहूदाह के सब शहरों में गए
और लोगों को ता'लीम दी।
10 और ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ यहूदाह के पास पास की मुल्कों की
सब हुकूमतों पर छा गया, यहाँ तक कि उन्होंने यहूसफ़त से कभी
जंग न की।
11 बा'ज़ कुछ फ़िलिस्ती यहूसफ़त के पास हदिए और ख़िराज
में चाँदी लाए, और 'अरब के लोग भी उसके पास रेवड़ लाए,
या'नी सात हज़ार सात सौ मेंढे और सात हज़ार सात सौ बकरे।
12 और यहूसफ़त बहुत ही बढ़ा और उसने यहूदाह में क़िले'
और ज़ख़ीरे के शहर बनाए,
13 और यहूदाह के शहरों में उसके बहुत से कारोबार और
येरूशलेम में उसके जंगी जवान या'नी ताक़तवर सूर्मा थे,
14 और उनका शुमार अपने अपने आबाई ख़ान्दान के मुवाफ़िक़
यह था: यहूदाह में से हज़ारों के सरदार यह थे, सरदार 'अदना
और उसके साथ तीन लाख ताक़तवर सूर्मा,
15 और उससे दूसरे दर्जे पर सरदार यूहनान और उसके साथ दो
लाख अस्सी हज़ार,
16 और उससे नीचे 'अमसियाह बिन ज़िकरी था, जिसने अपने
को बख़ुशी ख़ुदावन्द के लिए पेश किया था, और उस के साथ दो
लाख ताक़तवर सूर्मा थे;
17 और बिनयमीन में से, इलीयदा' एक ताक़तवर सूर्मा था और
उसके साथ कमान और सिपर से मुसल्लह दो लाख थे;
18 और उससे नीचे यहूज़बद था, और उसके साथ एक लाख
अस्सी हज़ार थे जो जंग के लिए तैयार रहते थे।
19 यह बादशाह के ख़िदमत गुज़ार थे, और उनसे अलग थे

जिनको बादशाह ने तमाम यहूदाह के फ़सीलदार शहरों में रख्खा
था।

18

[illegible]

1 और यहूसफ़त की दौलत और 'इज़्ज़त फरावान थी और उसने
अख़ीअब के साथ रिस्ता जोड़ा।
2 और कुछ सालों के बाद वह अख़ीअब के पास सामरिया को
गया, और अख़ीअब ने उसके और उसके साथियों के लिए भेड़
— बकरियाँ और बैल कसरत से ज़बह किए, और उसे अपने साथ
रामात जिल'आद पर चढ़ायी करने की सलाह दी।
3 और इस्राईल के बादशाह अख़ीअब ने यहूदाह के बादशाह
यहूसफ़त से कहा, "क्या तू मेरे साथ रामात जिल'आद को
चलेगा? उसने जवाब दिया, मैं वैसा ही हूँ जैसा तू है, और मेरे
लोग ऐसे है जैसे तेरे लोग। इसलिए हम लड़ाई में तेरे साथ
होंगे।"
4 और यहूसफ़त ने इस्राईल के बादशाह से कहा, "आज ज़रा
ख़ुदावन्द की बात पू छ लें।"
5 तब इस्राईल के बादशाह ने नबियों को जो चार सौ जवान
थे, इकट्ठा किया और उनसे पूछा, "हम रामात जिल'आद को जंग
के लिए जाएँ या मैं बाज़ रहूँ?" उन्होंने कहा, "हमला कर क्यूँकि
ख़ुदा उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।"
6 लेकिन यहूसफ़त ने कहा, "क्या यहाँ इनके 'अलावा ख़ुदावन्द
का कोई नबी नहीं ताकि हम उससे पूछे?"
7 शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "एक शख़्स है
तो सही, है; जिसके ज़रिए' से हम ख़ुदावन्द से पूछ सकते लेकिन
मुझे उससे नफ़रत है, क्यूँकि वह मेरे हक़ में कभी नेकी की नहीं

बल्कि हमेशा बुराई की पेशीनगोई करता है। वह शख़्स मीकायाह बिन इमला है।" यहूसफ़त ने कहा, "बादशाह ऐसा न कहे।"

8 तब शाह — ए — इस्राईल ने एक 'उहदेदार को बुला कर हुक्म किया, "मीकायाह बिन इमला को जल्द ले आ।"

9 और शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त अपने अपने तख़्त पर अपना अपना लिबास पहने बैठे थे। वह सामरिया के फाटक के सहन पर खुली जगह में बैठे थे, और सब अम्बिया उनके सामने नबुव्वत कर रहे थे।

10 और सिदक़ियाह बिन कना'ना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाए और कहा, "ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि तू इनसे अरामियों को ढक लेगा, जब तक कि वह ख़त्म न हो जाएँ।"

11 और सब नबियों ने ऐसी ही नबुव्वत की और कहते रहे कि रामात जिल'आद को जा और कामयाब हो, क्यूँकि ख़ुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।

12 और उस क़ासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था, उससे यह कहा, "देख, सब अम्बिया एक ज़बान होकर बादशाह को ख़ुश ख़बरी दे रहे हैं, इसलिए तेरी बात भी ज़रा उनकी बात की तरह हो; और तू ख़ुशख़बरी ही देना।"

13 मीकायाह ने कहा, "ख़ुदावन्द की हयात की क़सम, जो कुछ मेरा ख़ुदा फ़रमाएगा मैं वही कहूँगा।"

14 जब वह बादशाह के पास पहुँचा, तो बादशाह ने उससे कहा, "मीकायाह, हम रामात जिल'आद को जंग के लिए जाएँ या मैं बाज़ रहूँ?" उसने कहा, "तुम चढ़ाई करो और कामयाब हो, और वह तुम्हारे हाथ में कर दिए जाएँगे।"

15 बादशाह ने उससे कहा, "मैं तुझे कितनी बार क़सम देकर कहूँ कि तू मुझे ख़ुदावन्द के नाम से हक़ के 'अलावा और कुछ न बताए?"

16 उसने कहा, “मैंने सब बनी — इस्राईल को पहाड़ों पर उन
भेड़ों की तरह बिखरा देखा जिनका कोई चरवाहा न हो, और
ख़ुदावन्द ने कहा इनका कोई मालिक नहीं, इसलिए इनमें से हर
शख़्स अपने घर को सलामत लौट जाए।”
17 तब शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, “क्या मैंने
तुझ से कहा न था कि वह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की
पेशीनगोई करेगा?”
18 तब वह बोल उठा, अच्छा, तुम ख़ुदावन्द के बात को सुनो:
मैंने देखा कि ख़ुदावन्द अपने तख़्त पर बैठा है और सारा आसमानी
लश्कर उसके दहने और बाएँ हाथ खड़ा है।
19 और ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, 'शाह — ए — इस्राईल
अख़ीअब को कौन बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात
जिल'आद में मक्तूल हो? और किसी ने कुछ और किसी ने कुछ
कहा।
20 तब एक रूह निकलकर ख़ुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और
कहने लगी, “मैं उसे बहकाऊँगी। ख़ुदावन्द ने उससे पूछा, किस
तरह?”
21 उसने कहा, “मैं जाऊँगी, और उसके सब नबियों के मुँह में
झूट बोलने वाली रूह बन जाऊँगी। ख़ुदावन्द ने कहा, 'तू उसे
बहकाएगी, और ग़ालिब भी होगी; जा और ऐसा ही कर।
22 इसलिए देख, ख़ुदावन्द ने तेरे इन सब नबियों के मुँह में झूट
बोलने वाली रूह डाली है, और ख़ुदावन्द ने तेरे हक़ में बुराई का
हुक्म दिया है।”
23 तब सिदक़ियाह बिन कना'ना ने पास आकर मीकायाह के
गाल पर मारा और कहने लगा, ख़ुदावन्द की रूह तुझ से कलाम
करने को किस रास्ते मेरे पास से निकल कर गई?
24 मीकायाह ने कहा, “तू उस दिन देख लेगा, जब तू अन्दर की
कोठरी में छिपने को घुसेगा।”

25 और शाह — ए — इस्राईल ने कहा, मीकायाह को पकड़ कर
उसे शहर के नाज़िम अमून और यूआस शहज़ादे के पास लौटा ले
जाओ,
26 और कहना, "बादशाह यूँ फ़रमाता है कि जब तक मैं
सलामत वापस न आ जाऊँ, इस आदमी को क़ैदखाने में रखो, और
उसे मुसीबत की रोटी खिलाना और मुसीबत का पानी पिलाना।"
27 मीकायाह ने कहा, "अगर तू कभी सलामत वापस आए, तो
ख़ुदावन्द ने मेरे ज़रिए' कलाम ही नहीं किया।" और उसने कहा,
"ऐ लोगों, तुम सब के सब सुन लो।"
28 इसलिए शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह
यहूसफ़त ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की।
29 और शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "मैं अपना
भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा, लेकिन तू अपना लिबास पहने
रह।" इसलिए शाह — ए — इस्राईल ने भेस बदल लिया, और
वह लड़ाई में गए।
30 इधर शाह — ए — अराम ने अपने रथों के सरदारों को हुक्म
दिया था, "शाह — ए — इस्राईल के सिवा, किसी छोटे या बड़े
से जंग न करना।"
31 और ऐसा हुआ कि जब रथों के सरदारों ने यहूसफ़त को
देखा तो कहने लगे, "शाह — ए — इस्राईल यही है।" इसलिए
वह उससे लड़ने को मुड़े। लेकिन यहूसफ़त चिल्ला उठा, और
ख़ुदावन्द ने उसकी मदद की; और ख़ुदा ने उनको उसके पास से
लौटा दिया।
32 जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह — ए — इस्राईल
नहीं है, तो उसका पीछा छोड़कर लौट गए।
33 और किसी शख़्स ने यूँ ही कमान खींची और शाह — ए
— इस्राईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा। तब उसने अपने
सारथी से कहा, "बाग मोड़ और मुझे लश्कर से निकाल ले चल,

क्यूँकि मैं बहुत ज़ख़्मी हो गया हूँ।”
34 और उस दिन जंग ख़ूब ही हुई, तो भी शाम तक शाह —
ए — इस्राईल अरामियों के मुक़ाबिल अपने को अपने रथ पर
संभाले रहा, और सूरज डूबने के वक़्त के क़रीब मर गया।

19

[illegible]

1 और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त येरूशलेम को अपने
महल में सलामत लौटा।
2 तब हनानी ग़ैबबीन का बेटा याहू उसके इस्तक़बाल को
निकला, और यहूसफ़त बादशाह से कहने लगा, क्या मुनासिब है
कि तू शरीरों की मदद करे, और ख़ुदावन्द के दुश्मनों से मुहब्बत
रखें? इस बात की वजह से ख़ुदावन्द की तरफ़ से तुझ पर ग़ज़ब
है।
3 तो भी तुझ में ख़ूबियाँ हैं; क्यूँकि तू ने यसीरतों को मुल्क में से
दफ़ा' किया, और ख़ुदा की तलाश में अपना दिल लगाया है।
4 यहूसफ़त येरूशलेम में रहता था, और उसने फिर बैरसबा' से
इफ़्राईम के पहाड़ी तक लोगों के बीच दौरा करके, उनको ख़ुदावन्द
उनके बाप — दादा के ख़ुदा की तरफ़ फिर मोड़ दिया।
5 उसने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में शहर — ब — शहर
क़ाज़ी मुक़र्रर किए,
6 और क़ाज़ियों से कहा, जो कुछ करो सोच समझकर करो,
क्यूँकि तुम आदमियों की तरफ़ से नहीं, बल्कि ख़ुदावन्द की तरफ़
से 'अदालत करते हो; और वह फ़ैसले में तुम्हारे साथ है।
7 फिर ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ तुम में रहे; इसलिए ख़बरदारी से
काम करना, क्यूँकि ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा में बेइन्साफ़ी नहीं है,
और न किसी की रूदारी न रिश्वत ख़ोरी।

8 और येरूशलेम में भी यहूसफ़त ने लावियों और काहिनों
और इस्राईल के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों में से लोगों को,
ख़ुदावन्द की 'अदालत और मुक़द्दमों के लिए मुक़र्रर किया; और
वह येरूशलेम को लौटे
9 और उसने उनको ताकीद की और कहा कि तुम ख़ुदावन्द के
ख़ौफ़ से दियानतदारी और कामिल दिल से ऐसा करना।
10 जब कभी तुम्हारे भाइयों की तरफ़ से जो अपने शहरों में
रहते हैं, कोई मुक़द्दमा तुम्हारे सामने आए, जो आपस के ख़ून से
या शरी'अत और फ़रमान या क़ानून और 'अदालत से ता'अल्लुक़
रखता हो, तो तुम उनको आगाह कर देना कि वह ख़ुदावन्द
का गुनाह न करें, जिससे तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर ग़ज़ब
नाज़िल हो। यह करो तो तुम से ख़ता न होगी।
11 और देखो, ख़ुदावन्द के सब मु'आमिलों में अमरियाह
काहिन तुम्हारा सरदार है, और बादशाह के सब मु'आमिलों में
ज़बदियाह बिन इस्माईल है, जो यहूदाह के ख़ान्दान का रहनुमा
है; और लावी भी तुम्हारे आगे सरदार होंगे। हौसले के साथ काम
करना और ख़ुदावन्द नेकों के साथ हो।

20

[illegible]

1 उसके बाद ऐसा हुआ कि बनी मोआब और बनी 'अम्मून और
उनके साथ कुछ 'अम्मूनियों ने यहूसफ़त से लड़ने को चढ़ाई की।
2 तब चन्द लोगों ने आकर यहूसफ़त को ख़बर दी, “दरिया के
पार अराम की तरफ़ से एक बड़ा गिरोह तेरे मुक़ाबिले को आ रहा
है; और देख, वह हसासून — तमर में हैं, जो ऐनजदी है।”
3 और यहूसफ़त डर कर दिल से ख़ुदावन्द का तालिब हुआ,
और सारे यहूदाह में रोज़ा का 'ऐलान कराया।

4 और बनी यहूदाह ख़ुदावन्द से मदद माँगने को इकट्ठे हुए,
बल्कि यहूदाह के सब शहरों में से ख़ुदावन्द से मदद माँगने को
आए।
5 और यहूसफ़त यहूदाह और येरूशलेम की जमा'अत के बीच,
ख़ुदावन्द के घर में नए सहन के आगे खड़ा हुआ
6 और कहा, "ऐ ख़ुदावन्द, हमारे बाप — दादा के ख़ुदा! क्या
तू ही आसमान में ख़ुदा नहीं? और क्या क़ौमों की सब मुल्कों पर
हुकूमत करने वाला तू ही नहीं? ज़ोर और क़ुदरत तेरे हाथ में है,
ऐसा कि कोई तेरा सामना नहीं कर सकता।
7 ऐ हमारे ख़ुदा, क्या तू ही ने इस सरज़मीन के बाशिंदों को
अपनी क़ौम इस्राईल के आगे से निकाल कर इसे अपने दोस्त
अब्रहाम की नसल को हमेशा के लिए नहीं दिया?
8 चुनाँचे वह उसमें बस गए, और उन्होंने तेरे नाम के लिए उसमें
एक मक़दिस बनाया है और कहते हैं कि;
9 अगर कोई बला हम पर आ पड़े, जैसे तलवार या आफ़त या
वबा या काल, तो हम इस घर के आगे और तेरे सामने खड़े होंगे
क्यूँकि तेरा नाम इस घर में है, और हम अपनी मुसीबत में तुझ से
फ़रियाद करेंगे और तू सुनेगा और बचा लेगा।
10 इसलिए अब देख, 'अम्मून और मोआब और कोह — ए —
श'ईर के लोग जिन पर तू ने बनी — इस्राईल को, जब वह मुल्क
— ए — मिस्र से निकलकर आ रहे थे, हमला करने न दिया बल्कि
वह उनकी तरफ़ से मुड़ गए और उनको हलाक न किया।
11 देख, वह हम को कैसा बदला देते हैं कि हम को तेरी मीरास
से, जिसका तू ने हम को मालिक बनाया है, निकालने को आ रहे
हैं।
12 ऐ हमारे ख़ुदा क्या तू उनकी 'अदालत नहीं करेगा? क्यूँकि
इस बड़े गिरोह के मुक़ाबिल जो हम पर चढ़ा आता है, हम कुछ
ताक़त नहीं रखते और न हम यह जानते हैं कि क्या करें? बल्कि

हमारी आँखें तुझ पर लगी हैं।"

13 और सारा यहूदाह अपने बच्चों और बीवियों और लड़कों
समेत ख़ुदावन्द के सामने खड़ा रहा।

14 तब जमा'अत के बीच यहज़ीएल बिन ज़करियाह बिन
बिनायाह बिन यईएल बिन मत्तनियाह, एक लावी पर जो बनी
आसफ़ में से था, ख़ुदावन्द की रूह नाज़िल हुई

15 और वह कहने लगा, ऐ तमाम यहूदाह और येरूशलेम के
बाशिन्दों, और ऐ बादशाह यहूसफ़त, तुम सब सुनो! ख़ुदावन्द
तुम को यूँ फ़रमाता है कि तुम इस बड़े गिरोह की वजह से न तो
डरो और न घबराओ, क्यूँकि यह जंग तुम्हारी नहीं बल्कि ख़ुदा
की है।

16 तुम कल उनका सामना करने को जाना। देखो, वह सीस
की चढ़ाई से आ रहे हैं, और यरूएल के जंगल के सामने वादी के
किनारे पर तुम को मिलेंगे

17 तुम को इस जगह में लड़ना नहीं पड़ेगा। ऐ यहूदाह और
येरूशलेम, तुम क़तार बाँधकर चुपचाप खड़े रहना और ख़ुदावन्द
की नजात जो तुम्हारे साथ है देखना। ख़ौफ़ न करो और न
घबराओ; कल उनके मुक़ाबिला को निकलना, क्यूँकि ख़ुदावन्द
तुम्हारे साथ है।

18 और यहूसफ़त सिज्दे होकर ज़मीन तक झुका, और तमाम
यहूदाह और येरूशलेम के रहने वालों ने ख़ुदावन्द के आगे गिरकर
उसको सिज्दा किया।

19 और बनी क़िहात और बनी क़ोरह के लावी बुलन्द आवाज़
से ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की हम्द करने को खड़े हो गए।

20 और वह सुबह सवेरे उठ कर तक़ू'अ के जंगल में निकल गए,
और उनके चलते वक़्त यहूसफ़त ने खड़े होकर कहा, "ऐ यहूदाह
और येरूशलेम के बाशिन्दों, मेरी सुनो। ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा पर

ईमान रखों, तो तुम क़ाइम किए जाओगे; उसके नबियों का यक़ीन
करो, तो तुम कामयाब होगे।"
21 जब उसने क़ौम से सलाह कर लिया, तो उन लोगों को
मुक़र्रर किया जो लश्कर के आगे आगे चलते हुए ख़ुदावन्द के
लिए गाएँ, और पाकीज़गी की ख़ूबसूरती के साथ उसकी हम्द करें
और कहें, कि ख़ुदावन्द की शुक्रगुज़ारी करो क्यूँकि उसकी रहमत
हमेशा तक है।
22 जब वह गाने और हम्द करने लगे, तो ख़ुदावन्द ने बनी
'अम्मून और मोआब और कोह — ए — श'ईर के बाशिन्दों पर जो
यहूदाह पर चढ़े आ रहे थे, कमीन वालों को बैठा दिया इसलिए
वह मारे गए।
23 क्यूँकि बनी 'अम्मून और मोआब कोह — ए — श'ईर के
बाशिन्दों के मुक़ाबिले में खड़े हो गए कि उनको बिल्कुल तह —
ए — तेग और हलाक करें, और जब वह शईर के बाशिन्दों का
ख़ातिमा कर चुके, तो आपस में एक दूसरे को हलाक करने लगे।
24 और जब यहूदाह ने पहरेदारों के बुर्ज पर जो बियाबान में
था, पहुँच कर उस गिरोह पर नज़र की तो क्या देखा कि उनकी
लाशें ज़मीन पर पड़ी हैं, और कोई न बचा।
25 जब यहूसफ़त और उसके लोग उनका माल लूटने आए,
तो उनको इस कसरत से दौलत और लाशे और क़ीमती जवाहिर
जिनकी उन्होंने अपने लिए उतार लिया, मिले कि वह इनको ले
जा भी न सके, और माल — ए — ग़नीमत इतना था कि वह तीन
दिन तक उसके बटोर ने में लगे रहे।
26 चौथे दिन वह बराकाह की वादी में इकट्ठे हुए क्यूँकि उन्होंने
वहाँ ख़ुदावन्द को मुबारक कहा; इसलिए कि उस मक़ाम का नाम
आज तक बराकाह की वादी है।
27 तब वह लौटे, या'नी यहूदाह और येरूशलेम का हर शख़्स
उनके आगे आगे यहूसफ़त ताकि वह ख़ुशी ख़ुशी येरूशलेम को

वापस जाएँ, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने उनको उनके दुश्मनों पर ख़ुश
किया था।
28 इसलिए वह सितार और बरबत और नरसिंगे लिए
येरूशलेम में ख़ुदावन्द के घर में आए।
29 और ख़ुदा का ख़ौफ़ उन मुल्कों की सब सल्तनतों पर छा
गया, जब उन्होंने सुना कि इस्राईल कि दुश्मनों से ख़ुदावन्द ने
लड़ाई की है।
30 इसलिए यहूसफ़त की हुकूमत में अम्न रहा, क्यूँकि उसके
ख़ुदा ने उसे चारों तरफ़ अमान बख़्शी।
31 यहूसफ़त यहूदाह पर हुकूमत करता रहा। जब वह हुकूमत
करने लगा तो पैंतीस साल का था, और उसने येरूशलेम में
पच्चीस साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अज़ूबाह था, जो
सिलही की बेटी थी।
32 वह अपने बाप आसा के रास्ते पर चला और उससे न मुड़ा,
या'नी वही किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में ठीक है।
33 तो भी ऊँचे मक़ाम दूर न किए गए थे, और अब तक लोगों
ने अपने बाप — दादा के ख़ुदा से दिल नहीं लगाया था।
34 और यहूसफ़त के बाक़ी काम शुरू' से आख़िर तक याहू बिन
हनानी की तारीख़ में दर्ज हैं, जो इस्राईल के सलातीन की किताब
में शामिल है
35 इसके बाद यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने इस्राईल के
बादशाह अख़ज़ियाह से, जो बड़ा बदकार था, सुलह किया;
36 और इसलिए उससे सुलह किया कि तरसीस जाने को जहाज़
बनाए, और उन्होंने 'अस्यूनजाबर में जहाज़ बनाए।
37 तब एलियाज़र बिन दूदावाहू ने, जो मरीसा का था,
यहूसफ़त के बरख़िलाफ़ नबुव्वत की और कहा, “इसलिए कि तू
ने अख़ज़ियाह से सुलह कर लिया है, ख़ुदावन्द ने तेरे बनाए को
तोड़ दिया है।” फ़िर वह जहाज़ ऐसे टूटे कि तरसीस को न जा

सके।

21

[illegible]

1 और यहूसफ़त अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़्न हुआ; और
उसका बेटा यहूराम उसकी जगह हुकूमत करने लगा।
2 उसके भाई जो यहूसफ़त के बेटे यह थे: या'नी 'अज़रियाह
और यहीएल और ज़करियाह और 'अज़रियाह और मीकाईल और
सफ़तियाह, यह सब शाह — ए — इस्राईल यहूसफ़त के बेटे थे।
3 और उनके बाप ने उनको चाँदी और सोने और बेशक़ीमत
चीज़ों के बड़े इनाम और फ़सीलदार शहर यहूदाह में 'अता किए,
लेकिन हुकूमत यहूराम को दी क्यूँकि वह पहलौठा था।
4 जब यहूराम अपने बाप की हुकूमत पर क़ाईम हो गया और
अपने को ताक़तवर कर लिया, तो उसने अपने सब भाइयों को
और इस्राईल के कुछ सरदारों को भी तलवार से क़त्ल किया
5 यहूराम जब हुकूमत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और
उसने आठ साल येरूशलेम में हुकूमत की।
6 और वह अख़ीअब के घराने की तरह इस्राईल के बादशाहों के
रास्ते पर चला, क्यूँकि अख़ीअब की बेटी उसकी बीवी थी; और
उसने वही किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में बुरा है।
7 तो भी ख़ुदावन्द ने दाऊद के ख़ान्दान को हलाक करना न
चाहा, उस 'अहद की वजह से जो उसने दाऊद से बाँधा था, और
जैसा उसने उसे और उसकी नसल को हमेशा के लिए एक चिराग़
देने का वा'दा किया था।
8 उसी के दिनों में अदोम यहूदाह की हुकूमत से अलग हो गया
और अपने ऊपर एक बादशाह बना लिया।

9 तब यहूराम अपने अमीरों और अपने सब रथों को साथ लेकर
उबूर कर गया और रात को उठकर अदोमियों को, जो उसे और
रथों के सरदारों को घेरे हुए थे मारा।
10 इसलिए अदोमी यहूदाह से आज तक अलग हैं, और उसी
वक़्त लिबनाह भी उसके हाथ से निकल गया, क्यूँकि उसने
ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा को छोड़ दिया था।
11 और इसके 'अलावा उसने यहूदाह के पहाड़ों पर ऊँचे मक़ाम
बनाए और येरूशलेम के बाशिन्दों को ज़िनाकार बनाया, और
यहूदाह को गुमराह किया।
12 और एलियाह नबी से उसे इस मज़्मून का ख़त मिला,
"ख़ुदावन्द तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा ऐसा फ़रमाता है, इसलिए
कि तू न अपने बाप यहूसफ़त के रास्तों पर और न यहूदाह के
बादशाह आसा के रास्तों पर चला,
13 बल्कि इस्राईल के बादशाहों के रास्ते पर चला है, और
यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों को ज़िनाकार बनाया जैसा
अख़ीअब के ख़ान्दान ने किया था; और अपने बाप के घराने में से
अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे क़त्ल भी किया।
14 इसलिए देख, ख़ुदावन्द तेरे लोगों को और तेरे बेटों और
तेरी बीवियों को और तेरे सारे माल को बड़ी आफ़तों से मारेगा।
15 और तू अन्तड़ियों के मर्ज़ की वजह से सख़्त बीमार हो
जाएगा, यहाँ तक कि तेरी अन्तड़ियाँ उस मर्ज़ की वजह से हर
दिन निकलती जाएँगी।"
16 और ख़ुदावन्द ने यहूराम के ख़िलाफ़ फ़िलिस्तियों और उन
'अरबों का, जो कूशियों की सिम्त में रहते हैं दिल उभारा।
17 इसलिए वह यहूदाह पर चढ़ाई करके उसमें घुस आए, और
सारे माल को जो बादशाह के घर में मिला और उसके बेटों और
उसकी बीवियों को भी ले गए, ऐसा कि यहूआख़ज़ के 'अलावा

जो उसके बेटों में सबसे छोटा था उसका कोई बेटा बाक़ी न रहा।
18 और इस सबके बाद ख़ुदावन्द ने एक लाइलाज मर्ज़ उसकी
अन्तड़ियों में लगा दिया।
19 कुछ मुद्दत के बा'द, दो साल के आख़िर में ऐसा हुआ कि
उसके रोग के मारे उसकी अन्तड़ियाँ निकल पड़ी और वह बुरी
बीमारियों से मर गया। उसके लोगों ने उसके लिए आग न जलाई,
जैसा उसके बाप — दादा के लिए जलाते थे।
20 वह बत्तीस साल का था जब हुकूमत करने लगा और उसने
आठ साल येरूशलेम में हुकूमत की; और वह बग़ैर मातम के
रुख़सत हुआ और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़्न किया,
लेकिन शाही क़ब्रों में नहीं।

22

[illegible]

1 और येरूशलेम के बाशिंदों ने उसके सबसे छोटे बेटे
अख़ज़ियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया; क्यूँकि लोगों के
उस जत्थे ने जो 'अरबों के साथ छावनी में आया था, सब बड़े बेटों
को क़त्ल कर दिया था। इसलिए शाह — ए — यहूदाह यहूराम
का बेटा अख़ज़ियाह बादशाह हुआ।
2 अख़ज़ियाह बयालीस' साल का था जब वह हुकूमत करने
लगा, और उसने येरूशलेम में एक साल हुकूमत की। उसकी माँ
का नाम 'अतलियाह था, जो 'उमरी की बेटी थी।
3 वह भी अख़ीअब के ख़ान्दान के रास्ते पर चला, क्यूँकि उसकी
माँ उसको बुराई की सलाह देती थी।
4 उसने ख़ुदावन्द की नज़र में बुराई की जैसा अख़ीअब के
ख़ान्दान ने किया था, क्यूँकि उसके बाप के मरने के बाद वही उसके
सलाहकार थे, जिससे उसकी बर्बादी हुई।

5 और उसने उनके सलाह पर 'अमल भी किया, और शाह —
ए — इस्राईल अख़ीअब के बेटे यहूराम के साथ शाह — ए
— अराम हज़ाएल से रामात जिल'आद में लड़ने को गया, और
अरामियों ने यहूराम को ज़ख़्मी किया;
6 और वह यज़र'ऐल को उन ज़ख़्मों के 'इलाज के लिए लौटा
जो उसे रामा में शाह — ए — अराम हज़ाएल के साथ लड़ते वक़्त
उन लोगों के हाथ से लगे थे, और शाह — ए — यहूदाह यहूराम
का बेटा 'अज़रियाह, यहूराम बिन अख़ीअब को यज़र'एल में
देखने गया क्यूँकि वह बीमार था।
7 अख़ज़ियाह की हलाकत ख़ुदा की तरफ़ से ऐसी हुई कि वह
यहूराम के पास गया, क्यूँकि जब वह पहुँचा तो यहूराम के साथ
याहू बिन निमसी से लड़ने को गया, जिसे ख़ुदावन्द ने अख़ीअब
के ख़ान्दान को काट डालने के लिए मसह किया था।
8 और जब याहू अख़ीअब के ख़ानदान को सज़ा दे रहा था तो
उसने यहूदाह के सरदारों और अज़ज़ियाह के भाइयों के बेटों को
अख़ज़ियाह की ख़िदमत करते पाया और उनको क़त्ल किया।
9 और उसने अख़ज़ियाह को ढूंढा यह सामरिया में छिपा था
इसलिए वह उसे पकड कर याहू के पास लाये और उसे क़त्ल
किया और उन्होंने उसे दफ़न किया क्यूँकि वह कहने लगे, “वह
यहूसफ़त का बेटा है, जो अपने सारे दिल से ख़ुदावन्द का तालिब
रहा।” और अख़ज़ियाह के घराने में हुकूमत संभालने की ताक़त
किसी में न रही।
10 जब अख़ज़ियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा
मर गया, तो उसने उठ कर यहूदाह के घराने की सारी शाही नसल
को मिटा दिया।
11 लेकिन बादशाह की बेटी यहूसब'अत अख़ज़ियाह के बेटे
यूआस को बादशाह के बेटों के बीच से जो क़त्ल किए गए, चुरा

ले गई और उसे और उसकी दाया को बिस्तरों की कोठरी में रखा। इसलिए यहूराम बादशाह की बेटी यहूयदा' काहिन की बीवी यहूसब'अत ने चूँकि वह अख़ज़ियाह की बहन थी उसे अतलियाह से ऐसा छिपाया कि वह उसे क़त्ल करने न पायी।

12 और वह उनके पास ख़ुदा की हैकल में छ: साल तक छिपा
रहा, और 'अतलियाह मुल्क पर हुकूमत करती रही।

23

[illegible]

1 सातवे साल यहूयदा' ने ज़ोर पकड़ा और सैकड़ों के सरदारों
या'नी 'अज़रियाह बिन यहूराम और इस्मा'ईल बिन यहूहनान
और अज़रियाह बिन 'ओबेद और मासियाह बिन 'अदायाह और
इलीसाफ़त बिन ज़िकरी से 'अहद बाँधा।
2 वह यहूदाह में फिरे, और यहूदाह के सब शहरों में से लावियों
को, और इस्राईल के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों को इकट्ठा किया,
और वह येरूशलेम में आए।
3 और सारी जमा'अत ने ख़ुदा के घर में बादशाह के साथ 'अहद
बाँधा, और यहूयदा' ने उनसे कहा, "देखो! यह शाहज़ादा जैसा
ख़ुदावन्द ने बनी दाऊद के हक़ में फ़रमाया है, हुकूमत करेगा।
4 जो काम तुम को करना है वह यह है कि तुम काहिनों और
लावियों में से जो सब्त को आते हो, एक तिहाई दरबान हो,
5 और एक तिहाई शाही महल पर, और एक तिहाई बुनियाद के
फाटक पर; और सब लोग ख़ुदावन्द के घर के सहनों में हो।
6 पर ख़ुदावन्द के घर में सिवा काहिनों के और उनके जो
लावियों में से ख़िदमत करते हैं, और कोई न आने पाए वही अन्दर
आए क्यूँकि वह मुक़द्दस है लेकिन सब लोग ख़ुदावन्द का पहरा
देते रहें।

7 और लावी अपने अपने हाथ में अपने हथियार लिए हुए
बादशाह को चारों तरफ़ से घेरे रहे, और जो कोई हैकल में आए
क़त्ल किया जाए और बादशाह जब अन्दर आए और बाहर
निकले तो तुम उसके साथ रहना।"
8 इसलिए लावियों और सारे यहूदाह ने यहूयदा' काहिन के
हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ किया, और उनमें से हर शख़्स ने अपने
लोगों को लिया, या'नी उनको जो सब्त को अन्दर आते थे और
उनको जो सब्त को बाहर चले जाते थे; क्यूँकि यहूयदा' काहिन ने
बारी वालों को रुख़सत नहीं किया था।
9 और यहूयदा' काहिन ने दाऊद बादशाह की बर्छियाँ और
ढालें और फरियाँ, जो ख़ुदा के घर में थीं, सैंकड़ों सरदारों को दीं।
10 और उसने सब लोगों को जो अपना अपना हथियार हाथ
में लिए हुए थे, हैकल की दहनी तरफ़ से उसकी बाई तरफ़ तक,
मज़बह और हैकल के पास बादशाह के चारो तरफ़ खड़ा कर दिया।
11 फिर वह शाहज़ादे को बाहर लाए, और उसके सिर पर
ताज रखकर गवाही नामा दिया और उसे बादशाह बनाया; और
यहूयदा' और उसके बेटों ने उसे मसह किया, और वह बोल उठे,
"बादशाह सलामत रहे।"
12 जब 'अतलियाह ने लोगों का शोर सुना, जो दौड़ दौड़ कर
बादशाह की तारीफ़ कर रहे थे, तो वह ख़ुदावन्द के घर में लोगों
के पास आई।
13 और उसने निगाह की और क्या देखा कि बादशाह फाटक में
अपने सुतून के पास खड़ा है, और बादशाह के नज़दीक हाकिम
और नरसिंगे हैं और सारी ममलकत के लोग ख़ुश हैं और नरसिंगे
फूंक रहे हैं, और गानेवाले बाजों को लिए हुए मदहसराई करने
में पेशवाई कर रहे हैं। तब 'अतलियाह ने अपने कपड़े फाड़े और
कहा, "गद्र है! गद्र!"
14 तब यहूयदा' काहिन सैकड़ों के सरदारों को जो लश्कर पर

मुक़र्रर थे, बाहर ले आया और उनसे कहा कि उसको सफ़ों के बीच
करके निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले वह तलवार
से मारा जाए। क्यूँकि काहिन कहने लगा कि ख़ुदावन्द के घर में
उसे क़त्ल न करो।
15 इसलिए उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह
शाही महल के घोड़ा फाटक के सहन को गई, और वहाँ उन्होंने
उसे क़त्ल कर दिया
16 फिर यहूयदा' ने अपने और सब लोगों और बादशाह के बीच
'अहद बाँधा कि वह ख़ुदावन्द के लोग हों।
17 तब सब लोग बा'ल के मन्दिर को गए और उसे ढाया; और
उन्होंने उसके मज़बहों और उसकी मूरतों को चकनाचूर किया,
और बा'ल के पुजारी मतान को मज़बहों के सामने क़त्ल किया।
18 और यहूयदा' ने ख़ुदावन्द की हैकल की ख़िदमत लावी
काहिनों के हाथ में सौंपी, जिनको दाऊद' ने ख़ुदावन्द की हैकल
में अलग अलग ठहराया था कि ख़ुदावन्द की सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ
जैसा मूसा की तौरेत में लिखा है, ख़ुशी मनाते हुए और गाते हुए
दाऊद के दस्तूर के मुताबिक़ अदा करेंगे।
19 और उसने ख़ुदावन्द की हैकल के फाटकों पर दरबानों को
बिठाया, ताकि जो कोई किसी तरह से नापाक हो, अन्दर आने न
पाए।
20 और उसने सैकड़ों के सरदारों और हाकिम और क़ौम के
हाकिमों और मुल्क के सब लोगों को साथ लिया, और बादशाह
को ख़ुदावन्द की हैकल से ले आया, और वह ऊपर के फाटक से
शाही महल में आए और बादशाह की तख़्त — ए — हुकूमत पर
बिठाया।
21 तब मुल्क के सब लोगों ने ख़ुशी मनाई और शहर में अमन
हुआ। उन्होंने 'अतलियाह को तलवार से क़त्ल कर दिया।

24

[illegible]

1 यूआस सात साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और
उसने चालीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम
ज़िबियाह था, जो बैरसबा' की थी।
2 और यूआस यहूयदा' काहिन के जीते जी वही, जो ख़ुदावन्द
की नज़र में ठीक है, करता रहा।
3 यहूयदा' ने उसे दो बीवियाँ ब्याह दीं, और उससे बेटे और
बेटियाँ पैदा हुई।
4 इसके बाद यूँ हुआ कि यूआस ने ख़ुदावन्द के घर की मरम्मत
का 'इरादा किया।
5 इसलिए उसने काहिनों और लावियों को इकट्ठा किया और
उनसे कहा कि यहूदाह के शहरों में जा जा कर, सारे इस्राईल
से साल — ब — साल अपने ख़ुदा के घर की मरम्मत के लिए
रुपये जमा' किया करो, और इस काम में तुम जल्दी करना। तो
भी लावियों ने कुछ जल्दी न की।
6 तब बादशाह ने यहूयदा सरदार को बुलाकर उससे कहा कि तू
ने लावियों से क्यूँ तकाज़ा नहीं किया कि वह शहादत के ख़ेमे के
लिए, यहूदाह और येरूशलेम से ख़ुदावन्द के बन्दे और इस्राईल
की जमा'अत के ख़ादिम मूसा का महसूल लाया करें?
7 क्यूँकि उस शरीर 'औरत 'अतलियाह के बेटों ने ख़ुदा के घर में
छेद कर दिए थे, और ख़ुदावन्द के घर की सब पाक की हुई चीजें
भी उन्होंने बा'लीम को दे दी थीं।
8 तब बादशाह ने हुक्म दिया, और उन्होंने एक सन्दूक़ बना कर
उसे ख़ुदावन्द के घर के दरवाज़े के बाहर रखा;
9 और यहूदाह और येरूशलेम में 'ऐलान किया कि लोग वह
महसूल जिसे बन्दा — ए — ख़ुदा मूसा ने वीरान में इस्राईल पर
लगाया था, ख़ुदावन्द के लिए लाएँ।

10 और सब सरदार और सब लोग ख़ुश हुए, और लाकर उस
सन्दूक़ में डालते रहे जब तक पूरा न कर दिया।
11 जब सन्दूक़ लावियों के हाथ से बादशाह के मुख़्तारों के पास
पहुँचा, और उन्होंने देखा कि उसमें बहुत नक़दी है, तो बादशाह
के मुन्शी और सरदार काहिन के नाइब ने आकर सन्दूक़ को ख़ाली
किया और उसे लेकर फिर उसकी जगह पहुँचा दिया; और हर दिन
ऐसा ही कर के उन्होंने बहुत सी नकदी जमा' कर ली
12 फिर बादशाह और यहूयदा' ने उसे उनको दे दिया जो
ख़ुदावन्द के घर की इबादत के काम पर मुक़र्रर थे, और उन्होंने
पत्थर तराशों और बढ़इयों को ख़ुदावन्द के घर को बहाल करने के
लिए और लोहारों और ठठेरों को भी ख़ुदावन्द के घर की मरम्मत
के लिए मज़दूरी पर रखा।
13 इसलिए कारीगर लग गए और काम उनके हाथ से पूरा होता
गया, और उन्होंने ख़ुदा के घर को उसकी पहली हालत पर करके
उसे मज़बूत कर दिया।
14 और जब उसे पूरा कर चुके तो बाक़ी रुपया बादशाह और
यहूयदा' के पास ले आए, जिससे ख़ुदावन्द के घर के लिए बर्तन
या'नी ख़िदमत के और क़ुर्बानी पेश करने के बर्तन और चमचे
और सोने और चाँदी के बर्तन बने। और वह यहूयदा' के जीते जी
ख़ुदावन्द के घर में हमेशा सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ अदा करते रहे।
15 लेकिन यहूयदा' ने बुड्ढा और उम्र दराज़ होकर वफ़ात पाई;
और जब वह मरा तो एक सौ तीस साल का था।
16 और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में बादशाहों के साथ दफ़न
किया, क्यूँकि उसने इस्राईल में, और ख़ुदा और उसके घर की
ख़ातिर नेकी की थी।
17 यहूयदा' के मरने के बाद यहूदाह के सरदार आकर बादशाह
के सामने कोर्निश बजा लाए; तब बादशाह ने उनकी सुनी,

18 और वह ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा के घर को
छोड़ कर यसीरतों और बुतों की इबादत करने लगे। और उनकी
इस ख़ता की वजह से यहूदाह और येरूशलेम पर ग़ज़ब नाज़िल
हुआ।
19 तो भी ख़ुदावन्द ने नबियों को उनके पास भेजा ताकि उनको
उसकी तरफ़ फेर लाएँ, और वह उनको इल्ज़ाम देते रहे, पर
उन्होंने कान न लगाया।
20 तब ख़ुदा की रूह यहूयदा' काहिन के बेटे ज़करियाह पर
नाज़िल हुई, इसलिए वह लोगों से बुलन्द जगह पर खड़ा होकर
कहने लगा, ख़ुदा ऐसा फ़रमाता है कि "तुम क्यूँ ख़ुदावन्द के हुक्मों
से बाहर जाते हो कि ऐसे ख़ुशहाल नहीं रह सकते? चूँकि तुम ने
ख़ुदावन्द को छोड़ा है, उसने भी तुम को छोड़ दिया।"
21 तब उन्होंने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की, और बादशाह के
हुक्म से ख़ुदावन्द के घर के सहन में उसे पत्थराव कर दिया।
22 ऐसे यूआस बादशाह ने उसके बाप यहूयदा' के एहसान को
जो उसने उस पर किया था, याद न रखा बल्कि उसके बेटे को क़त्ल
किया। और मरते वक़्त उसने कहा, "ख़ुदावन्द इसको देखे, और
इन्तक़ाम ले।"
23 उसी साल के आख़िर में ऐसा हुआ कि अरामियों की फ़ौज
ने उस पर चढ़ाई की, और यहूदाह और येरूशलेम में आकर लोगों
में से क़ौम के सब सरदारों को हलाक किया और उनका सारा माल
लूटकर दमिश्क़ के बादशाह के पास भेज दिया।
24 अगरचे अरामियों के लश्कर से आदमियों का छोटा ही
जत्था आया, तोभी ख़ुदावन्द ने एक बहुत बड़ा लश्कर उनके हाथ
में कर दिया, इसलिए कि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के
ख़ुदा को छोड़ दिया था। इसलिए उन्होंने यूआस को उसके किए
का बदला दिया।
25 और जब वह उसके पास से लौट गए उन्होंने उसे बड़ी

बीमारियों में मुब्तला छोड़ा, तो उसी के मुलाज़िमों ने यहूयदा'
काहिन के बेटों के ख़ून की वजह से उसके ख़िलाफ़ साज़िश की और
उसे उसके बिस्तर पर क़त्ल किया, और वह मर गया; और उन्होंने
उसे दाऊद के शहर में तो दफ़न किया, लेकिन उसे बादशाहों की
क़ब्रों में दफ़न न किया।

26 उसके ख़िलाफ़ साज़िश करने वाले यह हैं: 'अम्मूनिया
समा'अत का बेटा ज़बद, और मो'आबिया सिमरियत का बेटा
यहूज़बद।

27 अब रहे उसके बेटे और वह बड़े बोझ जो उस पर रखे गए,
और ख़ुदा के घर का दोबारा बनाना; इसलिए देखो, यह सब कुछ
बादशाहों की किताब की तफ़सीर में लिखा है। और उसका बेटा
अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

25

[illegible]

1 अमसियाह पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा,
और उसने उनतीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का
नाम यहूअद्दान था, जो येरूशलेम की थी।

2 उसने वही किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में ठीक है, लेकिन
कामिल दिल से नहीं।

3 जब वह हुकूमत पर जम गया तो उसने अपने उन मुलाज़िमों
को, जिन्होंने उसके बाप बादशाह को मार डाला था क़त्ल किया,
4 लेकिन उनकी औलाद को जान से नहीं मारा बल्कि उसी के
मुताबिक़ किया जो मूसा की किताब तौरेत में लिखा है, जैसा
ख़ुदावन्द ने फ़रमाया कि बेटों के बदले बाप — दादा न मारे जाएँ,
और न बाप — दादा के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर आदमी
अपने ही गुनाह के लिए मारा जाए।

5 इसके 'अलावा अमसियाह ने यहूदाह को इकट्ठा किया, और
उनको उनके आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ तमाम मुल्क — ए —
यहूदाह और बिनयमीन में हज़ार हज़ार के सरदारों और सौ सौ के
सरदारों के नीचे ठहराया; और उनमें से जिनकी उम्र बीस साल या
उससे ऊपर थी उनको शुमार किया, और उनको तीन लाख चुने
हुए जवान पाया जो जंग में जाने के क़ाबिल और बर्छी और ढाल
से काम ले सकते थे।
6 और उसने सौ क़िन्तार चाँदी देकर इस्राईल में से एक लाख
ज़बरदस्त सूर्मा नौकर रखे।
7 लेकिन एक नबी ने उसके पास आकर कहा, "ऐ बादशाह,
इस्राईल की फ़ौज तेरे साथ जाने न पाए, क्यूँकि ख़ुदावन्द
इस्राईल या'नी सब बनी इफ़्राईम के साथ नहीं है।
8 लेकिन अगर तू जाना ही चाहता है तो जा और लड़ाई के लिए
मज़बूत हो, ख़ुदा तुझे दुश्मनों के आगे गिराएगा क्यूँकि ख़ुदा में
संभालनेऔर गिराने की ताक़त है।"
9 अमसियाह ने उस नबी से कहा, "लेकिन सौ क़िन्तारों के लिए
जो मैंने इस्राईल के लश्कर को दिए, हम क्या करें?" उस नबी ने
जवाब दिया, "ख़ुदावन्द तुझे इससे बहुत ज़्यादा दे सकता है।"
10 तब अमसियाह ने उस लश्कर को जो इफ़्राईम में से उसके
पास आया था जुदा किया, ताकि वह फिर अपने घर जाएँ। इस
वजह से उनका ग़ुस्सा यहूदाह पर बहुत भड़का, और वह बहुत
ग़ुस्से में घर को लौटे।
11 और अमसियाह ने हौसला बाँधा और अपने लोगों को लेकर
वादी — ए — शोर को गया, और बनी श'ईर में से दस हज़ार को
मार दिया;
12 और दस हज़ार को बनी यहूदाह ज़िन्दा पकड़ कर ले गए,
और उनको एक चट्टान की चोटी पर पहुँचाया और उस चट्टान की
चोटी पर से उनको नीचे गिरा दिया, ऐसा कि सब के सब टुकड़े

टुकड़े हो गए।

13 लेकिन उस लश्कर के लोग जिनको अमसियाह ने लौटा
दिया था कि उसके साथ जंग में न जाएँ, सामरिया से बैतहौरून
तक यहूदाह के शहरों पर टूट पड़े और उनमें से तीन हज़ार जवानों
को मार डाला और बहुत सी लूट ले गए।

14 जब अमसियाह अदोमियों के क़िताल से लौटा, तो बनी
श'ईर के मा'बूदों को लेता आया और उनको नस्ब किया ताकि
वह उसके मा'बूद हों, और उनके आगे सिज्दा किया और उनके
आगे ख़ुशबू जलाया।

15 इसलिए ख़ुदावन्द का ग़ज़ब अमसियाह पर भड़का और
उसने एक नबी को उसके पास भेजा, जिसने उससे कहा, "तू उन
लोगों के मा'बूदों का तालिब क्यूँ हुआ, जिन्होंने अपने ही लोगों
को तेरे हाथ से न छुड़ाया?"

16 वह उससे बातें कर ही रहा था कि उसने उससे कहा कि क्या
हम ने तुझे बादशाह का सलाहकार बनाया है? चुप रह, तू क्यूँ
मार खाए? तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया कि मैं जानता
हूँ कि ख़ुदा का इरादा यह है कि तुझे हलाक करे, इसलिए कि तू
ने यह किया है और मेरी सलाह नहीं मानी।

17 तब यहूदाह के बादशाह अमसियाह ने सलाह करके इस्राईल
के बादशाह यूआस बिन यहूआख़ज़ बिन याहू के पास कहला भेजा
कि ज़रा आ तो, हम एक दूसरे का मुक़ाबिला करें।

18 इसलिए इस्राईल के बादशाह यूआस ने यहूदाह के बादशाह
अमसियाह को कहला भेजा, कि लुबनान के ऊँट — कटारे ने
लुबनान के देवदार को पैग़ाम भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को
ब्याह दे; इतने में एक जंगली दरिंदा जो लुबनान में रहता था,
गुज़रा और उसने ऊँटकटारे को रौंद डाला।

19 तू कहता है, "देख मैंने अदोमियों को मारा, इसलिए तेरे

दिल में घमण्ड समाया है कि फ़ख़्र करे; घर ही में बैठा रह तू क्यूँ
अपने नुक़सान के लिए दस्तअन्दाज़ी करता है कि तू भी गिरे और
तेरे साथ यहूदाह भी?"
20 लेकिन अमसियाह ने न माना; क्यूँकि यह ख़ुदा की तरफ़ से
था कि वह उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दे, इसलिए कि वह
अदोमियों के मा'बूदों के तालिब हुए थे।
21 इसलिए इस्राईल का बादशाह यूआस चढ़ आया, और वह
और शाह — ए — यहूदाह अमसियाह यहूदाह के बैतशम्स में
एक दूसरे के मुक़ाबिल हुए।
22 और यहूदाह ने इस्राईल के मुक़ाबिले में शिकस्त खाई, और
उनमें से हर एक अपने डेरे को भागा।
23 और शाह — ए — इस्राईल यूआस ने शाह — ए — यहूदाह
अमसियाह बिन यूआस बिन यहूआख़ज़ को बैतशम्स में पकड़
लिया और उसे येरूशलेम में लाया, और येरूशलेम की दीवार
इफ़्राईम के फाटक से कोने के फाटक तक चार सौ हाथ ढा दी।
24 और सारे सोने और चाँदी और सब बर्तनों को जो 'ओबेद
अदोम के पास ख़ुदा के घर में मिले, और शाही महल के ख़ज़ानों
और कफ़ीलों को भी लेकर सामरिया को लौटा।
25 और शाह — ए — यहूदाह अमसियाह बिन यूआस, शाह
— ए — इस्राईल यूआस बिन यहूआख़ज़ के मरने के बाद पंद्रह
साल ज़िन्दा रहा।
26 अमसियाह के बाक़ी काम शुरू' से आख़िर तक, क्या वह
यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में क़लमबन्द नहीं
हैं?
27 जब से अमसियाह ख़ुदावन्द की पैरवी से फिरा, तब ही से
येरूशलेम के लोगों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की, इसलिए वह
लकीस को भाग गया। लेकिन उन्होंने लकीस में उसके पीछे लोग
भेजकर उसे वहाँ क़त्ल किया।

28 और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और यहूदाह के शहर में
उसके बाप — दादा के साथ उसे दफ़्न किया।

26

'[illegible]

1 तब यहूदाह के सब लोगों ने 'उज़्ज़ियाह को जो सोलह साल
का था, लेकर उसे उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह
बनाया।

2 उसने बादशाह के अपने बाप — दादा के साथ सो जाने के
बाद ऐलोत को ता'मीर किया और उसे फिर यहूदाह में शामिल
कर दिया।

3 'उज़्ज़ियाह सोलह साल का था जब वह हुकूमत करने लगा,
और उसने येरूशलेम में बावन साल हुकूमत की। उसकी माँ का
नाम यकूलियाह था, जो येरूशलेम की थी।

4 उसने वही जो ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक उसी के
मुताबिक़ किया जो उसके बाप अमसियाह ने किया था।

5 और वह ज़करियाह के दिनों में जो ख़ुदा के ख़्वाबो में माहिर
था, ख़ुदा का तालिब रहा और जब तक वह ख़ुदावन्द का तालिब
रहा ख़ुदा ने उसे कामयाब रखा।

6 और वह निकला और फ़िलिस्तियों से लड़ा, और जात की
दीवार को और यबना की दीवार को और अशदूद की दीवार को
ढा दिया, और अशदूद के मुल्क में और फ़िलिस्तियों के बीच शहर
ता'मीर किए।

7 और ख़ुदा ने फ़िलिस्तियों और जूरबाल के रहने वाले 'अरबों
और मऊनियों के मुक़ाबिले में उसकी मदद की।

8 और 'अम्मूनी 'उज़्ज़ियाह को नज़राने देने लगे और उसका
नाम मिस्र की सरहद तक फैल गया, क्यूँकि वह बहुत ताक़तवर
हो गया था।

9 और उज़्ज़ियाह ने येरूशलेम में कोने के फाटक और वादी के
फाटक और दीवार के मोड़ पर बुर्ज बनवाए और उनको मज़बूत
किया।
10 और उसने वीरान में बुर्ज बनवाए और बहुत से हौज़
खुदवाए, क्यूँकि नशेब की ज़मीन में भी और मैदान में उसके बहुत
चौपाए थे। और पहाड़ों और ज़रखेज़ खेतों में उसके किसान और
ताकिस्तानों के माली थे, क्यूँकि काश्त कारी उसे बहुत पसंद थी।
11 इसके 'अलावा उज़्ज़ियाह के पास जंगी जवानों का लश्कर
था जो य'ईएल मुन्शी और मासियाह नाज़िम के शुमार के
मुताबिक़, ग़ोल ग़ोल होकर बादशाह के एक सरदार हनानियाह
के मातहत लड़ाई पर जाता था।
12 और आबाई ख़ान्दानों के सरदारों या'नी ज़बरदस्त सूर्माओं
का कुल शुमार दो हज़ार छ: सौ था।
13 और उनके मातहत तीन लाख साढ़े सात हज़ार का ज़बरदस्त
लश्कर था, जो दुश्मन के मुक़ाबिले में बादशाह की मदद करने को
बड़े ज़ोर से लड़ता था।
14 और उज़्ज़ियाह ने उनके लिए या'नी सारे लश्कर के लिए
ढालें और बर्छे और ख़ूद और बकतर और कमानें और फ़लाख़न के
लिए पत्थर तैयार किए
15 और उसने येरूशलेम में हुनरमंद लोगों की ईजाद की हुई
कीलें बनवायीं ताकि वह तीर चलाने और बड़े बड़े पत्थर फेंकने
के लिए बुर्जों और फ़सीलों पर हों। इसलिए उसका नाम दूर तक
फ़ैल गया क्यूँकि उसकी मदद ऐसी 'अजीब तरह से हुई कि वह
ताक़तवर हो गया
16 लेकिन जब वह ताक़तवर हो गया, तो उसका दिल इस क़दर
फूल गया कि वह ख़राब हो गया और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की
नाफ़रमानी करने लगा; चुनाँचे वह ख़ुदावन्द की हैकल में गया
ताकि ख़ुशबू की क़ुर्बानगाह पर ख़ुशबू जलाए।

17 तब 'अज़्ज़रियाह काहिन उसके पीछे पीछे गया और उसके
साथ ख़ुदावन्द के अस्सी काहिन और थे जो बहादुर आदमी थे,
18 और उन्होंने 'उज़्ज़ियाह बादशाह का सामना किया और
उससे कहने लगे, “ऐ 'उज़्ज़ियाह, ख़ुदावन्द के लिए ख़ुशबू
जलाना तेरा काम नहीं, बल्कि काहिनों या'नी हारून के बेटों का
काम है, जो ख़ुशबू जलाने के लिए पाक किए गए हैं। इसलिए
मक़दिस से बाहर जा, क्यूँकि तू ने ख़ता की है, और ख़ुदावन्द
ख़ुदा की तरफ़ से यह तेरी 'इज़्ज़त का ज़रिया' न होगा।”
19 तब 'उज़्ज़ियाह ग़ुस्सा हुआ, और ख़ुशबू जलाने को
बख़ूरदान अपने हाथ में लिए हुए था; और जब वह काहिनों पर
झुंझला रहा था, तो काहिनों के सामने ही ख़ुदावन्द के घर के
अन्दर ख़ुशबू की क़ुर्बानगाह के पास उसकी पेशानी पर कोढ़ फूट
निकला।
20 और सरदार काहिन 'अज़रियाह और सब काहिनों ने उस पर
नज़र की और क्या देखा कि उसकी पेशानी पर कोढ़ निकला है।
इसलिए उन्होंने उसे जल्द वहाँ से निकाला, बल्कि उसने ख़ुद भी
बाहर जाने में जल्दी की क्यूँकि ख़ुदावन्द की मार उस पर पड़ी
थी।
21 चुनाँचे 'उज़्ज़ियाह बादशाह अपने मरने के दिन तक कोढ़ी
रहा, और कोढ़ी होने की वजह से एक अलग घर में रहता था;
क्यूँकि वह ख़ुदावन्द के घर से काट डाला गया था। और उसका
बेटा यूताम बादशाह के घर का मुख़्तार था और मुल्क के लोगों
का इन्साफ़ करता था।
22 और 'उज़्ज़ियाह के बाक़ी काम शुरू' से आख़िर तक आमूस
के बेटे यसायाह नबी ने लिखे।
23 इसलिए 'उज़्ज़ियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया;
और उन्होंने क़ब्रिस्तान के मैदान में जो बादशाहों का था, उसके
बाप — दादा के साथ उसे दफ़न किया क्यूँकि वह कहने लगे, “वह
कोढ़ी है।” और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ।

27

[illegible]

1 यूताम पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और
उसने सोलह साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम
यरूसा था जो सदोक़ की बेटी थी।
2 और उसने वही जो ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक
ऐसा ही किया जैसा उसके बाप उज़्ज़ियाह ने किया था, मगर वह
ख़ुदावन्द की हैकल में न घुसा, लेकिन लोग गुनाह करते ही रहे।
3 और उसने ख़ुदावन्द के घर का बालाई दरवाज़ा बनाया, और
ओफ़ल की दीवार पर उसने बहुत कुछ ता'मीर किया।
4 और यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में उसने शहर ता'मीर किए, और
जंगलों में क़िले' और बुर्ज बनवाए।
5 वह बनी 'अम्मून के बादशाह से भी लड़ा और उन पर ग़ालिब
हुआ। और उसी साल बनी 'अम्मून ने एक सौ क़िन्तार चाँदी और
दस हज़ार कुर गेहूँ और दस हज़ार कुर जौ उसे दिए, और उतना
ही बनी 'अम्मून ने दूसरे और तीसरे साल भी उसे दिया।
6 इसलिए यूताम ज़बरदस्त हो गया, क्यूँकि उसने ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के आगे अपने रास्ते दुरुस्त किए थे।
7 और यूताम के बाक़ी काम और उसकी सब लड़ाईयां और
उसके तौर तरीक़े इस्राईल और यहूदाह के बादशाहों की किताब
में लिखा हैं।
8 वह पच्चीस साल का था जब हुकूमत करने लगा और उसने
सोलह साल येरूशलेम में हुकूमत की।
9 और यूताम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने
उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आख़ज़
उसकी जगह बादशाह हुआ।

28

□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□

1 आख़ज़ बीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने सोलह साल येरूशलेम में हुकूमत की। और उसने वह न किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है जैसा उसके बाप दाऊद ने किया था
2 बल्कि इस्राईल के बादशाहों के रास्तों पर चला, और बा'लीम की ढाली हुई मूरतें भी बनवाई।
3 इसके 'अलावा उसने हिनूम के बेटे की वादी में ख़ुशबू जलाया, और उन क़ौमों के नफ़रती दस्तूरों के मुताबिक़ जिनको ख़ुदावन्द ने बनी — इस्राईल के सामने से ख़ारिज किया था, अपने ही बेटों को आग में झोंका।
4 उसने ऊँचे मक़ामों और पहाड़ों पर, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे क़ुर्बानियाँ कीं और ख़ुशबू जलायी।
5 इसलिए ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा ने उसको शाह — ए — अराम के हाथ में कर दिया, इसलिए उन्होंने उसे मारा और उसके लोगों में से ग़ुलामों की भीड़ की भीड़ ले गए, और उनको दमिश्क़ में लाए; और वह शाह — ए — इस्राईल के हाथ में भी कर दिया गया, जिसने उसे मारा और बड़ी ख़ूनरेज़ी की।
6 और फ़िक़ह बिन रमलियाह ने एक ही दिन में यहूदाह में से एक लाख बीस हज़ार को, जो सब के सब सूर्मा थे क़त्ल किया, क्यूँकि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा को छोड़ दिया था।
7 और ज़िकरी ने जो इफ़्राईम का एक पहलवान था, मासियाह शाहज़ादे को और महल के नाज़िम 'अज़रिक़ाम को और बादशाह के वज़ीर इल्क़ाना को मार डाला।
8 और बनी — इस्राईल अपने भाइयों में से दो लाख 'औरतों और बेटे — बेटियों को ग़ुलाम करके ले गए, और उनका बहुत सा माल लूट लिया और लूट को सामरिया में लाए।

9 लेकिन वहाँ ख़ुदावन्द का एक नबी था जिसका नाम 'ओदिद
था, वह उस लश्कर के इस्तक़बाल को गया जो सामरिया को
आ रहा था और उनसे कहने लगा, "देखो, इसलिए कि ख़ुदावन्द
तुम्हारे बाप — दादा का ख़ुदा यहूदाह से नाराज़ था, उसने उनको
तुम्हारे हाथ में कर दिया और तुम ने उनको ऐसे तैश में क़त्ल किया
है जो आसमान तक पहुँचा।
10 और अब तुम्हारा 'इरादा है कि बनी यहूदाह और येरूशलेम
को अपने ग़ुलाम और लौंडियाँ बना कर उनको दबाए रखो।
लेकिन क्या तुम्हारे ही गुनाह जो तुमने ख़ुदा वन्द अपने ख़ुदा
के ख़िलाफ़ किए हैं, तुम्हारे सिर नहीं हैं?
11 इसलिए तुम अब मेरी सुनो और उन ग़ुलामों को, जिनको
तुम ने अपने भाइयों में से ग़ुलाम कर लिया है, आज़ाद करके
लौटा दो क्यूँकि ख़ुदावन्द का क़हर — ए — शदीद तुम पर है।"
12 तब बनी इफ़्राईम के सरदारों में से 'अज़रियाह बिन यूहनान
और बरकियाह बिन मसल्लीमोत और यहज़क़ियाह बिन सलूम
और 'अमासा बिन ख़दली, उनके सामने जो जंग से आ रहे थे खड़े
हो गए
13 और उनसे कहा कि "तुम ग़ुलामों को यहाँ नहीं लाने पाओगे,
क्यूँकि जो तुम ने ठाना है उससे हम ख़ुदावन्द के गुनाहगार बनेंगे
और हमारे गुनाह और खताएं बढ़ जायेंगी क्यूँकि हमारी ख़ता
बड़ी है और इस्राईल पर क़हर — ए — शदीद है।
14 इसलिए उन हथियारबन्द लोगों ने ग़ुलामों और माल — ए
— ग़नीमत को, अमीरों और सारी जमा'अत के आगे छोड़ दिया।
15 और वह आदमी जिनके नाम मज़कूर हुए, उठे और ग़ुलामों
को लिया और लूट के माल में से उन सभों को जो उनमें नंगे थे,
लिबास से आरास्ता किया और उनको जूते पहनाए और उनको
खाने — पीने को दिया और उन पर तेल मला, और जितने उनमें
कमज़ोर थे उनको गधों पर चढ़ा कर खजूर के दरख़्तों के शहर

यरीहू में उनके भाइयों के पास पहुँचा दिया। तब सामरिया को
लौट गए।
16 उस वक़्त आख़ज़ बादशाह ने असूर के बादशाहों के पास
कहला भेजा के उसकी मदद करें।
17 इसलिए कि अदोमियों ने फिर चढ़ाई करके यहूदाह को मार
लिया और ग़ुलामों को ले गए थे।
18 और फ़िलिस्तियों ने भी नशेब की ज़मीन के और यहूदाह के
जुनूब के शहरों पर हमला करके बैतशम्स और अय्यालोन और
जदीरोत को, और शोको और उसके देहात को, और तिमना और
उसके देहात को, और जिमसू और उसके देहात को भी ले लिया
था और उनमें बस गए थे।
19 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने शाह — ए — इस्राईल आख़ज़ की वजह
से यहूदाह को पस्त किया, इसलिए कि उसने यहूदाह में बेहयाई
की चाल चलकर ख़ुदावन्द का बड़ा गुनाह किया था;
20 और शाह — ए — असूर तिलगातपिलनासर उसके पास
आया, लेकिन उसने उसको तंग किया और उसकी मदद न की।
21 क्यूँकि आख़ज़ ने ख़ुदावन्द के घर और बादशाह और सरदारों
के महलों से माल लेकर शाह — ए — असूर को दिया, तो भी
उसकी कुछ मदद न हुई।
22 अपनी तंगी के वक़्त में भी उसने, या'नी इसी आख़ज़
बादशाह ने ख़ुदावन्द का और भी ज़्यादा गुनाह किया;
23 क्यूँकि उसने दमिश्क़ के मा'बूदों के लिए जिन्होंने उसे मारा
था, क़ुर्बानियाँ कीं और कहा, चूँकि अराम के बादशाहों के मा'बूदों
ने उनकी मदद की है, इसलिए मैं उनके लिए क़ुर्बानी करूंगा ताकि
वह मेरी मदद करें।" लेकिन वह उसकी और सारे इस्राईल की
तबाही की वजह हुए।
24 और आख़ज़ ने ख़ुदा के घर के बर्तनों को जमा' किया और
ख़ुदा के घर के बर्तनों को टुकड़े टुकड़े किया और ख़ुदावन्द के घर

के दरवाज़ों को बन्द किया और अपने लिए येरूशलेम के हर कोने
में मज़बहे बनाए।
25 और यहूदाह के एक एक शहर में ग़ैर — मा'बूदों के आगे
ख़ुशबू जलाने के लिए ऊँचे मक़ाम बनाए, और ख़ुदावन्द अपने
बाप — दादा के ख़ुदा को ग़ुस्सा दिलाया।
26 और उसके बाक़ी काम और उसके सब तौर तरीक़े शुरू' से
आख़िर तक यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में
लिखा हैं।
27 और आख़ज़ अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उन्होंने उसे शहर में या'नी येरूशलेम में दफ़्न किया क्यूँकि वह
उसे इस्राईल के बादशाहों की क़ब्रों में न लाए और उसका बेटा
हिज़क़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

29

[illegible]

1 हिज़क़ियाह पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा,
और उसने उन्तीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का
नाम अबियाह था, जो ज़करियाह की बेटी थी।
2 उसने वही काम जो ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक उसी
के मुताबिक़ जो उसके बाप — दादा ने किया था, किया।

[illegible]

3 उसने अपनी हुकूमत के पहले साल के पहले महीने में,
ख़ुदावन्द के घर के दरवाज़ों को खोला और उनकी मरम्मत की।
4 और वह काहिनों और लावियों को ले आया और उनको
मशरिक़ की तरफ़ मैदान में इकट्ठा किया,
5 और उनसे कहा, ऐ लावियो, मेरी सुनो! तुम अब अपने को
पाक करो और ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा के घर को

पाक करो, और इस पाक मक़ाम में से सारी नापाकी को निकाल
डालो;
6 क्यूँकि हमारे बाप — दादा ने गुनाह किया और जो ख़ुदावन्द
हमारे ख़ुदा की नज़र में बुरा है वही किया, और ख़ुदा को छोड़
दिया और ख़ुदावन्द के घर से मुँह फेर लिया और अपनी पीठ
उसकी तरफ़ कर दी
7 और उसारे के दरवाज़ों को भी बन्द कर दिया, और चिराग़
बुझा दिए, और इस्राईल के ख़ुदा के मक़दिस में न तो ख़ुशबू
जलायी और न सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं
8 इस वजह से ख़ुदावन्द का क़हर यहूदाह और येरूशलेम पर
नाज़िल हुआ, और उसने उनको ऐसा हवाले किया कि मारे मारे
फिरें और हैरत और सुसकार का ज़रिए' हों, जैसा तुम अपनी
आँखों से देखते हो।
9 देखो, इसी वजह से हमारे बाप — दादा तलवार से मारे गए,
और हमारे बेटे बेटियाँ और हमारी बीवियाँ ग़ुलामी में हैं।
10 अब मेरे दिल में है कि ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के साथ
'अहद बाँधूं, ताकि उसका क़हर — ए — शदीद हम पर से टल
जाए।
11 ऐ मेरे फ़र्ज़न्दो, तुम अब ग़ाफ़िल न रहो; क्यूँकि ख़ुदावन्द
ने तुम को चुन लिया है कि उसके सामने खड़े रहो और उसकी
ख़िदमत करो और उसके ख़ादिम बनो और ख़ुशबू जलाओ।
12 तब यह लावी उठे:या'नी बनी क़िहात में से महत बिन
'अमासी और यूएल बिन 'अज़रियाह, और बनी मिरारी में से क़ीस
बिन 'अबदी और अज़रियाह बिन यहलीएल और जैरसोनियों में
से यूआख़ बिन ज़िम्मा और अदन बिन यूआख़,
13 और बनी इलिसफ़न में से सिमरी और य'ऊएल, और बनी
आसफ़ में से ज़करियाह और मत्तनियाह,
14 और बनी हैमान में से यहीएल और सिमई, और बनी यदूतून
में से समा'याह और 'उज़िएल।

15 और उन्होंने अपने भाइयों को इकट्ठा करके अपने को पाक
किया, और बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ जो ख़ुदावन्द के कलाम
के मुताबिक़ था, ख़ुदावन्द के घर को पाक करने के लिए अन्दर
गए।
16 और काहिन ख़ुदावन्द के घर के अन्दरूनी हिस्से में उसे
पाक — साफ़ करने को दाख़िल हुए, और सारी नापाकी को जो
ख़ुदावन्द की हैकल में उनको मिली निकाल कर बाहर ख़ुदावन्द
के घर के सहन में ले आए, और लावियों ने उसे उठा लिया ताकि
उसे बाहर क़िद्रून के नाले में पहुँचा दें।
17 पहले महीने की पहली तारीख़ को उन्होंने तक़्दीस का काम
शुरू किया, और उस महीने की आठवीं तारीख़ को ख़ुदावन्द के
उसारे तक पहुँचे, और उन्होंने आठ दिन में ख़ुदावन्द के घर को
पाक किया; इसलिए पहले महीने की सोलहवीं तारीख़ को उसे
पूरा किया।
18 तब उन्होंने महल के अन्दर हिज़क़ियाह बादशाह के पास
जाकर कहा कि “हमने ख़ुदावन्द के सारे घर को, और सोख़्तनी
क़ुर्बानी के मज़बह को और उसके सब बर्तन को, और नज़्र की
रोटियों की मेज़ को और उसके सब बर्तन को पाक — साफ़ कर
दिया।
19 इसके 'अलावा हम ने उन सब बर्तन को जिनकी आख़ज़
बादशाह ने अपने दौर — ए — हुकूमत में ख़ता करके रद्द कर
दिया था, फिर तैयार करके उनको पाक किया है, और देख, वह
ख़ुदावन्द के मज़बह के सामने हैं।”
20 तब हिज़क़ियाह बादशाह सवेरे उठकर और शहर के रईसों
को इकट्ठा करके ख़ुदावन्द के घर को गया।
21 और वह सात बैल और सात मेंढे, और सात बर्रे और सात
बकरे मुल्क के लिए और मक़दिस के लिए और यहूदाह के लिए
ख़ता की क़ुर्बानी के लिए ले आए, और उसने काहिनों या'नी बनी

हारून को हुक्म किया के उनको ख़ुदावन्द के मज़बह पर चढ़ाएँ।
22 इसलिए उन्होंने बैलों को ज़बह किया और काहिनों ने ख़ून
को लेकर उसे मज़बह पर छिड़का, फिर उन्होंने मेंढों को ज़बह
किया और ख़ून को मज़बह पर छिड़का, और बर्रों को भी ज़बह
किया और ख़ून मज़बह पर छिड़का।
23 और वह ख़ता की क़ुर्बानी के बकरों को बादशाह और
जमा'अत के आगे नज़दीक ले आए और उन्होंने अपने हाथ उन
पर रखे।
24 फिर काहिनों ने उनको ज़बह किया और उनके ख़ून को
मज़बह पर छिड़क कर ख़ता की क़ुर्बानी की, ताकि सारे इस्राईल
के लिए कफ़्फ़ारा हो; क्यूँकि बादशाह ने फ़रमाया था कि सोख़्तनी
क़ुर्बानी और ख़ता की क़ुर्बानी सारे इस्राईल के लिए पेश की जाएँ।
25 और उसने दाऊद और बादशाह के ग़ैबबीन जद्द और नातन
नबी के हुक्म के मुताबिक़ ख़ुदावन्द के घर में लावियों को झाँझ
और सितार और बरबत के साथ मुक़र्रर किया, क्यूँकि यह नबियों
के ज़रिए' ख़ुदावन्द का हुक्म था।
26 और लावी दाऊद ने बाजों को और काहिन नरसिंगों को
लेकर खड़े हुए,
27 और हिज़क़ियाह ने मज़बह पर सोख़्तनी क़ुर्बानी अदा करने
का हुक्म दिया, और जब सोख़तनी क़ुर्बानी शुरू' हुई तो ख़ुदावन्द
का हम्द भी नरसिंगों और शाह — ए — इस्राईल दाऊद ने बाजों
के साथ शुरू' हुआ,
28 और सारी जमा'अत ने सिज्दा किया, और गानेवाले गाने
और नरसिंगे वाले नरसिंगे फूंकने लगे। जब तक सोख़्तनी क़ुर्बानी
जल न चुकी, यह सब होता रहा;
29 और जब वह क़ुर्बानी अदा कर चुके, तो बादशाह और उसके
साथ सब हाज़रीन ने झुक कर सिज्दा किया।
30 फिर हिज़क़ियाह बादशाह और रईसों ने लावियों को हुक्म

किया कि दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के हम्द गाकर ख़ुदावन्द की
हम्द करें; और उन्होंने ख़ुशी से बड़ाई की और सिर झुकाए और
सिज्दा किया।
31 और हिज़क़ियाह कहने लगा, “अब तुम ने अपने आपको
ख़ुदावन्द के लिए पाक कर लिया है। इसलिए नज़दीक आओ,
और ख़ुदावन्द के घर में ज़बीहे और शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ
लाओ।” तब जमा'अत ज़बीहे और शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ
लाई, और जितने दिल से राज़ी थे सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ लाए।
32 और सोख़्तनी क़ुर्बानियों का शुमार जो जमा'अत लाई यह
था: सत्तर बैल और सौ मेंढे और दो सौ बर्रे, यह सब ख़ुदावन्द की
सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए थे।
33 और पाक किए हुए जानवर यह थे: छः सौ बैल और तीन
हज़ार भेड़ — बकरियाँ।
34 मगर काहिन ऐसे थोड़े थे कि वह सारी सोख़्तनी क़ुर्बानी
के जानवरों की खालें उतार न सके, इसलिए उनके भाई लावियों
ने उनकी मदद की जब तक काम पूरा न हो गया; और काहिनों
ने अपने को पाक न कर लिया, क्यूँकि लावी अपने आपको पाक
करने में काहिनों से ज़्यादा सच्चे दिल थे।
35 और सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ भी कसरत से थीं, और उनके साथ
सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी और सोख़्तनी क़ुर्बानियों के
तपावन थे। यूँ ख़ुदावन्द के घर की ख़िदमत की तरतीब दुरुस्त
हुई।
36 और हिज़क़ियाह और सब लोग उस काम की वजह से, जो
ख़ुदा ने लोगों के लिए तैयार किया था, बाग़ बाग़ हुए क्यूँकि वह
काम यकबारगी किया गया था।

30

1 और हिज़क़ियाह ने सारे इस्राईल और यहूदाह को कहला
भेजा, और इफ़्राईम और मनस्सी के पास भी ख़त लिख भेजे कि
वह ख़ुदावन्द के घर में येरूशलेम को, ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा
के लिए 'ईद — ए — फ़सह करने को आएँ;
2 क्यूँकि बादशाह और सरदारों और येरूशलेम की सारी
जमा'अत ने दूसरे महीने में 'ईद — ए — फ़सह मनाने की सलाह
कर लिया था।
3 क्यूँकि वह उस वक़्त उसे इसलिए नहीं मना सके कि काहिनों
ने काफ़ी ता'दाद में अपने आपको पाक नहीं किया था, और लोग
भी येरूशलेम में इकट्ठे नहीं हुए थे।
4 यह बात बादशाह और सारी जमा'अत की नज़र में अच्छी
थी।
5 इसलिए उन्होंने हुक्म जारी किया कि बैरसबा' से दान तक
सारे इस्राईल में 'ऐलान किया जाए कि लोग येरूशलेम में आकर
ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के लिए 'ईद — ए — फ़सह करें, क्यूँकि
उन्होंने ऐसी बड़ी तादाद में उसको नहीं मनाया था जैसे लिखा है।
6 इसलिए बादशाह के क़ासिद और उसके सरदारों से ख़त लेकर
बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ सारे इस्राईल और यहूदाह में फिरे,
और कहते गए, "ऐ बनी — इस्राईल! अब्रहाम और इस्हाक़ और
इस्राईल के ख़ुदावन्द ख़ुदा की तरफ़ दोबारा फिर जाओ, ताकि
वह तुम्हारे बाक़ी लोगों की तरफ़ जो असूर के बादशाहों के हाथ
से बच रहे हैं, फिर मुतवज्जिह हों।
7 और तुम अपने बाप — दादा और अपने भाइयों की तरह मत
हो, जिन्होंने ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा की नाफ़रमानी
की, यहाँ तक कि उसने उनको छोड़ दिया कि बर्बाद हो जाएँ, जैसा
तुम देखते हो।
8 तब तुम अपने बाप — दादा की तरह मग़रूर न बनो, बल्कि
ख़ुदावन्द के ताबे' हो जाओ और उसके मक़दिस में आओ, जिसे

उसने हमेशा के लिए पाक किया है, और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की
इबादत करो ताकि उसका क़हर — ए — शदीद तुम पर से टल
जाए।
9 क्यूँकि अगर तुम ख़ुदावन्द की तरफ़ दोबारा मुड़ो, तो तुम्हारे
भाई और तुम्हारे बेटे अपने ग़ुलाम करने वालों की नज़र में
क़ाबिल — ए — रहम ठहरेंगे और इस मुल्क में फिर आएँगे,
क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा ग़फ़ूर — ओ — रहीम है, और
अगर तुम उसकी तरफ़ फिरो तो वह तुम से अपना मुँह फेर न
लेगा।"
10 इसलिए क़ासिद इफ़्राईम और मनस्सी के मुल्क में शहर —
ब — शहर होते हुए ज़बूलून तक गए, पर उन्होंने उनका मज़ाक़
किया और उनको ठट्ठों में उड़ाया।
11 फिर भी आशर और मनस्सी और ज़बूलून में से कुछ लोगों
ने फ़िरोतनी की और येरूशलेम को आए।
12 और यहूदाह पर भी ख़ुदावन्द का हाथ था कि उनको यकदिल
बना दे, ताकि वह ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बादशाह और
सरदारों के हुक्म पर 'अमल करें।
13 इसलिए बहुत से लोग येरूशलेम में जमा' हुए कि दूसरे
महीने में फ़तीरी रोटी की 'ईद करें; यूँ बहुत बड़ी जमा'अत हो
गई।
14 वह उठे और उन मज़बहों को जो येरूशलेम में थे और ख़ुशबू
की सब क़ुर्बानगाहों को दूर किया, और उनकी क़िद्रून न के नाले
में डाल दिया।
15 फिर दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख़ को उन्होंने फ़सह को
ज़बह किया, और काहिनों और लावियों ने शर्मिन्दा होकर अपने
आपको पाक किया और ख़ुदावन्द के घर में सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ
लाए।
16 वह अपने दस्तूर पर मर्द — ए — ख़ुदा मूसा की शरी'अत के
मुताबिक़ अपनी अपनी जगह खड़े हुए, और काहिनों ने लावियों

के हाथ से ख़ून लेकर छिड़का।
17 क्यूँकि जमा'अत में बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने
आपको पाक नहीं किया था, इसलिए यह काम लावियों के सुपुर्द
हुआ कि वह सब नापाक शख़्सों के लिए फ़सह के बर्रों को ज़बह
करें, ताकि वह ख़ुदावन्द के लिए पाक हों।
18 क्यूँकि इफ़्राईम और मनस्सी और इश्कार और ज़बूलून में
से बहुत से लोगों ने अपने आपको पाक नहीं किया था, तो भी
उन्होंने फ़सह को जिस तरह लिखा है उस तरह से न खाया, क्यूँकि
हिज़क़ियाह ने उनके लिए यह दुआ की थी, कि ख़ुदावन्द जो नेक
है, हर एक को
19 जिसने ख़ुदावन्द ख़ुदा अपने बाप — दादा के ख़ुदा की तलब
में दिल लगाया है मु'आफ़ करे, अगर वह मक़दिस की तहारत के
मुताबिक़ पाक न हुआ हो।
20 और ख़ुदावन्द ने हिज़क़ियाह की सुनी और लोगों को शिफ़ा
दी।
21 और जो बनी — इस्राईल येरूशलेम में हाज़िर थे, उन्होंने
बड़ी ख़ुशी से सात दिन तक 'ईद — ए — फ़तीर मनाई, और लावी
और काहिन बलन्द आवाज़ के बाजों के साथ ख़ुदावन्द के सामने
गा गाकर हर दिन ख़ुदावन्द की हम्द करते रहे।
22 और हिज़क़ियाह ने सब लावियों से जो ख़ुदावन्द की
ख़िदमत में माहिर थे, तसल्लीबख़्श बातें कीं। इसलिए वह 'ईद के
सातों दिन तक खाते और सलामती के ज़बीहों की क़ुर्बानियाँ पेश
करते और ख़ुदावन्द अपने बाप दादा के ख़ुदा के सामने इक़रार
करते रहे।
23 फिर सारी जमा'अत ने और सात दिन मानने की सलाह की,
और ख़ुशी से और सात दिन माने।
24 क्यूँकि शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह ने जमा'अत को
क़ुर्बानियों के लिए एक हज़ार बछड़े और सात हज़ार भेड़ें 'इनायत

कीं, और सरदारों ने जमा'अत को एक हज़ार बछड़े और दस हज़ार भेड़ें दीं, और बहुत से काहिनों ने अपने आपको पाक किया।
25 और यहूदाह की सारी जमा'अत ने काहिनों और लावियों
समेत और उस सारी जमा'अत ने जो इस्राईल में से आई थी, और उन परदेसियों ने जो इस्राईल के मुल्क से आए थे, और जो यहूदाह में रहते थे ख़ुशी मनाई।
26 इसलिए येरूशलेम में बड़ी ख़ुशी हुई, क्यूँकि शाह — ए —
इस्राईल सुलेमान बिन दाऊद के ज़माने से येरूशलेम में ऐसा नहीं हुआ था।
27 तब लावी काहिनों ने उठ कर लोगों को बरकत दी, और
उनकी सुनी गई, और उनकी दुआ उसके पाक मकान, आसमान तक पहुँची।

31

[illegible]

1 जब यह हो चुका तो सब इस्राईली जो हाज़िर थे, यहूदाह के
शहरों में गए और सारे यहूदाह और बिनयमीन के बल्कि इफ़्राईम और मनस्सी के भी सुतूनों को टुकड़े — टुकड़े किया, और यसीरतों को काट डाला, और ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को ढा दिया; यहाँ तक कि उन सभों को मिटा दिया। तब सब बनी — इस्राईल अपने अपने शहर में अपनी अपनी मिल्कियत को लौट गए।
2 और हिज़क़ियाह ने काहिनों के फ़रीक़ों को और लावियों
को उनके फ़रीक़ों के मुताबिक़, या'नी काहिनों और लावियों दोनों के हर शख़्स को उसकी ख़िदमत के मुताबिक़ ख़ुदावन्द की ख़ेमागाह के फाटकों के अन्दर सोख़्तनी क़ुर्बानियों और सलामती की क़ुर्बानियों के लिए, और इबादत और शुक्रगुज़ारी और ता'रीफ़ करने के लिए मुक़र्रर किया।

3 उसने अपने माल में से बादशाही हिस्सा सोख़्तनी क़ुर्बानियों
के लिए, या'नी सुबह — ओ — शाम की सोख़्तनी क़ुर्बानियों के
लिए, और सब्तों और नए चाँदों और मुक़र्ररा 'ईदों की सोख़्तनी
क़ुर्बानियों के लिए ठहराया, जैसा ख़ुदावन्द की शरी'अत में लिखा
है।
4 और उसने उन लोगों को जो येरूशलेम में रहते थे, हुक्म किया
कि काहिनों और लावियों का हिस्सा दें ताकि वह ख़ुदावन्द की
शरी'अत में लगे रहें।
5 इस फ़रमान के जारी होते ही बनी — इस्राईल अनाज और
मय और तेल और शहद और खेत की सब पैदावार के पहले फल
बहुतायत से देने, और सब चीज़ों का दसवाँ हिस्सा कसरत से लाने
लगे।
6 और बनी — इस्राईल और यहूदाह जो यहूदाह के शहरों में
रहते थे, वह भी बैलों और भेड़ बकरियों का दसवाँ हिस्सा, और
उन पाक चीज़ों का दसवाँ हिस्सा जो ख़ुदावन्द उनके ख़ुदा के लिए
पाक की गई थीं, लाए और उनको ढेर ढेर करके लगा दिया।
7 उन्होंने तीसरे महीने में ढेर लगाना शुरू' किया और सातवें
महीने में पूरा किया।
8 जब हिज़क़ियाह और सरदारों ने आकर ढेरों को देखा, तो
ख़ुदावन्द को और उसकी क़ौम इस्राईल को मुबारक कहा।
9 और हिज़क़ियाह ने काहिनों और लावियों से उन ढेरों के बारे
में पूछा।
10 तब सरदार काहिन 'अज़रियाह ने जो सदूक़ के ख़ान्दान का
था, उसे जवाब दिया, “जब से लोगों ने ख़ुदावन्द के घर में हदिये
लाना शुरू' किया, तब से हम खाते रहे और हम को काफ़ी मिला
और बहुत बच रहा है; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने अपने लोगों को बरकत
बख़्शी है, और वही बचा हुआ यह बड़ा ढेर है।”
11 तब हिज़क़ियाह ने हुक्म किया कि ख़ुदावन्द के घर में

कोठरियाँ तैयार करें, इसलिए उन्होंने उनको तैयार किया।
12 और वह हदिये और वह दहेकियाँ और पाक की हुई चीज़ें
ईमानदारी से लाते रहे, और उन पर कनानियाह लावी मुख़्तार था
और उसका भाई सिमई नाइब था,
13 और इलीएल और अज़ज़ियाह और नहात और 'असाहील
और यरीमोत और यूज़बद और इलीएल और इस्माकियाह और
महत और बिनायाह हिज़क़ियाह बादशाह और ख़ुदा के घर के
सरदार 'अज़रियाह के हुक्म से कनानियाह और उसके भाई सिमई
के मातहत पेशकार थे।
14 और मशरिक़ी फाटक का दरबान यिमना लावी का बेटा कोरे
ख़ुदा की ख़ुशी की क़ुर्बानियों पर मुक़र्रर था, ताकि ख़ुदावन्द के
हदियों और पाक तरीन चीज़ों को बाँट दिया करे।
15 और उसके मातहत अदन और बिनयमीन और यशू'अ और
समा'याह और अमरियाह और सकनियाह, काहिनों के शहरों में
इस 'उहदे पर मुक़र्रर थे कि अपने भाइयों को, क्या बड़े क्या छोटे
उनके फ़रीक़ों के मुताबिक़ हिस्सा दिया करें,
16 और इनके 'अलावा उनको भी दें जो तीन साल की उम्र से
और उससे ऊपर ऊपर मर्दों के नसबनामे में शुमार किए गए, या'नी
उनको जो अपने अपने फ़रीक़ की बारियों पर अपने अपने ज़िम्मे
की ख़िदमत को हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक़ अन्जाम देने को
ख़ुदावन्द के घर में जाते थे।
17 और उनको भी जो अपने अपने आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
काहिनों के नसबनामे में शुमार किए गए, और उन लावियों को जो
बीस साल के और उससे ऊपर थे, और अपने अपने फ़रीक़ की बारी
पर ख़िदमत करते थे।
18 और उनको जो सारी जमा'अत में से अपने अपने बाल
— बच्चों और बीवियों और बेटों और बेटियों के नसबनामे के
मुताबिक़ शुमार किए गए, क्यूँकि अपने अपने मुक़र्ररा काम पर
वह अपने आप को तक़द्दुस के लिए पाक करते थे।

19 और बनी हारून के काहिनों के लिए भी, जो शहर — ब — शहर अपने शहरों के चारोंतरफ़ के खेतों में थे, कई आदमी जिनके नाम बता दिए गए थे, मुक़र्रर हुए कि काहिनों के सब आदमियों को और उन सभों को जो लावियों के बीच नसबनामे के मुताबिक़ शुमार किए गए थे, हिस्सा दें।

20 इसलिए हिज़क़ियाह ने सारे यहूदाह में ऐसा ही किया, और जो कुछ ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा की नज़र में भला और सच्चा और हक़ था वही किया।

21 और ख़ुदा के घर की ख़िदमत और शरी'अत और अहकाम के ऐतबार से जिस जिस काम को उसने अपने ख़ुदा का तालिब होने के लिए किया, उसे अपने सारे दिल से किया और कामयाब हुआ।

32

□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

1 इन बातों और इस ईमानदारी के बाद शाह — ए — असूर सनहेरिब चढ़ आया और यहूदाह में दाख़िल हुआ, और फ़सीलदार शहरों के मुक़ाबिल ख़ेमाज़न हुआ और उनको अपने क़ब्ज़े में लाना चाहा।

2 जब हिज़क़ियाह ने देखा कि सनहेरिब आया है और उसका 'इरादा है कि येरूशलेम से लड़े

3 तो उसने अपने सरदारों और बहादुरों के साथ सलाह की कि उन चश्मों के पानी को जो शहर से बाहर थे बन्द कर दे, और उन्होंने उसकी मदद की।

4 बहुत लोग जमा' हुए और सब चश्मों को और उस नदी को जो उस सरज़मीन के बीच बहती थी, यह कह कर बन्द कर दिया, “असूर के बादशाह आकर बहुत सा पानी क्यूँ पाएँ?”

5 और उसने हिम्मत बाँधी और सारी दीवार को जो टूटी थी बनाया, और उसे बुर्जों के बराबर ऊँचा किया और बाहर से एक

दूसरी दीवार उठाई, और दाऊद के शहर में मिल्लो को मज़बूत
किया और बहुत से हथियार और ढालें बनाई।
6 और उसने लोगों पर सर लश्कर ठहराए और शहर के फाटक
के पास के मैदान में उनको अपने पास इकट्ठा किया, और उनसे
हिम्मत अफ़ज़ाई की बातें कीं और कहा,
7 "हिम्मत बाँधो और हौसला रखो, और असूर के बादशाह और
उसके साथ के सारे गिरोह की वजह से न डरो न हिरासा न हो;
क्यूँकि वह जो हमारे साथ है, उससे बड़ा है जो उसके साथ है।
8 उसके साथ बशर का हाथ है लेकिन हमारे साथ ख़ुदावन्द
हमारा ख़ुदा है कि हमारी मदद करे और हमारी लड़ाईयाँ लड़े।"
तब लोगों ने शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह की बातों पर
भरोसा किया।
9 उसके बाद शाह — ए — असूर सनहेरिब ने जो अपने
सारे लश्कर' के साथ लकीस के मुक़ाबिल पड़ा था, अपने नौकर
येरूशलेम को शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह के पास और
पूरे यहूदाह के पास जो येरूशलेम में थे, यह कहने को भेजे कि;
10 शाह — ए — असूर सनहेरिब यू फ़रमाता है कि तुम्हारा
किस पर भरोसा है कि तुम येरूशलेम में घेरे को झेल रहे हो?
11 क्या हिज़क़ियाह तुम को कहत और प्यास की मौत के हवाले
करने को तुम को नहीं बहका रहा है कि "ख़ुदा वन्द हमारा ख़ुदा
हम को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लेगा?"
12 क्या इसी हिज़क़ियाह ने उसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों
को दूर करके, यहूदाह और येरूशलेम को हुक्म नहीं दिया कि
तुम एक ही मज़बह के आगे सिज्दा करना और उसी पर ख़ुशबू
जलाना?
13 क्या तुम नहीं जानते कि मैंने और मेरे बाप — दादा ने और
मुल्कों के सब लोगों से क्या क्या किया है? क्या उन मुल्कों की
क़ौमों के मा'बूद अपने मुल्क को किसी तरह से मेरे हाथ से बचा

सके?
14 जिन क़ौमों को मेरे बाप — दादा ने बिल्कुल हलाक कर
डाला, उनके मा'बूदों में कौन ऐसा निकला जो अपने लोगों को
मेरे हाथ से बचा सका कि तुम्हारा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से
बचा सकेगा?
15 फिर हिज़क़ियाह तुम को फ़रेब न देने पाए और न इस तौर
पर बहकाए और न तुम उसका यक़ीन करो; क्यूँकि किसी क़ौम या
मुल्क का मा'बूद अपने लोगों को मेरे हाथ से और मेरे बाप —
दादा के हाथ से बचा नहीं सका, तो कितना कम तुम्हारा मा'बूद
तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा।
16 उसके नौकरों ने ख़ुदावन्द ख़ुदा के ख़िलाफ़ और उसके बन्दे
हिज़क़ियाह के ख़िलाफ़ बहुत सी और बातें कहीं।
17 और उसने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की बे'इज़्ज़ती करने
और उसके हक़ में कुफ़्र बकने के लिए, इस मज़मून के ख़त भी
लिखे: "जैसे और मुल्कों की क़ौमों के मा'बूदों ने अपने लोगों को
मेरे हाथ से नहीं बचाया है, वैसे ही हिज़क़ियाह का मा'बूद भी
अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।"
18 और उन्होंने बड़ी आवाज़ से पुकार कर यहूदियों की ज़बान
में येरूशलेम के लोगों को जो दीवार पर थे यह बातें कह सुनाये
ताकि उनको डराएँ और परेशान करें और शहर को ले लें।
19 उन्होंने येरूशलेम के ख़ुदा का ज़िक्र ज़मीन की क़ौमों के
मा'बूदों की तरह किया, जो आदमी के हाथ की कारीगरी हैं।
20 इसी वजह से हिज़क़ियाह बादशाह और आमूस के बेटे
यसायाह नबी ने दुआ की, और आसमान की तरफ़ चिल्लाए।
21 और ख़ुदावन्द ने एक फ़रिश्ते को भेजा, जिसने शाह —
ए — असूर के लश्कर में सब ज़बरदत सूर्माओं और रहनुमाओं
और सरदारों को हलाक कर डाला। फिर वह शर्मिन्दा होकर अपने
मुल्क को लौटा; और जब वह अपने मा'बूद के इबादत खाना में

गया तो उन ही ने जो उसके सुल्ब से निकले थे, उसे वहीं तलवार
से क़त्ल किया।
22 यूँ ख़ुदावन्द ने हिज़क़ियाह को और येरूशलेम के बाशिन्दों
को शाह — ए — असूर सनहेरिब के हाथ से और सभों के हाथ से
बचाया और हर तरफ़ उनकी रहनुमाई की।
23 और बहुत लोग येरूशलेम में ख़ुदावन्द के लिए हदिये और
शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह के लिए क़ीमती चीजें लाए,
यहाँ तक कि वह उस वक़्त से सब क़ौमों की नज़र में मुम्ताज़ हो
गया।
24 उन दिनों में हिज़क़ियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के क़रीब
हो गया, और उसने ख़ुदावन्द से दुआ की तब उसने उससे बातें कीं
और उसे एक निशान दिया।
25 लेकिन हिज़क़ियाह ने उस एहसान के लायक़ जो उस पर
किया गया 'अमल न किया, क्यूँकि उसके दिल में घमण्ड समा
गया; इसलिए उस पर, और यहूदाह और येरूशलेम पर क़हर
भड़का।
26 तब हिज़क़ियाह और येरूशलेम के बाशिन्दों ने अपने दिल
के ग़ुरूर के बदले ख़ाकसारी इख़्तियार की, इसलिए हिज़क़ियाह
के दिनों में ख़ुदावन्द का क़हर उन पर नाज़िल न हुआ।
27 और हिज़क़ियाह की दौलत और 'इज़्ज़त बहुत फ़रावान थी
और उसने चाँदी और सोने और जवाहर और मसाले और ढालों
और सब तरह की क़ीमती चीज़ों के लिए ख़ज़ाने
28 और अनाज और शराब और तेल के लिए अम्बारख़ाने, और
सब क़िस्म के जानवरों के लिए थान, और भेड़ — बकरियों के लिए
बाड़े बनाए।
29 इसके 'अलावा उसने अपने लिए शहर बसाए और भेड़
बकरियों और गाय — बैलों को कसरत से मुहय्या किया, क्यूँकि
ख़ुदा ने उसे बहुत माल बख़्शा था।
30 इसी हिज़क़ियाह ने जैहून के पानी के ऊपर के सोते को बंद

कर दिया, और उसे दाऊद के शहर के मग़रिब की तरफ़ सीधा
पहुँचाया, और हिज़क़ियाह अपने सारे काम में क़ामयाब हुआ।
31 तो भी बाबुल के हाकिमों के मु'आमिले में, जिन्होंने अपने
क़ासिद उसके पास भेजे ताकि उस मोजिज़ा का हाल जो उस मुल्क
में किया गया था दरियाफ़्त करें; ख़ुदा ने उसे आज़माने के लिए
छोड़ दिया, ताकि मा'लूम करे के उसके दिल में क्या है।
32 और हिज़क़ियाह के बाक़ी काम और उसके नेक आ'माल
आमूस के बेटे यसायाह नबी की ख़्वाब में और यहूदाह और
इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा है।
33 और हिज़क़ियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया,
और उन्होंने उसे बनी दाऊद की क़ब्रों की चढ़ाई पर दफ़्न किया,
और सारे यहूदाह और येरूशलेम के सब बाशिन्दों ने उसकी मौत
पर उसकी ताज़ीम की; और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह
बादशाह हुआ।

33

[illegible]

1 मनस्सी बारह साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और
उसने येरूशलेम में पचपन साल हुकूमत की।
2 उसने उन क़ौमों के नफ़रतअंगेज़ कामों के मुताबिक़ जिनको
ख़ुदावन्द ने बनी — इस्राईल के आगे से हटा दिया था, वही किया
जो ख़ुदावन्द की नज़र में बुरा था।
3 क्यूँकि उसने उन ऊँचे मक़ामों को, जिनको उसके बाप
हिज़क़ियाह ने ढाया था, फिर बनाया और बा'लीम के लिए
मज़बहे बनाए और यसीरतें तैयार कीं और सारे आसमानी लश्कर
को सिज्दा किया और उनकी इबादत की।
4 और उसने ख़ुदा वन्द के घर में जिसके बारे में ख़ुदावन्द ने
फ़रमाया था कि मेरा नाम येरूशलेम में हमेशा रहेगा, मज़बहे
बनाए;

5 और उसने ख़ुदावन्द के घर के दोनों सहनों में, सारे आसमानी
लश्कर के लिए मज़बहे बनाए।
6 और उसने बिन हिन्नोम की वादी में अपने फ़र्ज़न्दों को भी आग
में चलवाया, और वह शगून मानता और जादू और अफ़सून करता
और बदरूहों के आशनाओं और जादूगरों से ता'अल्लुक रखता
था। उसने ख़ुदावन्द की नज़र में बहुत बदकारी की, जिससे उसे
ग़ुस्सा दिलाया;
7 और जो तराशी हुई मूरत उसने बनवाई थी उसको ख़ुदा के
घर में नस्ब किया, जिसके बारे में ख़ुदा ने दाऊद और उसके बेटे
सुलेमान से कहा था कि मैं इस घर में और येरूशलेम में जिसे मैंने
बनी — इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, अपना नाम
हमेशा तक रखूँगा;
8 और मैं बनी — इस्राईल के पाँव को उस सरज़मीन से जो मैंने
उनके बाप — दादा को 'इनायत की है, फिर कभी नहीं हटाऊँगा
बशर्ते कि वह उन सब बातों को जो मैंने उनकी फ़रमाई, या'नी
उस सारी शरी'अत और क़ानून और हुक्मों को जो मूसा के ज़रिए
मिले, मानने की एहतियात रखें।
9 और मनस्सी ने यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों को यहाँ
तक गुमराह किया कि उन्होंने उन क़ौमों से भी ज़्यादा बुरायी की,
जिनको ख़ुदावन्द ने बनी — इस्राईल के सामने से हलाक किया
था।
10 और ख़ुदा वन्द ने मनस्सी और उसके लोगों से बातें की
लेकिन उन्होंने कुछ ध्यान न दिया।
11 इसलिए ख़ुदावन्द उन पर शाह — ए — असूर के सिपह
सालारों को चढ़ा लाया, जो मनस्सी को ज़ँजीरों से जकड़ कर
और बेड़ियाँ डाल कर बाबुल को ले गए।
12 जब वह मुसीबत में पड़ा तो उसने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
से मिन्नत की और अपने बाप — दादा के ख़ुदा के सामने बहुत
ख़ाकसार बना,

13 और उसने उससे दुआ की; तब उसने उसकी दुआ उसे क़बूल
करके उसकी फ़रयाद सुनी ममलुकत में येरूशलेम को वापस
लाया। तब मनस्सी ने जान लिया कि ख़ुदा वन्द ही ख़ुदा है।
14 इसके बाद उसने दाऊद के शहर के लिए जैहून के मग़ारिब
की तरफ़ वादी में मछली फाटक के मदखल तक एक बाहर की
दीवार उठाई, और 'ओफ़ल को घेरा और उसे बहुत ऊँचा किया;
और यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में बहादुर जंगी सरदार रखे।
15 और उसने अजनबी मा'बूदों को, और ख़ुदावन्द के घर से
उस मूरत को, और सब मज़बहों को जो उसने ख़ुदावन्द के घर के
पहाड़ पर और येरूशलेम में बनवाए थे दूर किया और उनको शहर
के बाहर फेंक दिया।
16 और उसने ख़ुदावन्द के मज़बह की मरम्मत की और उस पर
सलामती के ज़बीहों की और शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ अदा कीं
और यहूदाह को इस्राईल के ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की इबादत का
हुक्म दिया।
17 तो भी लोग ऊँचे मक़ामों में क़ुर्बानी करते रहे, लेकिन सिर्फ़
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए।
18 और मनस्सी के बाक़ी काम और अपने ख़ुदा से उसकी दु'आ,
और उन ग़ैबबीनों की बातें जिन्होंने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के
नाम से उसके साथ कलाम किया, वह सब इस्राईल के बादशाहों
के आ'माल के साथ लिखा हैं।
19 उसकी दुआ और उसका क़बूल होना, और उसकी ख़ाकसारी
से पहले की सब ख़ताएँ और उसकी बेईमानी और वह जगह जहाँ
उसने ऊंचे मक़ाम बनवाये और यसीरतें और तराशी हुई मूरतें
खड़ी कीं, यह सब बातें हूज़ी की तारीख़ में क़लमबन्द हैं।
20 और मनस्सी अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उन्होंने उसे उसी के घर में दफ़्न किया; और उसका बेटा अमून
उसकी जगह बादशाह हुआ।

21 अमून बाइस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और
उसने दो साल येरूशलेम में हुकूमत की।
22 और जो ख़ुदावन्द की नज़र में बुरा है वही उसने किया, जैसा
उसके बाप मनस्सी ने किया था। और अमून ने उन सब तराशी हुई
मूरतों के आगे जो उसके बाप मनस्सी ने बनवाई थीं, क़ुर्बानियाँ
कीं और उनकी इबादत की।
23 और वह ख़ुदा वन्द के सामने ख़ाकसार न बना, जैसा उसका
बाप मनस्सी ख़ाकसार बना था; बल्कि अमून ने गुनाह पर गुनाह
किया।
24 तब उसके ख़ादिमों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की और उसी
के घर में उसे मार डाला।
25 लेकिन अहल — ए — मुल्क ने उन सबको क़त्ल किया
जिन्होंने अमून बादशाह के ख़िलाफ़ साज़िश की थी, और अहल
— ए — मुल्क ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह
बनाया।

34

[illegible]

1 यूसियाह आठ साल का था, जब वह हुकूमत करने लगा, और
उसने इकतीस साल येरूशलेम में हुकूमत की।
2 उसने वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में ठीक था, और
अपने बाप दाऊद के रास्तों पर चला और दहने या बाएँ हाथ को
न मुड़ा।
3 क्यूँकि अपनी हुकूमत के आठवें साल जब वह लड़का ही था,
वह अपने बाप दाऊद के ख़ुदा का तालिब हुआ, और बारहवें साल
में यहूदाह और येरूशलेम को ऊँचे मक़ामों और यसीरतों और
तराशे हुए बुतों और ढाली हुई मूरतों से पाक करने लगा।
4 और लोगों ने उसके सामने बा'लीम के मज़बहों को ढा दिया,
और सूरज की मूरतों को जो उनके ऊपर ऊँचे पर थीं उसने काट

डाला, और यासीरतों और तराशी हुई और ढाली हुई मूरतों को
उसने टुकड़े टुकड़े करके उनको धूल बना दिया, और उसको उनकी
क़ब्रों पर बिथराया जिन्होंने उनके लिए क़ुर्बानियाँ अदा की थीं।
5 उसने उन काहिनों की हड्डियाँ उन्हीं के मज़बहों पर जलाई,
और यहूदाह और येरूशलेम को पाक किया।
6 और मनस्सी और इफ़्राईम और शमौन के शहरों में, बल्कि
नफ़्ताली तक उनके आस — पास खण्डरों में उसने ऐसा ही किया,
7 और मज़बहों को ढा दिया, और यसीरतों और तराशी हुई
मूरतों को तोड़ कर धूल कर दिया, और इस्राईल के पूरे मुल्क में
सूरज की सब मूरतों को काट डाला, तब येरूशलेम को लोटा।
8 अपनी हुकूमत के अठारहवें बरस, जब वह मुल्क और हैकल
को पाक कर चुका, तो उसने असलियाह के बेटे साफ़न को और
शहर के हाकिम मासियाह और यूआख़ज़ के बेटे यूआख मुवरिख
को भेजा कि ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के घर की मरम्मत करें।
9 वह ख़िलक़ियाह सरदार काहिन के पास आए, और वह नक़दी
जो ख़ुदा के घर में लाई गई थी जिसे दरबान लावियों ने मनस्सी
और इफ़्राईम और इस्राईल के सब बाक़ी लोगों से और पूरे यहूदाह
और बिनयमीन और येरूशलेम के बाशिंदों से लेकर जमा' किया
था, उसके सुपुर्द की।
10 और उन्होंने उसे उन कारिंदों के हाथ में सौंपा जो ख़ुदावन्द
के घर की निगरानी करते थे, और उन कारिंदों ने जो ख़ुदावन्द के
घर में काम करते थे उसे उस घर की मरम्मत और दुरुस्त करने में
लगाया;
11 या'नी उसे बढ़इयों और राजगीर को दिया की गढ़े हुए पत्थर
और जोड़ों के लिए लकड़ी ख़रीदें, और उन घरों के लिए जिनको
यहूदाह के बादशाहों ने उजाड़ दिया था शहतीर बनाई।
12 वह आदमी दियानत से काम करते थे, और यहत और
'अबदियाह लावी जो बनी मिरारी में से थे उनकी निगरानी करते

थे, और बनी क़िहात में से ज़करियाह और मुसल्लाम काम कराते
थे, और लावियों में से वह लोग थे जो बाजों में माहिर थे।
13 और वह बारबरदारों के भी दारोग़ा थे और सब क़िस्म क़िस्म
के काम करने वालों से काम कराते थे, और मुन्शी और मुहतमिम
और दरबान लावियों में से थे।
14 जब वह उस नक़दी को जो ख़ुदावन्द के घर में लाई गई थी
निकाल रहे थे, तो ख़िलक़ियाह काहिन को ख़ुदावन्द की तौरेत
की किताब, जो मूसा की ज़रिए' दी गई थी मिली।
15 तब ख़िलक़ियाह ने साफ़न मुन्शी से कहा, "मैंने ख़ुदा वन्द के
घर में तौरेत की किताब पाई है।" और ख़िलक़ियाह ने वह किताब
साफ़न को दी।
16 और साफ़न वह किताब बादशाह के पास ले गया; फिर उसने
बादशाह को यह बताया कि सब कुछ जो तू ने अपने नौकरों के
सुपुर्द किया था, उसे वह कर रहे हैं।
17 और वह नक़दी जो ख़ुदावन्द के घर में मौजूद थी, उन्होंने
लेकर नाज़िरों और कारिंदों के हाथ में सौंपी है।
18 फिर साफ़न मुन्शी ने बादशाह से कहा कि ख़िलक़ियय्याह
काहिन ने मुझे यह किताब दी है। और साफ़न ने उसमें से बादशाह
के सामने पढ़ा।
19 और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने तौरेत की बातें सुनीं तो
अपने कपड़े फाड़े।
20 फिर बादशाह ने ख़िलक़ियाह और अख़ीक़ाम बिन साफ़न
और अबदून बिन मीकाह और साफ़न मुन्शी और बादशाह के
नौकर असायाह को यह हुक्म दिया,
21 कि जाओ, और मेरी तरफ़ से और उन लोगों की तरफ़ से जो
इस्राईल और यहूदाह में बाक़ी रह गए हैं, इस किताब की बातों के
हक़ में जो मिली है ख़ुदावन्द से पूछो; क्यूँकि ख़ुदावन्द का क़हर
जो हम पर नाज़िल हुआ है बड़ा है, इसलिए कि हमारे बाप —
दादा ने ख़ुदावन्द के कलाम को नहीं माना है कि सब कुछ जो इस

किताब में लिखा है उसके मुताबिक़ करते।

22 तब ख़िलक़ियाह और वह जिनकी बादशाह ने हुक्म किया
था, खुल्दा नबिया के पास जो तोशाख़ाने के दारोग़ा सलूम बिन
तोकहत बिन ख़सरा की बीवी थी गए। वह येरूशलेम में मिशना
नामी महल्ले में रहती थी, इसलिए उन्होंने उससे वह बातें कहीं।
23 उसने उनसे कहा, ख़ुदा वन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता
है कि तुम उस शख़्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहो कि;
24 'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है देख, मैं इस जगह पर और इसके
बाशिंदों पर आफ़त लाऊँगा, या'नी सब ला'नतें जो इस किताब
में लिखी हैं जो उन्होंने शाह — ए — यहूदाह के आगे पढ़ी है।
25 क्यूँकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर — मा'बूदों के
आगे ख़ुशबू जलाई और अपने हाथों के सब कामों से मुझे ग़ुस्सा
दिलाया, तब मेरा क़हर इस मक़ाम पर नाज़िल हुआ है और धीमा
न होगा।
26 रहा शाह — ए — यहूदाह जिसने तुम को ख़ुदावन्द से
दरियाफ़्त करने को भेजा है, तब तुम उससे ऐसा कहना कि
ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा ऐसा फ़रमाता है कि उन बातों के बारे
में जो तूने सुनी हैं,
27 "चूँकि तेरा दिल मोम हो गया, और तू ने ख़ुदा के सामने
आजिज़ी की जब तू ने उसकी वह बातें सुनीं जो उसने इस मक़ाम
और इसके बाशिंदों के ख़िलाफ़ कही हैं, और अपने को मेरे सामने
ख़ाकसार बनाया और अपने कपड़े फाड़ कर मेरे आगे रोया,
इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली है। ख़ुदावन्द फ़रमाता है,
28 देख, मैं तुझे तेरे बाप — दादा के साथ मिलाऊँगा और तू
अपनी क़ब्र में सलामती से पहुँचाया जाएगा, और सारी आफ़त
को जो मैं इस मक़ाम और इसके बाशिंदों पर लाऊँगा तेरी आँखें
नहीं देखेंगी।" इसलिए उन्होंने यह जवाब बादशाह को पहुँचा
दिया।

29 तब बादशाह ने यहूदाह और येरूशलेम के सब बुज़ुर्गों को बुलवा कर इकट्ठा किया।

30 और बादशाह और सब अहल — ए — यहूदाह और येरूशलेम के बाशिंदे, काहिन और लावी और सब लोग क्या छोटे क्या बड़े, ख़ुदावन्द के घर को गए, और उसने जो 'अहद की किताब ख़ुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सुनाई।

31 और बादशाह अपनी जगह खड़ा हुआ, और ख़ुदावन्द के आगे 'अहद किया के वह ख़ुदावन्द की पैरवी करेगा और उसके हुक्मों और उसकी शहादतों और क़ानून को अपने सारे दिल और सारी जान से मानेगा, ताकि उस 'अहद की उन बातों को जो उस किताब में लिखी थीं पूरा करे।

32 और उसने उन सबको जो येरूशलेम और बिनयमीन में मौजूद थे, उस 'अहद में शरीक किया; और येरूशलेम के बाशिंदों ने ख़ुदा अपने बाप — दादा के ख़ुदा के 'अहद के मुताबिक़ 'अमल किया।

33 और यूसियाह ने बनी — इस्राईल के सब 'इलाक़ों में से सब मकरूहात को दफ़ा' किया और जितने इस्राईल में मिले उन सभों से 'इबादत, या'नी ख़ुदा वन्द उनके ख़ुदा की 'इबादत, कराई और वह उसके जीते जी ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा की पैरवी से न हटे।

35

[illegible]

1 और यूसियाह ने येरूशलेम में ख़ुदावन्द के लिए ईद — ए — फ़सह की, और उन्होंने फ़सह को पहले महीने की चौदहवीं तारीख़ को ज़बह किया।

2 उसने काहिनों को उनकी ख़िदमत पर मुक़र्रर किया, और उनको ख़ुदावन्द के घर की ख़िदमत की तरग़ीब दी;

3 और उन लावियों से जो ख़ुदावन्द के लिए पाक होकर तमाम
इस्राईल को ता'लीम देते थे कहा कि पाक सन्दूक़ को उस घर
में, जिसे शाह — ए — इस्राईल सुलेमान बिन दाऊद ने बनाया
था रखो; आगे को तुम्हारे कंधों पर कोई बोझ न होगा। इसलिए
अब तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की और उसकी क़ौम इस्राईल की
ख़िदमत करो।
4 और अपने आबाई ख़ान्दानों और फ़रीक़ों के मुताबिक़ जैसा
शाह — ए — इस्राईल दाऊद ने लिखा और जैसा उसके बेटे
सुलेमान ने लिखा है, अपने आपको तैयार कर लो।
5 और तुम मक़दिस में अपने भाइयों या'नी क़ौम के फ़र्ज़न्दों के
आबाई ख़ान्दानों की तक़सीम के मुताबिक़ खड़े हो, ताकि उनमें से
हर एक के लिए लावियों के किसी न किसी आबाई ख़ान्दान की
कोई शाख़ हो।
6 और फ़सह को ज़बह करो, और ख़ुदावन्द के कलाम के
मुताबिक़ जो मूसा के ज़रिए' मिला, 'अमल करने के लिए अपने
आपको पाक करके अपने भाइयों के लिए तैयार हो।
7 और यूसियाह ने लोगों के लिए जितने वहाँ मौजूद थे, रेवड़ों
में से बर्रे और हलवान सब के सब फ़सह की क़ुर्बानियों के लिए
दिए, जो गिनती में तीस हज़ार थे और तीन हज़ार बछड़े थे; यह
सब बादशाही माल में से दिए गए।
8 और उसके सरदारों ने ख़ुशी की क़ुर्बानी के तौर पर लोगों
को और काहिनों को और लावियों को दिया। ख़िलक़ियाह और
ज़करियाह और यहीएल ने जो ख़ुदा के घर के नाज़िम थे, काहिनों
को फ़सह की क़ुर्बानी के लिए दो हज़ार छ: सौ बकरी और तीन
सौ बैल दिए।
9 और कनानियाह ने भी और उसके भाइयों समा'याह और
नतनीएल ने, और हसबियाह और यईएल और यूज़बद ने जो
लावियों के सरदार थे, लावियों को फ़सह की क़ुर्बानी के लिए

पाँच हज़ार भेड़ बकरी और पाँच सौ बैल दिए।

10 ऐसी इबादत की तैयारी हुई, और बादशाह के हुक्म के
मुताबिक़ काहिन अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने अपने
फ़रीक़ के मुताबिक़ खड़े हुए।

11 उन्होंने फ़सह को ज़बह किया, और काहिनों ने उनके हाथ
से ख़ून लेकर छिड़का और लावी खाल खींचते गए।

12 फिर उन्होंने सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ अलग कीं ताकि वह लोगों
के आबाई ख़ान्दानों की तक़सीम के मुताबिक़ ख़ुदावन्द के सामने
पेश करने को उनको दें, जैसा मूसा की किताब में लिखा है; और
बैलों से भी उन्होंने ऐसा ही किया।

13 और उन्होंने दस्तूर के मुताबिक़ फ़सह को आग पर भूना
और पाक हड्डियों को देगों और हण्डों और कढ़ाइयों में पकाया
और उनको जल्द लोगों को पहुँचा दिया।

14 इसके बाद उन्होंने अपने लिए और काहिनों के लिए तैयार
किया, क्यूँकि काहिन या'नी बनी हारून सोख़्तनी क़ुर्बानियों और
चर्बी के चढ़ाने में रात तक मशग़ूल रहे। इसलिए लावियों ने अपने
लिए और काहिनों के लिए जो बनी हारून थे तैयार किया।

15 और गानेवाले जो बनी आसफ़ थे, दाऊद और आसफ़ और
हैमान और बादशाह के ग़ैबबीन यदूतोन के हुक्म के मुताबिक़
अपनी अपनी जगह में थे, और हर दरवाज़े पर दरबान थे। उनको
अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा, क्यूँकि उनके भाई लावियों
ने उनके लिए तैयार किया।

16 इसलिए उसी दिन यूसियाह बादशाह के हुक्म के मुताबिक़
फ़सह मानने और ख़ुदावन्द के मज़बह पर सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश
करने के लिए ख़ुदावन्द की पूरी इबादत की तैयारी की गई।

17 और बनी — इस्राईल ने जो हाज़िर थे, फ़सह को उस वक़्त
और फ़तीरी रोटी की 'ईद की सात दिन तक मनाया।

18 इसकी तरह कोई फ़सह समुएल नबी के दिनों से इस्राईल में

नहीं मनाया गया था, और न शाहान — ए — इस्राईल में से किसी
ने ऐसी ईद फ़सह की जैसी यूसियाह और काहिनों और लावियों
और सारे यहूदाह और इस्राईल ने जो हाज़िर थे, और येरूशलेम
के बाशिंदों ने की।
19 ये फ़सह यूसियाह की हुकूमत के अठारहवें साल में मनाया
गया।
20 इस सबके बाद जब यूसियाह हैकल को तैयार कर चुका, तो
शाह — ए — मिस्र निकोह ने करकमीस से जो फ़रात के किनारे
है, लड़ने के लिए चढ़ाई की और यूसियाह उसके मुक़ाबिला को
निकला।
21 लेकिन उसने उसके पास क़ासिदों से कहला भेजा कि ऐ
यहूदाह के बादशाह, तुझ से मेरा क्या काम? मैं आज के दिन
तुझ पर नहीं बल्कि उस ख़ान्दान पर चढ़ाई कर रहा हूँ जिससे
मेरी जंग है, और ख़ुदा ने मुझ को जल्दी करने का हुक्म दिया है;
इसलिए तू ख़ुदा से जो मेरे साथ है मुज़ाहिम न हो, ऐसा न हो
कि वह तुझे हलाक कर दे।
22 लेकिन यूसियाह ने उससे मुँह न मोड़ा, बल्कि उससे लड़ने
के लिए अपना भेस बदला, और निकोह की बात जो ख़ुदा के मुँह
से निकली थी न मानी और मजिद्दो की वादी में लड़ने को गया।
23 और तीरअंदाज़ों ने यूसियाह बादशाह को तीर मारा, और
बादशाह ने अपने नौकरों से कहा, “मुझे ले चलो, क्यूँकि मैं बहुत
ज़ख़्मी हो गया हूँ।”
24 इसलिए उसके नौकरों ने उसे उस रथ पर से उतार कर उसके
दूसरे रथ पर चढ़ाया, और उसे येरूशलेम को ले गए; और वह मर
गया और अपने बाप — दादा की क़ब्रों में दफ़्न हुआ, और सारे
यहूदाह और येरूशलेम ने यूसियाह के लिए मातम किया।
25 और यरमियाह ने यूसियाह पर नौहा किया, और गानेवाले
और गानेवालियाँ सब अपने मर्सियों में आज के दिन तक यूसियाह

का ज़िक्र करते हैं। यह उन्होंने इस्राईल में एक दस्तूर बना दिया,
और देखो वह बातें नौहों में लिखी हैं।
26 यूसियाह के बाक़ी काम, और जैसा ख़ुदावन्द की शरी'अत
में लिखा है उसके मुताबिक़ उसके नेक आ'माल,
27 और उसके काम, शुरू' से आख़िर तक इस्राईल और यहूदाह
के बादशाहों की किताब में लिखा हैं।

36

[illegible]

1 और मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज़ को उसके
बाप की जगह येरूशलेम में बादशाह बनाया।
2 यहूआख़ज़ तेईस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा;
उसने तीन महीने येरूशलेम में हुकूमत की।
3 और शाह — ए — मिस्र ने उसे येरूशलेम में तख़्त से उतार
दिया, और मुल्क पर सौ क़िन्तार' चाँदी और एक क़िन्तार सोना
जुर्माना किया।

[illegible]

4 और शाह — ए — मिस्र ने उसके भाई इलियाक़ीम को
यहूदाह और येरूशलेम का बादशाह बनाया, और उसका नाम
बदलकर यहूयक़ीम रखा; और निकोह उसके भाई यहूआखज़ को
पकड़कर मिस्र को ले गया।
5 यहूयक़ीम पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा,
और उसने ग्यारह साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसने वही किया
जो ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा की नज़र में बुरा था।
6 उस पर शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने चढ़ाई की और
उसे बाबुल ले जाने के लिए उसके बेड़ियाँ डालीं
7 और नबूकदनज़र ख़ुदावन्द के घर के कुछ बर्तन भी बाबुल
को ले गया और उनको बाबुल में अपने मन्दिर में रख्खा,

8 यहूयक़ीम के बाक़ी काम और उसके नफ़रतअंगेज़ 'आमाल,
और जो कुछ उसमें पाया गया, वह इस्राईल और यहूदाह के
बादशाहों की किताब में लिखा हैं; और उसका बेटा यहूयाकीन
उसकी जगह बादशाह हुआ।

[illegible]

9 यहूयाकीन आठ साल का था जब वह हुकूमत करने लगा,
और उसने तीन महीने दस दिन येरूशलेम में हुकूमत की। उसने
वही किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में बुरा था।
10 और नए साल के शुरू' होते ही नबूकदनज़र बादशाह ने
उसे ख़ुदावन्द के घर के नफ़ीस बर्तनों के साथ बाबुल को बुलवा
लिया, और उसके भाई सिदक़ियाह को यहूदाह और येरूशलेम
का बादशाह बनाया।
11 सिदक़ियाह इक्कीस साल का था जब वह हुकूमत करने
लगा, और उसने ग्यारह साल येरूशलेम में हुकूमत की।
12 उसने वही किया जो ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा की नज़र में बुरा
था। और उसने यरमियाह नबी के सामने जिसने ख़ुदावन्द के मुँह
की बातें उससे कहीं, 'आजिज़ी न की।
13 उसने नबूकदनज़र बादशाह से भी जिसने उसे ख़ुदा की क़सम
खिलाई थी, बग़ावत की बल्कि वह गर्दनकश हो गया, और उसने
अपना दिल ऐसा सख़्त कर लिया कि ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा
की तरफ़ न मुड़ा।
14 इसके 'अलावा काहिनों के सब सरदारों और लोगों ने और
क़ौमों के सब नफ़रती कामों के मुताबिक़ बड़ी बदकारियाँ कीं, और
उन्होंने ख़ुदावन्द के घर को जिसे उसने येरूशलेम में पाक ठहराया
था नापाक किया।
15 ख़ुदावन्द उनके बाप — दादा के ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों को
उनके पास बर वक़्त भेज भेज कर पैग़ाम भेजा क्यूँकि उसे अपने
लोगों और अपने घर पर तरस आता था;

16 लेकिन उन्होंने ख़ुदा के पैग़म्बरों को ठट्ठों में उड़ाया, और
उसकी बातों को नाचीज़ जाना और उसके नबियों की हँसी उड़ाई
यहाँ तक कि ख़ुदावन्द का ग़ज़ब अपने लोगों पर ऐसा भड़का कि
कोई चारा न रहा।
17 चुनाँचे वह कसदियों के बादशाह को उन पर चढ़ा लाया,
जिसने उनके मक़दिस के घर में उनके जवानों को तलवार से क़त्ल
किया; और उसने क्या जवान मर्द क्या कुंवारी, क्या बुड्ढा या उम्र
दराज़, किसी पर तरस न खाया। उसने सबको उसके हाथ में दे
दिया।
18 और ख़ुदा के घर के सब बर्तन, क्या बड़े क्या छोटे, और
ख़ुदावन्द के घर के ख़ज़ाने और बादशाह और उसके सरदारों के
ख़ज़ाने; यह सब वह बाबुल को ले गया।
19 और उन्होंने ख़ुदा के घर को जला दिया, और येरूशलेम की
फ़सील ढा दी, और उसके सारे महल आग से जला दिए और उसके
सब क़ीमती बर्तन को बर्बाद किया।
20 जो तलवार से बचे वह उनको बाबुल ले गया, और वहाँ वह
उसके और उसके बेटों के ग़ुलाम रहे, जब तक फ़ारस की हुकूमत
शुरू' न हुई
21 ताकि ख़ुदावन्द का वह कलाम जो यरमियाह की ज़बानी
आया था पूरा हो कि मुल्क अपने सब्तों का आराम पा ले; क्यूँकि
जब तक वह सुनसान पड़ा रहा तब तक, या'नी सत्तर साल तक
उसे सब्त का आराम मिला।
22 और शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल,
इसलिए के ख़ुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया
था पूरा हो, ख़ुदावन्द ने शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस का दिल
उभारा; तो उसने अपनी सारी ममलुकत में 'ऐलान करवाया और
इस मज़मून का फ़रमान भी लिखा कि:
23 शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस ऐसा फ़रमाता है, 'ख़ुदावन्द
आसमान के ख़ुदा ने ज़मीन की सब हुकूमतें मुझे बख़्शी हैं, और

उसने मुझ को ताकीद की है कि मैं येरूशलेम में, जो यहूदाह में है
उसके लिए एक घर बनाऊँ; इसलिए तुम्हारे बीच जो कोई उसकी
सारी क़ौम में से हो, ख़ुदावन्द उसका ख़ुदा उसके साथ हो और वह
रवाना हो जाए।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc